* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

18 जनवरी, 2023
माघ, कृष्ण पक्ष, द्वादशी
संवत 2079
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
बुधवार, वर्ष 08, अंक 91

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

राहुल गांधी बोले : वरुण को गले लगा सकता हूं, पर उनकी विचारधारा के खिलाफ

बढ़ा कार्यकाल : नड्डा जून 2024 तक भाजपा अध्यक्ष रहेंगे

चुनाव में मात्र 400 दिन बाकी, हर वोटर के दरवाजे तक पहुंचें : मोदी

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। दिल्ली में दो दिनों से चल रही भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन के साथ खत्म हो गयी। पीएम ने अपने संबोधन में कहा कि अगले लोकसभा चुनाव में सिर्फ 400 दिन बचे हैं। ऐसे में पार्टी पदाधिकारियों और हर एक कार्यकर्ता को एक-एक वोटर से मिलने उसके दरवाजे तक जाना है। बैठक के दूसरे दिन पार्टी ने एक बड़ा फैसला लेते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के एक्सटेंशन पर मुहर लगा दी। नड्डा का कार्यकाल जून 2024 तक बढ़ा दिया गया है। नड्डा का मौजूदा कार्यकाल 20 जनवरी को खत्म हो रहा था। अब वे लोकसभा चुनाव तक पार्टी की कमान संभालेंगे। जेपी नड्डा को एक्सटेंशन देने का एलान गृह मंत्री अमित शाह ने किया।

सीमा पर बसे गांवों में पार्टी के संगठन को मजबूत बनायें : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि बॉर्डर के गांवों में पार्टी का संगठन मजबूत होना चाहिए। पार्टी की गतिविधियां होनी चाहिए। मोदी ने कार्यकर्ताओं को टास्क दिया कि चुनाव में 400 दिन बचे हैं। हमें पूरी तैयारी से जुटना है। भाजपा एक राजनीतिक आंदोलन बन चुकी है। हमें लोगों से हर दिन मिलना है। जैसे एक दिन यूनिवर्सिटी, एक दिन चर्च, एक दिन अन्य जगह जाकर लोगों से मिलें। अगर अब कुछ नहीं किया तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। नये कार्यकर्ताओं को लेकर बूथ मजबूत करें।

सामाजिक-आर्थिक प्रस्ताव में मोदी की तारीफ

भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के दूसरे दिन सामाजिक-आर्थिक प्रस्ताव पेश किया गया। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने बताया कि इस प्रस्ताव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ की गयी। प्रस्ताव में कहा गया कि उनकी नीतियों की वजह से भारत दुनिया की पांच बड़ी इकोनॉमी में शामिल हो गया है। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने बताया कि पीएम ने कहा कि भारत का सर्वोत्तम काल आ रहा है। इसमें हमें मेहनत में पीछे नहीं रहना है। परिश्रम की पराकाष्ठा कर देनी है। कार्यकर्ताओं को अमृत काल को कर्तव्य काल में बदलना है।

खतियानी जोहार यात्रा के दूसरे चरण में कोडरमा पहुंचे सीएम

अभ्रक व्यवसाय को पुनर्जीवित किया जायेगा : हेमंत सोरेन

- मुख्यमंत्री ने ढिबरा डंप में कार्य प्रारंभ करने हेतु वाहन को दिखायी हरी झंडी

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि कोडरमा जिला में अभ्रक व्यवसाय को पुनर्जीवित किया जायेगा। इसके लिए कार्य योजना बनायी जा रही है। इससे यहां अभ्रक व्यवसाय से जुड़े श्रमिकों को रोजगार मिलने के साथ जीवन स्तर भी बेहतर होगा।

मुख्यमंत्री का जेएसएमडीसी द्वारा ढिबरा डंप को पुनर्जीवित कर मजदूरों को पुनः रोजगार से जोड़ने हेतु स्थानीय महिला मजदूरों ने अभिवादन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर से जोड़ने का काम कर रही है। उन्होंने महिला मजदूरों से बातचीत की। उन्होंने ढिबरा डंप में कार्य प्रारंभ करने हेतु वाहन को भी हरी झंडी दिखा कर रवाना किया।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि देश में सबसे उम्दा अभ्रक का उत्पादन झारखंड में होता है। मगर वर्षों से इस पर ध्यान नहीं दिया गया। आपकी सरकार बहुत जल्द इस संदर्भ में कानून लाने जा रही है। इससे एक ओर जहां वर्षों से गैर-कानूनी तरीके से चले आ रहे अभ्रक उद्योग पर विराम लगेगा, वहीं लाखों श्रमिकों का शोषण बंद होगा तथा व्यवस्थित रोजगार का सृजन होगा।

सरकार पुनर्जीवन देने का कर रही प्रयास : कोडरमा में वर्ष 1980 के पूर्व में अभ्रक खनिज के लगभग 400 खनन पट्टे धारित थे। वर्ष 1980 में वन (संरक्षण) अधिनियम लागू होने एवं वन्य प्राणी आश्रयणी के प्रभाव से कोडरमा में धारित अभ्रक खनिज के लगभग सभी खनन पट्टे बंद होते चले गये। वर्तमान में कोडरमा जिला में अभ्रक खनिज का एक भी खनन पट्टा संचालित नहीं है। वर्तमान में सरकार द्वारा अभ्रक खनिज को पुनर्जीवित करने हेतु बहुत से प्रयास किये जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि इस क्रम में झारखंड गजट संख्या 86 दिनांक 03.03.2022 द्वारा झारखंड लघु खनिज समनुदान (संशोधन) नियमावली 2021 के नियम 9 (1) (क) के परंतुक के तहत झारखंड राज्य अंतर्गत ढिबरा डंप में पाये जाने वाले अभ्रक खनिज, जिनका व्यावसायिक मूल्य हो के भंडार/डंप का निष्पादन झारखंड राज्य खनिज विकास निगम लिमिटेड के माध्यम से किया जायेगा। इसके आलोक में भूतत्व निदेशालय द्वारा कोडरमा जिलांतर्गत मौजा- चरकी, अंचल कोडरमा में भंडारित ढोबरा चिह्नित किया गया है।

सहकारी समितियों द्वारा चुना ढिबरा का होगा उठाव

मुख्यमंत्री द्वारा हरी झंडी दिखाये गये वाहन से ढीबरा डंप से संबंधित सहकारी समितियों के सदस्यों द्वारा ढीबरा चुनकर जिला खनन कार्यालय, कोडरमा एवं जिला प्रशासन, कोडरमा द्वारा चिह्नित वाहन में ही लोड किया जायेगा। मंगलवार को उक्त वाहन को अपने गंतव्य स्थान जेएसएमडीसी द्वारा धारित खनिज भंडारण अनुज्ञप्ति स्थल मौजा- थाम, अंचल- चंदवारा भेजने के लिए कोडरमा जिला के पहाड़पुर मोड़ से मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा रवाना किया गया।

भाजपा के लिए महंगाई भौजाई हो गयी है, सीएम ने कसा तंज

यह झारखंडी और मूलवासियों के अधिकार की यात्रा है : हेमंत

संजीव

कोडरमा। मंगलवार को जिला मुख्यालय स्थित बाघीटांड़ स्टेडियम में खतियानी जोहार यात्रा के दूसरे चरण को शुरू करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि सरकार ने स्थानीय युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए 1932 को खतियानी आधार माना है, ताकि स्थानीय युवाओं को भरपूर लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यह झारखंडी और मूलवासियों के अधिकार की यात्रा है। उन्होंने कहा कि झारखंड में जो खतियानी है वही झारखंडी है। हर राज्य की अपनी पहचान रही है और झारखंड की अब अपनी पहचान बनेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने ढिबरा पॉलिसी बनायी है जिसका लाभ स्थानीय लोगों, जंगल मे रहने वाले गरीब मजदूर तबके के लोगों को मिलेगा। पहले किसी ने इस पर नहीं सोचा, पर यह सरकार झारखंड के युवाओं के लिए सोचती है। बेरोजगारी दूर करने के लिए सोचती है और जो कहती है, उसे पूरा करती है। ढिबरा पॉलिसी जल्द लागू की जायेगी, जिसका लाभ यहां के लोगों को मिलेगा।

केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि आज महंगाई चरम पर है। पहले जब पांच रुपये महंगाई बढ़ती थी, तो भाजपा के लोग सड़क पर उतर कर कहते थे कि महंगाई डायन हो गयी है, लेकिन अब बेतहाशा महंगाई होने के बाद भी जैसे भौजाई हो गयी है। उन्होंने कहा कि देश में रुपये की कीमत में लगातार गिरावट आ रही है। **(पेज 3 भी देखें)**

अवैध खनन की जांच में तेजी लाने के लिए डीएसपी को नया समन जारी करेगी इडी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य में एक हजार करोड़ के अवैध खनन मामले की जांच कर रहे इडी ने बड़हरवा टोल प्लाजा मामले में तत्कालीन डीएसपी प्रमोद मिश्रा को दोबारा समन जारी करने का मन बनाया है। इडी ने यह कदम सुप्रीम कोर्ट द्वारा उसके अधिकार क्षेत्र को चुनौती देनेवाली झारखंड सरकार की याचिका के निष्पादित करने के बाद उठाया है। जानकारी के अनुसार, यह समन बहुत जल्दी भेजा जायेगा। डीएसपी प्रमोद मिश्रा को अब तक दो बार पूछताछ के लिए समन भेजा जा चुका है, लेकिन झारखंड सरकार ने इसका पुरजोर विरोध करते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर दी थी। झारखंड सरकार ने याचिका में राज्य पुलिस के अधिकारियों से पूछताछ करने के इडी के अधिकार को चुनौती दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने इस याचिका पर सुनवाई से इनकार करते हुए झारखंड सरकार को हाइकोर्ट का दरवाजा खटखटाने को कहा है। सूत्रों के अनुसार इडी इस मामले की जांच जल्द पूरा करने के लिए डीएसपी से पूछताछ करना चाहती है। यह मामला बड़हरवा टोल प्लाजा की नीलामी से जुड़ा है। पाकुड़ के व्यवसायी शंभु नंदन कुमार ने जून 2020 में बड़हरवा थाने में बरहेट के विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा, मंत्री आलमगीर आलमगीर आलम और अन्य के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करायी थी।

एक ऐसा नौकरशाह, जिसे हटाने के लिए पूरा विपक्ष और दुनिया की सबसे ताकतवर एनजीओ सुप्रीम कोर्ट पहुंच गये

संजय कुमार मिश्रा : ऐसे अधिकारी, जिसने भारत में वामपंथी इको-सिस्टम को अकेले ही नष्ट कर दिया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भारत में आज यदि किसी एक नौकरशाह का नाम हर राजनेता और अधिकारी की जुबान पर है, तो वह है संजय कुमार मिश्रा। प्रवर्तन निदेशालय (इडी) के निदेशक। इस अधिकारी का नाम सुनते ही बड़े-बड़े नेता, भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारी और दूसरे लोग डर से कांपने लगते हैं, लेकिन सबसे दिलचस्प बात यह है कि इतना चर्चित होने के बावजूद खुद संजय मिश्रा बिरले ही सामने आते हैं। ऐसे में उनके बारे में जानना बेहद दिलचस्प हो सकता है।

मूल रूप से यूपी के रहनेवाले संजय कुमार मिश्रा भारतीय राजस्व सेवा (आइआरएस) के 1984 बैच के अधिकारी हैं। वह उस समय सबसे कम उम्र के आइआरएस अधिकारी थे। उन्होंने अपना अधिकांश करियर आयकर विभाग में बिताया। वह अपने तेज दिमाग, ईमानदारी और कड़ी मेहनत के लिए प्रसिद्ध हैं। जब मोदी 2014 में प्रधानमंत्री बने और एक नये भारत के निर्माण पर काम करना शुरू किया, तो उन्हें पता था कि भारत के विकास में सबसे बड़ी बाधा भारत विरोधी ताकतों, विदेशी वित्त पोषित एनजीओ, भ्रष्ट राजनेताओं और काला धन को रोकने के लिए कदम उठाने ही होंगे। इसलिए मोदी के कार्यकाल के शुरुआती दो-तीन सालों में एनजीओ और शेल कंपनियों पर जम कर धावा बोला गया था। लेकिन जल्द ही उन्होंने महसूस किया कि यह गठजोड़ बहुत बड़ा है और उन्हें इन वित्तीय अपराधों से निपटने के लिए समान रूप से सक्षम टीम बनाने की जरूरत है।

इसके बाद उनकी मुलाकात संजय कुमार मिश्रा से हुई। कहते हैं कि नरेंद्र मोदी उनसे बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना दृष्टिकोण बताया। 2018 में श्री मिश्रा को इडी का प्रमुख बनाया गया। उन्हें पहली बार इडी के प्रमुख सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। इसके बाद 19 नवंबर 2018 को वह इडी के निदेशक बने। उस समय इडी के बारे में बहुत कम लोग जानते थे। केवल इतना पता था कि इडी मनी लांड्रिंग से जुड़े मामलों की जांच करती है।

संजय मिश्रा के आने के बाद इस एजेंसी का कायाकल्प हो गया। जब उन्होंने कार्यभार संभाला था, तब इडी में महज दो दर्जन अधिकारी थे, लेकिन आज इस एजेंसी में एक सौ के करीब अफसर हैं। देश भर में इसके कार्यालय हैं और इसके पास असीमित शक्तियां हैं। यह एजेंसी कहीं भी कार्रवाई कर सकती है, किसी को भी गिरफ्तार कर सकती है। इतनी शक्ति मिलने के बाद मिश्रा ने भ्रष्टाचारियों पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया।

संजय कुमार मिश्रा मार्च 2020 में रिटायर होनेवाले थे, लेकिन उन्हें मोदी सरकार ने एक साल का सेवा विस्तार दिया। इसके लिए इडी निदेशक की नियुक्ति नियमावली में बदलाव किया गया और उसे दो साल से बढ़ा कर तीन साल कर दिया गया। इस तरह मिश्रा का कार्यकाल नवंबर 2021 तक बढ़ गया। इसके बाद विपक्षी दलों का धैर्य जवाब दे गया। उन्होंने कॉमन कॉज नामक एक एनजीओ के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट में केंद्र के कदम को चुनौती दी, लेकिन वह याचिका खारिज हो गयी। इसके बाद विपक्ष के पास इंतजार के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा, लेकिन मोदी सरकार ने इडी अधिनियम में अध्यादेश के माध्यम से संशोधन किया और निदेशक के कार्यकाल को तीन साल से बढ़ा कर पांच साल कर दिया। बाद में सरकार ने उस संशोधन को संसद से भी पारित कर दिया। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट में उन्हें हटाने के लिए याचिकाओं की बाढ़ आ गयी। यह मामला अभी अदालत में लंबित है।

इन मामलों की जांच कर रही है इडी

किसी ने नहीं सोचा था कि भारत सरकार भ्रष्टाचारियों पर कभी इस तरह की कार्रवाई करेगी, क्योंकि भ्रष्टाचार भारत में एक सामान्य नियम बन गया था, लेकिन मिश्रा के निदेशक बनते ही यह सब शुरू हो गया। यह अप्रत्याशित था। इडी ने पी चिदंबरम, उनके पुत्र कार्ति चिदंबरम, आइसीआइसीआइ बैंक की पूर्व प्रमुख चंदा कोचर आदि लोगों को गिरफ्तार करना शुरू किया। इसके अलावा इडी फिलहाल जिन मामलों की जांच कर रही है, उनमें महाराष्ट्र राज्य सहकारी बैंक मामला (आरोपी शरद पवार और अजीत पवार), कर्नाटक के कांग्रेस नेता डीके शिवकुमार के खिलाफ मनी लांड्रिंग मामला, जम्मू कश्मीर क्रिकेट संघ मामला (फारूक अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती), नेशनल हेराल्ड केस (सोनिया गांधी, राहुल गांधी), वीवीआइपी हेलिकॉप्टर घोटाला (रतुल पुरी-कमलनाथ के रिश्तेदार), पंचकुला भूमि आवंटन मामला (भूपेंद्र हुड्डा), आनुपातिक संपत्ति केस (आनंद कुमार-मायावती के परिजन), अवैध खनन मामला (अखिलेश यादव), भूमि सौदा केस (रॉबर्ट वाड्रा), एयरसेल मैक्सिस सौदा (डी राजा, कनिमोझी, दयानिधि मारन), पात्रा चाल घोटाला (संजय राउत), स्टर्लिंग बायोटेक मामला (अहमद पटेल के बेटे), भूमि घोटाला (जगन रेड्डी), एंबुलेंस मामला (अशोक गहलोत), शारदा चिट फंड (ममता बनर्जी), मनी लांड्रिंग (सत्येंद्र जैन), दिल्ली शराब घोटाला (मनीष सिसोदिया) आदि प्रमुख हैं। इनके अलावा एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसी अनेक एनजीओ की भी इडी जांच चल रही है।

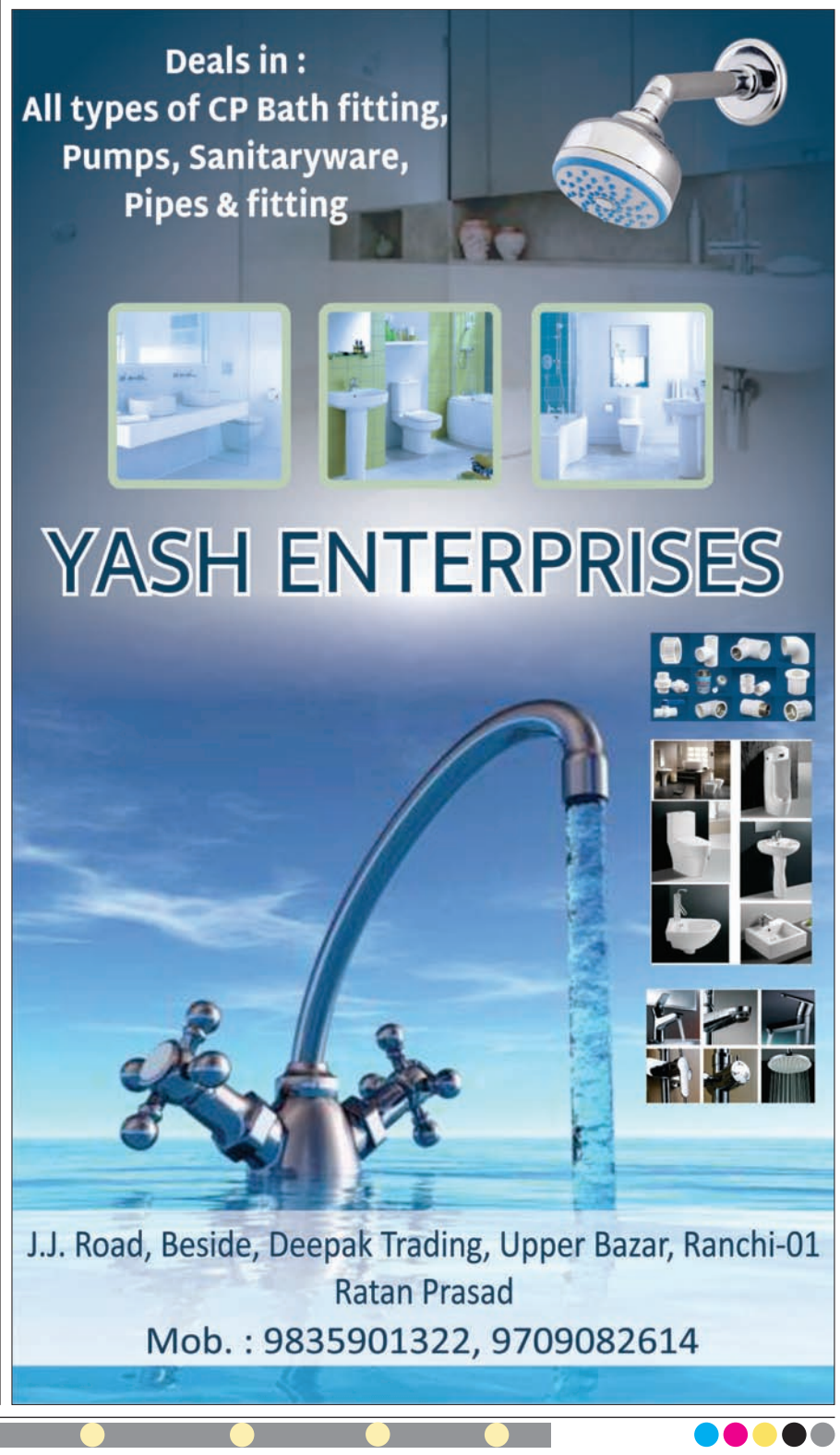

आजाद सिपाही
188100 Subscribers
झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch Time (HR) 11 Lakh+
YouTube Channel
Subscribe NOW
No 1 Channel

सर्राफा

सोना (बिक्री)	53,600 रु./10 ग्राम
चांदी	74,000 रु./प्रति किलो

अन्नाद्रमुक, केसीआर और जगन रेड्डी जैसे नेताओं को नहीं बुलाने से हो रही कांग्रेस की किरकिरी

विपक्षी एकता की कोशिशों को कांग्रेस के न्योते से लगा झटका

■ केजरीवाल और ओवैसी को भी नहीं भेजा निमंत्रण ■ भारत जोड़ो यात्रा के समापन को लेकर शुरू हुआ नया विवाद

आजाद सिपाही विशेष

भारत जोड़ने के लिए पिछले साल सात सितंबर को तमिलनाडु के कन्याकुमारी से निकली यात्रा अब अंतिम चरण में है। इस यात्रा का नेतृत्व राहुल गांधी कर रहे हैं और 30 जनवरी को श्रीनगर में इसका समापन होना है। इसकी तैयारी शुरू हो गयी है। कांग्रेस इस आयोजन को विपक्षी एकता का एक बड़ा अवसर बनाना चाह रही है, लेकिन इसके नेताओं ने जो कुछ किया है, उससे यह धारणा जोर पकड़ने लगी है कि वास्तव में यह आयोजन विपक्षी एकता के लिए नहीं, बल्कि विपक्ष को विभाजित करने के लिए हो रहा है। दरअसल कांग्रेस ने भारत जोड़ो यात्रा के समापन के मौके पर आयोजित होनेवाले कार्यक्रम में शामिल होने के लिए 21 विपक्षी दलों को न्योता भेजा है। लेकिन इसने तमिलनाडु में सत्तारूढ़ अन्नाद्रमुक, तेलंगाना में सत्तारूढ़ तेलंगाना राष्ट्र समिति (इसका नाम अब भारत राष्ट्र समिति हो गया है), आंध्रप्रदेश में सत्तारूढ़ वाइएसआर कांग्रेस के अलावा आम आदमी पार्टी और असदुद्दीन ओवैसी की एआइएमआइएम को न्योता नहीं दिया है। कांग्रेस की इसी रणनीति पर सवाल उठाये जा रहे हैं। कई दलों का कहना है कि कांग्रेस का यह कदम विपक्षी एकता के रास्ते में बड़ी बाधा बन कर खड़ा हो गया है और इससे कहीं न कहीं भाजपा को लाभ हो सकता है। क्या है कांग्रेस की रणनीति और क्यों हो रही है इसकी आलोचना, बता रहे हैं आजाद सिपाही के **विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

राकेश सिंह

कांग्रेस नेता राहुल गांधी अपनी भारत जोड़ो यात्रा के अंतिम चरण में पहुंच गये हैं। 30 जनवरी को श्रीनगर में इसका समापन होगा। इस अवसर को राजनीतिक रूप से धमाकेदार बनाने के लिए कांग्रेस ने बड़ी तैयारी की है। राजनीतिक हलकों में कहा जा रहा है कि यह आयोजन विपक्षी एकता की गाड़ी को गति देगा, क्योंकि कांग्रेस ने इस समारोह में शामिल होने के लिए 21 दलों को न्योता भेजा है। लेकिन तमिलनाडु के कन्याकुमारी से सात सितंबर, 2022 को शुरू हुई इस यात्रा की शुरुआत में जितने विवाद उठे, उनसे कम विवाद इसके समापन को लेकर नहीं हैं। यात्रा शुरू होने के समय कहा गया था कि राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की 'भारत जोड़ो यात्रा' अपनी मंजिल पर पहुंचते-पहुंचते विपक्ष के संयुक्त मोर्चे के रूप में उभरेगी, लेकिन अब कहा जा रहा है कि भारत जोड़ने के लिए निकाली गयी यह यात्रा विपक्षी एकता के तमाम प्रयासों को ही तोड़ देगी और इसकी पूरी जिम्मेवारी कांग्रेस पर होगी।

यह बात इसलिए कही जा रही है, क्योंकि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने 21 विपक्षी पार्टियों को श्रीनगर में भारत जोड़ो यात्रा के समापन के दिन 30 जनवरी को शामिल होने के लिए न्योता भेजा है। लेकिन उन्होंने कई पार्टियों को न्योते में शामिल नहीं किया है। यह इस बात का भी संकेत दे रहा है कि कांग्रेस किसे भाजपा के खिलाफ संयुक्त विपक्षी मोर्चे में अपना सहयोगी देखती है और किसे नहीं। कांग्रेस ने जिन दलों और नेताओं को न्योता भेजा है, उनमें तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी, जदयू के नीतीश कुमार, द्रमुक के एमके स्टालिन, राजद नेता तेजस्वी यादव, शिवसेना नेता उद्धव ठाकरे, तेलुगु देशम पार्टी के नेता एन चंद्रबाबू नायडू, समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव, बसपा प्रमुख मायावती, झामुमो के हेमंत सोरेन, माकपा नेता सीताराम येचुरी, भाकपा नेता डी राजा, नेशनल कांफ्रेंस के फारूक और उमर अब्दुल्ला, राकांपा प्रमुख शरद पवार, पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती, हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा, इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग और रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के नेता शामिल हैं। लेकिन सवाल यह उठ रहा है कि आखिर कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी के अरविंद केजरीवाल, भारत राष्ट्र समिति के के चंद्रशेखर राव, डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी के गुलाम नबी आजाद, अन्नाद्रमुक और भाकपा माले को क्यों नहीं बुलाया है।

यह है कांग्रेस की रणनीति

2024 के लिए एकजुट विपक्ष के बारे में कांग्रेस की रणनीति यही है कि सभी दल कांग्रेस की छतरी के नीचे आयें और राहुल गांधी को नेता स्वीकार कर लें। जिन दलों को कांग्रेस ने न्योता भेजा है, उनमें से ममता बनर्जी और शरद पवार को छोड़ कर अन्य सभी दल कांग्रेस की इस रणनीति के पहले हिस्से से इत्तेफाक रखते हैं, लेकिन उन्हें राहुल गांधी के बारे में संशय है। नीतीश कुमार और अखिलेश यादव के साथ मायावती को भी राहुल के नाम पर आपत्ति हो सकती है, लेकिन ऐसा उन्होंने अब तक जाहिर नहीं किया है। कहा जा रहा है कि कांग्रेस ने जानबूझ कर उन नेताओं और दलों को न्योता नहीं भेजा है, जिन्हें कांग्रेस की रणनीति से आपत्ति है। यहां यह उल्लेख करना जरूरी है कि हाल ही में तेलंगाना के सीएम और भारत राष्ट्र समिति के नेता के चंद्रशेखर राव ने कांग्रेस को सुझाव दिया था कि विपक्षी एकजुटता की खातिर वह दो सौ सीटों पर लड़ने का एलान करे, तो बात बन सकती है। इसे कांग्रेस के जयराम रमेश ने पूरी तरह खारिज कर दिया था। इसके बाद केसीआर ने खम्मम में होनेवाली विपक्षी दलों की रैली के लिए सभी विपक्षी दलों को न्योता भेजा, लेकिन कांग्रेस को छोड़ दिया। इसके बाद कांग्रेस नेताओं ने विपक्ष के उन दलों को 'बेनकाब' करने की रणनीति तैयार की, जो उसके साथ दिखने में हिचकिचाते हैं। आम आदमी पार्टी, असदुद्दीन ओवैसी और अन्नाद्रमुक को कांग्रेस ने इसी रणनीति के तहत न्योता नहीं दिया है। विपक्षी दलों को न्योता भेजकर कांग्रेस यह साबित करना चाहती है कि वह विपक्ष का सबसे बड़ा दल होने के नाते विपक्ष को एकजुट करने की अपनी जिम्मेदारी निभा रही है, लेकिन जो दल उसकी बात नहीं मान रहे, वे भाजपा की मदद कर रहे हैं।

उठ रहे हैं सवाल

लेकिन कांग्रेस की यही रणनीति अब उस पर भारी पड़ने लगी है। अखिलेश यादव और मायावती ने अप्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस की मंशा पर सवाल उठाते हुए इस आयोजन में शामिल होने से मना कर दिया है। उधर ममता बनर्जी भी कह रही हैं कि वह राहुल गांधी के कार्यक्रम में शामिल होने के बारे में अभी निश्चित नहीं हैं। उद्धव ठाकरे और शरद पवार ने भी श्रीनगर जाने से फिलहाल इनकार किया है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा का समापन विपक्षी एकता की कोशिशों को पलीता लगाने के साथ होगा।

अब यह देखना दिलचस्प होगा कि कांग्रेस अपने ऊपर लग रहे इस कलंक के धब्बे को किस तरह साफ करती है, क्योंकि यदि उसकी भारत जोड़ो यात्रा का उद्देश्य पूरा नहीं होगा, तो यह उसके लिए राजनीतिक अवसान के समान होगा।

ट्वीट :

हेमंत सोरेन

कोडरमा जिले में मेरी पिछली यात्राओं में से आज खतियानी जोहार यात्रा में यहां पहले की अपेक्षा सबसे ज्यादा लोगों का स्नेह और आशीर्वाद मिला। इस अवसर पर कोडरमा वासियों को अनेक-अनेक धन्यवाद, आभार और खतियानी जोहार।

बाबूलाल मरांडी

भ्रष्टाचार की रेत में फंसा स्वास्थ्य सुविधाओं का पहिया, धक्का लगाने को मजबूर जनता और कराहती मातृशक्ति। कभी खाट पर, कभी पैदल, तो कभी सड़कों पर ही बच्चा जनने को मजबूर महिलाएं। स्वास्थ्य सुविधाओं की इस दुर्दशा पर भी सोयी हुई झारखंड सरकार! कल राज्य भर के चिकित्साकर्मी मुख्यमंत्री से मिलने आवास तक जा पहुंचे। सीएम तो मिले नहीं, उल्टे महिला कर्मियों को भी पुलिस के जवानों ने पीटा और दुर्व्यवहार किया। अब राज्य के सारे पारा चिकित्सा कर्मी हड़ताल पर चले गये हैं। हेमंत सोरेन जी के झूठे वादों का खामियाजा अब सीधे जनता को भुगतना पड़ रहा है।

डॉ निशिकांत दुबे

झारखंड के हेमंत सोरेन जी की सरकार और गोड्डा में सीटिंग विधायक के रहते कोई भी ईमानदारी से काम नहीं कर सकता। मुखिया जी के पति संजीत जी चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं। भागलपुर का सृजन घोटाला इन्होंने लोगों को बताया।

मल्लिकार्जुन खड़गे

भाजपा ने आर्थिक असमानता की खाई को इतना गहरा कर दिया है कि देश का आम इंसान उसमें धंसता जा रहा है। भारत में सबसे अमीर एक प्रतिशत के पास देश की कुल संपत्ति का 40 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा है, जबकि आधी आबादी के पास तीन प्रतिशत ही हिस्सा बचा है! भारत जोड़ो यात्रा आर्थिक असमानता की खाई को भरने का आंदोलन है।

केंद्र व राज्य सरकार अधिसूचना जारी कर सम्मेद शिखर को मरांग बुरू का दर्जा दे : सिकंदर हेंब्रम

गिरिडीह (आजाद सिपाही)। सम्मेद शिखर मुद्दा एक बार फिर गर्म होता दिख रहा है। क्योंकि गिरिडीह में मरांग बुरू सावंता सुसार बेशी के सदस्य सह भाजपा नेता सिकंदर हेंब्रम, मेरीनिशा हांसदा, बुधन हेंब्रम समेत कई ने मंगलवार को प्रेसवार्ता कर सदर विधायक सुदिव्य कुमार सोनू समेत राज्य सरकार पर तीखा हमला करते हुए कहा की आदिवासी समुदाय कभी नहीं कहता है की सम्मेद शिखर मधुबन सिर्फ आदिवासियों का है। संथाली समुदाय भी मानते हैं कि 20 तीर्थंकर ने इसी भूमि में निर्वाण प्राप्त किया था। लेकिन यह भी सच है की इसी सम्मेद शिखर पारसनाथ पहाड़ को मरांग बुरू के रूप में भी माना जाता है और यह आज से नहीं सदियों से इसकी परपंरा है। इतना ही नहीं इसी सम्मेद शिखर में आदिवासी समुदाय अपने परंपरा के अनुसार पूजा अर्चना और बली तक देते आये हैं। अब ऐसे में जैन समाज अगर आदिवासियों के पूजा में बाधा पैदा करता है तो ये उचित नहीं। उन्होंने केंद्र व राज्य सरकार से मांग करते हुए कहा कि मरांग बुरू का मानना है कि केंद्र और राज्य सरकार तुरंत एक नयी अधिसूचना जारी करे, जिसमें सम्मेद शिखर पारसनाथ को मरांग बुरू का दर्जा हासिल हो।

करोड़ों की ठगी, फर्जी दस्तावेज और कई बड़े खुलासे

100 करोड़ घोटाला मामले में रांची पुलिस को इडी ने लिखी चिट्ठी

मिड डे मील घोटाला मामले में बड़ी कार्रवाई

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। इडी ने रांची पुलिस को पत्र लिखा है। इस पत्र में 100 करोड़ रुपये के मिड डे मील घोटाला मामले में आरोपी संजय तिवारी के खिलाफ प्राथमिक दर्ज करने की अनुशंसा की गयी है। इडी ने भानु कंस्ट्रक्शन के संचालक संजय तिवारी के खिलाफ अविलंब प्राथमिक दर्ज करने के लिए कहा है। ध्यान रहे कि इडी ने साल 2017 के उस मामले की जांच के लिए कदम आगे बढ़ाया है जिसमें मिड डे मील की 100 करोड़ रुपये से अधिक की राशि संजय तिवारी की कंपनी के अकाउंट में भेज दिये गये थे।

मिड डे मील के पैसों से खरीदी थी गाड़ियां

लगभग छह साल पुराने मामले में इडी ने कई नये पक्ष तलाश लिये हैं। झारखंड की राजधानी रांची स्थित हटिया के एसबीआइ शाखा से झारखंड मध्याह्न भोजन प्राधिकरण के खाते से भानु कंस्ट्रक्शन को 101.01 करोड़ रुपये ट्रांसफर किये गये थे। 19 सितंबर 2017 को राज्य निकाय ने बैंकों को निर्देश दिया कि जिलों में मध्याह्न भोजन की राशि जारी की जाये तो यह खुलासा हो गया। इसके बाद जांच में पता लगा कि 16 अगस्त 2017 को भी भानु कंस्ट्रक्शन के संचालक संजय तिवारी ने अपनी कंपनी में काम करने वाले राजू वर्मा के खाते में 8 करोड़ 27 लाख रुपये हस्तांतरित किये। राजू वर्मा ने इन पैसों को अलग-अलग बैंक खातों में डाला। कुछ पैसों की नकद निकासी की और गाड़ियां खरीदी। यही नहीं, संजय तिवारी की पत्नी और राजू वर्मा कई कंपनियों में पार्टनर्स भी थे।

फर्जी दस्तावेज के आधार पर ठगी

अब इस मामले में कई बड़े खुलासे हो सकते हैं। बताया जा रहा है कि 5 एसयूवी गाड़ियां भी फर्जी दस्तावेज पर चल रही हैं। इस मामले में अबतक मिड डे मील राशि के फर्जी हस्तांतरण मामले में पहले सीबीआइ ने प्राथमिकी दर्ज की थी। इडी ने इस मामले को टेकओवर कर लिया क्योंकि इसमें मनी लाउंड्रिंग का मामला भी जुड़ा है। गबन मामले में इडी ने संजय तिवारी को 33 नवंबर 2021 को गिरफ्तार किया था। 23 नवंबर को उसे जेल भेज दिया गया। अब इडी की इस चिट्ठी ने इस मामले में एक बार फिर किसी बड़े खुलासे की तरफ इशारा किया है।

चाची को डायन बताकर भतीजे ने करायी हत्या, कहा-

मार डालो नहीं तो मेरी पत्नी को खा जायेगी

आजाद सिपाही संवाददाता

मझगांव। झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले के मझगांव थाना अंतर्गत पड़सा पंचायत के उलीहातु गांव में 11 जनवरी को महिला की हत्या जमीन हड़पने के लिए की गयी थी। पुलिस ने पांच दिन बाद पूरे मामले का उद्भेदन करते हुए हत्या करने के आरोप में भतीजा समेत तीन लोगों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा, जहां से तीनों को जेल भेज दिया गया है। मुख्य साजिशकर्ता डेबरा उर्फ बाबूलाल पिंगुवा, गोपाल पिंगुवा व जितेंद्र सिरका शामिल हैं। डेबरा ने महिला को साजिश के तहत डायन बताते हुए दोनों को हत्या के लिए उकसाया था।

भतीजे ने लोगों को डराया डायन चाची उसकी पत्नी को खा जायेगी

डेबरा ने बाकी दो लोगों से कहा था कि मसूरी पिंगुवा डायन है। उसकी वजह से उसकी पत्नी बीमार रहती है। अगर उसे नहीं मारा, तो वह उसकी पत्नी को खा जायेगी। मामले में मझगांव थाना प्रभारी विकास दुबे ने बताया कि 11 जनवरी को उलीहातु गांव में मसूरी पिगुंवा की कुल्हाड़ी से सिर पर वार कर हत्या करने के बाद आरोपित फरार हो गये थे। अनुसंधान के क्रम में पता चला कि महिला की हत्या जमीन हड़पने की नियत से की गयी थी। हत्याकांड में 21 वर्षीय गोपाल पिगुंवा और जितेंद्र सिरका का नाम सामने आया।

कुल्हाड़ी से हत्या को अंजाम देकर फरार हुए आरोपित

पुलिस ने दोनों के बारे में जानकारी जुटाकर ओड़िशा के मयूरभंज जिला अंतर्गत महुलडीहा थाना क्षेत्र के चियाबेड़ा गांव में छापा मारकर दोनों को गिरफ्तार किया। दोनों आरोपितों ने बताया गांव के ही 33 वर्षीय डेबरा उर्फ बाबूलाल पिगुंवा के बहकावे में आकर नशे के हालत में कुल्हाड़ी से मसूरी पिगुंवा की हत्या कर दोनों फरार हो गये थे। दोनों आरोपितों ने बताया कि 8 जनवरी को गांव के ही डेबरा उर्फ बाबूलाल पिगुंवा ने दोनों युवकों को नशा-पान कर हत्या करने को उसकाया।

जमीन को लेकर चाची से चल रहा था विवाद

दोनों की निशानदेही पर पुलिस ने ग्रामीण मुंडा सनातन पिंगुवा के तालाब से कुल्हाड़ी बरामद की। साथ ही साथ बाबूलाल पिंगुवा को भी गिरफ्तार कर लिया। थाना प्रभारी ने बताया कि बाबूलाल पिंगुवा रिश्ते में मृतका का भतीजा लगता है। गांव में उसकी दुकान भी है। जमीन को लेकर उसका मृतका मसूरी पिंगुवा से विवाद चल रहा था।

15 लाख के इनामी नक्सली कृष्णा हांसदा को पुलिस लायी सामने

गिरफ्तारी के पांच दिनों बाद गिरिडीह पुलिस ने दी पूरी जानकारी

आजाद सिपाही संवाददाता

गिरिडीह। गिरफ्तारी के पांच दिनों बाद गिरिडीह पुलिस ने मंगलवार को हार्डकोर व 15 लाख के इनामी नक्सली और पीरटांड़ थाना इलाके के लेढवा गांव निवासी कृष्णा हांसदा उर्फ सौरभ दा उर्फ अविनाश दा की गिरफ्तारी की पूरी जानकारी दी। मंगलवार को एसपी अमित रेनू, एएसपी गुलशन तिर्की, एसडीपीओ मनोज कुमार, इंस्पेक्टर परमेश्वर लियांगी और सीआरपीएफ कमांडेंट संतोष कुमार ने प्रेसवार्ता कर हार्डकोर नक्सली की गिरफ्तारी के साथ ही उसकी निशानदेही पर मिलने वाली कामयाबी की बाबत जानकारी देते हुए एसपी अमित रेनू ने बताया कि कृष्णा हांसदा नक्सली संगठन की रीजनल कमिटी का सदस्य है और गिरिडीह के पारसनाथ समेत उत्तरी-दक्षिणी इलाके में सक्रिय रहा है। कृष्णा हांसदा सीसीए सदस्य विवेक उर्फ प्रयाग दा का काफी करीबी माना जाता है।

एसपी ने बताया कि गिरिडीह के कई थानों के साथ धनबाद में इसके खिलाफ 50 से अधिक नक्सली केस दर्ज हैं, जिसमें कई सरकारी संपत्ति को उड़ाने समेत हत्या के मामले शामिल हैं। वैसे गिरफ्तारी के पांच दिनों बाद भले ही गिरिडीह पुलिस इस हार्डकोर नक्सली को सामने लेकर आयी है। पुलिस सूत्रों की मानें तो जिस दिन एसडीपीओ मनोज कुमार और डुमरी थाना प्रभारी गोपाल महतो के साथ पुलिस जवानों ने इसे डुमरी थाना इलाके के लुसियो जंगल से दबोचा, उस वक्त भी ये जमुई के एक ही नक्सली कैडर अभिजीत के साथ गिरिडीह के एक ठेकेदार से लेवी के पैसे वसूली के लिए ही लूसियो जंगल पहुंचा था। पुलिस सूत्रों की मानें तो जमुई के नक्सली अभिजीत के साथ हार्डकोर नक्सली कृष्णा को लेवी का पैसा देने ठेकेदार का मुंशी पहुंचा था। इतना ही नहीं कृष्णा और उसके साथी नक्सली ने ठेकेदार से दो लाख लेवी वसूल भी चुका था।,जिसे इसकी गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने इसके पास से बरामद किया। वहीं दूसरी तरफ इसका साथी और जमुई का नक्सली अभिजीत फरार होने में सफल रहा।

गिरफ्तारी के इन पांच दिनों में पुलिस ने कृष्णा की निशानदेही पर पारसनाथ पहाड़ के अलग अलग हिस्सों में छापेमारी कर कई नक्सली साहित्य और वर्दी भी जब्त किया है। वैसे पुलिस सूत्रों ने ये भी संकेत दिया है कि जिस ठेकेदार के मुंशी से दो लाख लेवी लेने कृष्णा हांसदा और अभिजीत पहुंचा था, उसे लेने के लिए कृष्णा को उसके आका और सीसीए सदस्य विवेक उर्फ कर्मा ने निर्देश दिया था। क्योंकि कृष्णा के आका को पांच लाख की जरूरत थी। लिहाजा, सीसीए सदस्य विवेक ने ही गिरिडीह के आरइओ में रोड और पुलिया बनाने वाले ठेकेदार से पांच लाख की लेवी की मांग की थी। ठेकेदार भी विवेक को पहली किस्त में दो लाख देने के लिए तैयार हो गया और ठेकेदार के कहने पर लेवी के पैसे लेने कृष्णा और अभिजीत को भेजा गया था।

मुख्यमंत्री ने ट्रेनिंग सेंटर कैंप और बालिका उच्च विद्यालय का लिया जायजा

प्रदेश में भाजपा सबसे अधिक सत्ता में रही, पर सिर्फ राज्य को लूटने का काम किया : हेमंत

कहा- झारखंड के मूलवासियों की जगह जाली प्रमाण पत्रों पर बाहरी लोग काम कर रहे

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। खतियानी जोहार यात्रा में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि सड़क पर टोल टैक्स देना पड़ता है और इसकी वसूली के लिए मुस्टंडों को रखा जाता है। आजादी के बाद वर्तमान दौर सबसे अराजक स्थिति में है। श्री सोरेन ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सबसे अधिक सत्ता में रही पर सिर्फ राज्य को लूटने का काम किया। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय का आभार व्यक्त किया, वहीं यह भी कहा कि झारखंड के मूलवासियों की जगह जाली प्रमाण पत्रों पर बाहरी लोग काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी सरकार ने पुरानी पेंशन योजना को लागू किया है जिसका लाभ सभी सरकारी कर्मियों को मिलेगा। श्री सोरेन ने कहा कि पूर्व की भाजपा सरकार ने 11 लाख लोगों का नाम राशन कार्ड से हटाया जबकि हमारी सरकार ने 20 लाख लोगों का राशन कार्ड में नाम जोड़ा है।

मंच पर मंत्री सत्यानंद भोक्ता, बरही विधायक उमाशंकर अकेला, कांग्रेस नेता शहजादा अनवर, राजद जिलाध्यक्ष रामधन यादव, झामुमो नेता और पूर्व विधायक जयप्रकाश वर्मा, पवन माइकल कुजूर, रवींद्र शांडिल्य, संजय साजन, श्यामकिशोर सिंह, गोपाल यादव समेत गठबंधन के अन्य कई नेता मौजूद थे। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद शाम 5.30 बजे मुख्यमंत्री सड़क मार्ग से गिरिडीह के लिए प्रस्थान कर गये।

युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ने के लिए चल रहीं कई योजनाएं

कोडरमा। मुख्यमंत्री मंगलवार को कोडरमा जिला भ्रमण कार्यक्रम के दौरान कहा कि सरकार हर वर्ग के लोगों के लिए कार्य कर रही है। एक ओर युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए योजना बना रही तो महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए स्वरोजगार से जोड़ने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार आपके द्वार आकर आपको सरकार के महत्वपूर्ण योजनाओं से जोड़ने का काम कर रही है। आपके आस पास जब सरकार का शिविर लगे तो आप उन शिविरों में जाकर अपने हित की योजनाओं से जुड़ने का काम करें।

डीइजीएस कंप्यूटर बेसिक ट्रेनिंग सेंटर कैंप का निरीक्षण

मुख्यमंत्री ने कोडरमा के बागीटांड स्टेडियम में जिला प्रशासन द्वारा चलाये जा रहे डीइजीएस कंप्यूटर बेसिक ट्रेनिंग सेंटर के कैंप में कंप्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे बच्चों से मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने बालिकाओं से उनके प्रशिक्षण के बारे में भी जाना। जिला प्रशासन द्वारा कोडरमा के सभी ब्लॉक में कुल 9 सेंटर चलाये जा रहे हैं। जिसमें जिले के अबतक कुल 10658 बच्चों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। अभी प्रत्येक सेंटर में 300 से अधिक विद्यार्थी कंप्यूटर का शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

परियोजना बालिका उच्च विद्यालय का लिया जायजा

मुख्यमंत्री ने परियोजना बालिका उच्च विद्यालय, कोडरमा के पुनर्निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने विद्यालय की बच्चियों के साथ संवाद किया। उन्होंने बच्चियों से कहा कि आप पढ़ाई करें। आपके पढ़ाई के लिए सरकार सारी व्यवस्था करेगी। आपको मेडिकल, इंजीनियरिंग, लॉ आदि जिस क्षेत्र में करियर बनाना हो, सरकार खर्चा वाहन करेगी। इसके साथ यूपीएससी, जेपीएससी, एसएससी इत्यादि की कोचिंग के लिए भी सरकार आपको आर्थिक मदद करेगी। इस मौके पर उन्होंने बच्चियों से पठन-पाठन से संबंधित जानकारी ली। ज्ञात हो कि इस विद्यालय में पुस्तकालय, कार्यशाला, सिक रूम, कंप्यूटर लैब, हर्ष जोहार कक्ष, स्मार्ट क्लास जैसी सुविधाएं उपलब्ध है। इस विद्यालय में किचेन गार्डेन एवम गार्डेनिंग भी करायी जाती है।

इस मौके पर मंत्री सत्यानंद भोक्ता, बरही विधायक उमाशंकर अकेला, मुख्यमंत्री के सचिव विनय चौबे, डीआइजी उत्तरी छोटानागपुर नरेंद्र कुमार सिंह, उपायुक्त कोडरमा आदित्य रंजन, पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव मौजूद थे।

विधायक नीरा यादव ने किया स्वागत

मुख्यमंत्री के मंगलवार को कोडरमा पहुंचने पर स्थानीय भाजपा विधायक नीरा यादव ने जेजे कॉलेज स्थित हैलीपैड पहुंचकर उनका स्वागत किया। इस दौरान विधायक ने ज्ञापन सौंपा और क्रशर उद्योग, माइका उद्योग की बेहतरी के उपाय करने, जेजे कॉलेज में बने बहुउद्देश्यीय भवन को चालू करने की मांग की। हैलीपैड पर झामुमो कार्यकर्ताओं ने भी बुके देकर मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

प्रदेश भाजपा ने दी राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को बधाई

जेपी नड्डा के नेतृत्व में तीसरी बार बनेगी मोदी सरकार: दीपक प्रकाश

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा राष्ट्रीय कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक नयी दिल्ली में संपन्न हुई। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद दीपक प्रकाश, नेता विधायक दल एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र त्रिपाठी, प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह, राष्ट्रीय मंत्री आशा लकड़ा, अनुसूचित जनजाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री अन्नपूर्णा देवी, सांसद समीर उरांव शामिल हुए। बैठक में सांगठनिक एवं राजनीतिक चर्चा के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के अध्यक्षीय कार्यकाल को भी सर्वसम्मति से विस्तारित किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को बधाई एवं

भाजपा राष्ट्रीय कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक

शुभकामनाएं देते हुए प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश ने कहा कि भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष के कुशल नेतृत्व एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के कुशल मार्गदर्शन में 2024 का लोकसभा चुनाव दो तिहाई बहुमत से जीतेगी। श्री प्रकाश ने कहा कि केंद्र में तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में फिर से मजबूत सरकार बनेगी। नेता विधायक दल एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि नड्डा जी के नेतृत्व में भाजपा देश में और मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के पूर्व इसी वर्ष 9 राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव भी पार्टी जीतेगी और राज्यों में भी भाजपा की सरकार बनेगी। क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि नड्डा जी के नेतृत्व में पार्टी की सांगठनिक संरचना और मजबूत होगी, आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनाव पार्टी मजबूती से जीतेगी। प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने कहा आगामी दिनों में भाजपा बूथ को मजबूत करते हुए भारी बहुमत से केंद्र में फिर से मजबूत सरकार बनायेगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष को बधाई, शुभकामनाएं देने वालों में प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा, बालमुकुंद सहाय आदि शामिल हैं।

विधायक नमन विक्सल कोंगाड़ी ने भी इडी से दो सप्ताह का समय मांगा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। कैश कांड के मामले में आरोपित कांग्रेस विधायक नमन विक्सल कोंगाड़ी भी इडी कार्यालय नहीं पहुंचे। मंगलवार को विधायक के अधिवक्ता चंद्रभानु इडी कार्यालय पहुंचे। अधिवक्ता ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि दो सप्ताह का समय इडी से मांगा गया है। उन्होंने कहा कि विधायक रांची से बाहर हैं। उन्होंने कहा कि विधायक इडी को पूरा सहयोग करेंगे। विधायक से जो भी सवाल पूछा जायेगा, उनका जवाब दिया जायेगा।

अनूप सिंह के बयान के क्रॉस वेरिफिकेशन के लिए इडी ने विधायक को समन कर बुलाया था। इससे पूर्व 16 जनवरी को राजेश कच्छप को भी इडी ने समन कर बुलाया था, लेकिन उन्होंने भी दो सप्ताह का समय बाहर होने का हवाला देकर मांगा था, जबकि 13 जनवरी को कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी को इडी ने समन कर पूछताछ के लिए बुलाया था, लेकिन उन्होंने भी दो सप्ताह का समय इडी से मांगा था।

उल्लेखनीय है कि इडी ने 7 जनवरी को कैश कांड में पूछताछ के लिए इरफान अंसारी को 13 जनवरी, कांग्रेस विधायक राजेश कच्छप को 16 जनवरी और विधायक नमन विक्सल कोंगाड़ी को 17 जनवरी को रांची के क्षेत्रीय कार्यालय में बुलाया था। इडी ने इस मामले में तीनों को मनी लॉड्रिंग का आरोपी बनाया है।

विधायक ढुल्लू महतो की जमानत याचिका पर अब 24 जनवरी को सुनवाई

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पुलिस हिरासत से एक वारंटी को छुड़ाने के मामले में सजायाफ्ता भाजपा विधायक ढुल्लू महतो की क्रिमिनल रिवीजन में उनकी ओर से दायर जमानत याचिका की सुनवाई झारखंड हाइकोर्ट में मंगलवार को हुई। मामले में प्रार्थी की ओर से बताया गया कि ढुल्लू महतो ने करीब दो तिहाई सजा काट ली है, इसलिए उन्हें जमानत दी जाये। सुनवाई के दौरान सरकार की ओर से समय देने का आग्रह किया गया, जिस पर कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 24 जनवरी निर्धारित की है। मंगलवार को न्यायमूर्ति संजय प्रसाद की कोर्ट में सुनवाई हुई। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता इंद्रजीत सिन्हा, अखौरी अविनाश, अजय शाह ने पैरवी की। पिछली सुनवाई के दौरान प्रार्थी की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि ढुल्लू महतो ने धनबाद की निचली अदालत में सरेंडर कर दिया है। बता दें कि विधायक ढुल्लू महतो को सरकारी कार्य में बाधा डालने और पुलिस इंस्पेक्टर की वर्दी फाड़ने के मामले में दोषी करार दिया था।

मल्लिकार्जुन खड़गे के झारखंड आगमन की तैयारी शुरू

रांची। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे फरवरी के दूसरे सप्ताह में झारखंड आयेंगे। वह झारखंड से हाथ से हाथ जोड़ो कार्यक्रम की शुरुआत करेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद खड़गे का यह पहला झारखंड दौरा होगा। कांग्रेस प्रवक्ता राकेश कुमार सिन्हा ने मंगलवार को कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के संभावित दौरे को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गयी हैं। कार्यक्रम का रूपरेखा तैयार की जा रही है। जल्द ही कार्यक्रम की घोषणा की जायेगी।

G20
भारतीय रेल
आज़ादी का अमृत महोत्सव
भारत सरकार
रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)
सं. 2022/आरएस(डब्ल्यूटीए)–149/टेंडर/529 नई दिल्ली, दिनांक : 17.01.2023
निविदा सं. डब्ल्यूटीए–529 के लिए शुद्धि पत्र सं. 4
विषय :– सरकारी विनिर्माण इकाइयों एवं ट्रेनसेट डिपुओं के अपग्रेडेशन सहित वितरित शक्ति प्रणाली वाले नए जनरेशन के ऊर्जाक्षम वंदे भारत ट्रेनसेटों के विनिर्माण–सह–अनुरक्षण के लिए दिनांक 30.01.2023 को खोली जाने वाली ई–निविदा सं. डब्ल्यूटीए–529.
विषयगत निविदा को खोले जाने की तारीख 30.01.2023 से स्थगित कर के 15.02.2023 (बुधवार) कर दी गई है।
निविदा के कुछ अन्य निबंधन एवं शर्तें भी आशोधित की गई हैं। भावी बोलीदाताओं से अनुरोध है कि वे अतिरिक्त ब्यौरों के लिए https://ireps.gov.in वेबसाइट देखें।
कार्यपालक निदेशक/रेल भंडार (आरएस)
रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)
रेल भवन, रायसीना रोड,
नई दिल्ली–110001
ईमेल – drsm@rb.railnet.gov.in
191/2023
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

फॉर्म सं. 22
(विनियमन 37(1) देखें)

बिक्री की घोषणा
वसूली अधिकारी का कार्यालय
ऋण वसूली न्यायाधिकरण, झारखण्ड, राँची
ओ.ए. केस सं० 12/2009 के मुकदमे में वसूली प्रक्रिया सं० 530/2015
आयकर अधिनियम 1961 के साथ पढ़ा जाने वाला बैंक एवं वित्तिय संस्थानों के बकाया अधिनियम 1993 के तहत बकाया की वसूली हेतु नियम 38, 52(2) के तहत द्वितीय अनुसूची के बिक्री की सूचना
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य शाखा, रांची बनाम मेसर्स ए.पी.एस. इंडस्ट्रीज एवं अन्य

सेवा में,
(1). **मैसर्स ए.पी.एस. इंडस्ट्रीज,** एक प्रोपराइटरशिप इकाई, जिसका कार्यालय कोकर इंडस्ट्रियल, प्लॉट सं. VI, VII, VIII एवं X का हिस्सा, कोकर, रांची में अपने प्रोप्राईटर प्रिंस केडिया, पिता चिरंजी लाल केडिया, के माध्यम से, आवास : बर्दवान कंपाउंड, पोस्ट एवं थाना लालपुर, रांची।
(2). **श्री श्रीकांत केडिया,** पिता चिरंजी लाल केडिया, बर्दवान कंपाउंड, पोस्ट एवं थाना लालपुर, रांची।
(3). **दिव्या केडिया,** पति स्व. प्रिंस केडिया, आवास : उर्मिला अपार्टमेंट, पीस रोड, पोस्ट एवं थाना लालपुर, जिला – रांची
(4). **श्रीमती बीबी शायरा खातून,** पति मो. आबिद, निवासी : पोस्ट एवं थाना ओरमांझी, जिला– रांची

(1). जबकि पीठासीन पदाधिकारी, ऋण वसूली न्यायाधिकरण, रांची द्वारा **ओ.ए. केस सं० 12/2009** में जारी किये गये वसूली सर्टिफिकेट के सम्बंध में सर्टिफिकेट के अनुसार ब्याज और भुगतेय लागत सहित **रु. 48,59,131.00 (रुपए अड़तालीस लाख उनसठ हजार एक सौ इकतीस मात्र)** का भुगतान करने में आप विफल रहे।
(2). और जबकि उक्त सर्टिफिकेट के संतुष्टी में अधोहस्ताक्षरी ने अनुसूचि में वर्णित निम्नलिखित अटैच की हुई सम्पत्ति की बिक्री हेतु आदेश दिया है।
(3). और जबकि **19.12.2022** को वादकालीन और 23.01.2009 से मासिक आधार पर 10 प्रतिशत सालाना भविष्य के ब्याज समेत दावे के पूर्ण और अंतिम वसूली तक सर्टिफिकेट के अनुसार रूपये 51,000/– (रुपये इक्यावन हजार मात्र) की लागत के अलावे **रु. 48,59,131.00 (रुपए अड़तालीस लाख उनसठ हजार एक सौ इकतीस मात्र)** की राशि बकाया होगी।
(4). एतदद्वारा सूचित किया जाता है कि रद्द होने के किसी आदेश के अभाव में उक्त सम्पत्ति की बिक्री ई–निलामी द्वारा की जायेगी और "ऑनलाइन इलेक्ट्रॉनिक बिडिंग" के द्वारा बोली लगाई जायेगी जो कि **मेसर्स ई–प्रोक्योरमेंट टेक्नोलॉजीज लिमिटेड के वेबसाईट https://drt.auctiontiger.net के मार्फत 24.02.2023 को सुबह 11:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक और जरूरत हुई तो दोपहर 12:00 बजे के बाद 5 मिनट की विस्तारित अवधि के साथ होगी।**
विस्तृत जानकारी के लिए वसूली पदाधिकारी ऋण वसूली न्यायाधिकरण रांची से फोन नं० 0651–2214021 एवं सम्पत्ति निरिक्षण के लिए सुश्री राखी कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य शाखा, रांची, मो. सं. 9264291901 से सम्पर्क करें।
4.1 नीचे वर्णित अनुसुची में उपरोक्त नाम के सर्टिफिकेट देनदार की सम्पत्ति बेची जायेगी और उक्त सम्पत्ति से जुड़े हुए दायित्व और दावे जो कि सुनिश्चित किये गए हैं उनका विवरण अनुसुची में प्रत्येक लॉट के समक्ष वर्णित है।
4.2 अनुसुची में वर्णित लॉट के अनुसार सम्पत्ति की बिक्री की जायेगी। यदि सम्पत्ति की एक अंश की बिक्री से होने वाली वसूली राशि से संतुष्टि हती है बाकी समपत्ति की बिक्री तुरन्त रोक दी जायेगी। बिक्री तब भी रुक जायेगी यदि किसी लॉट में नीलामी बोली खत्म होने के संकेत होंगे, उक्त में वर्णित बकाया, ब्याज, लागत (बिक्री की लागत समेत) बिक्री संचालित करने वाले पदाधिकारी के समक्ष जमा कर दिये जायें या उनकी संतुष्टि के लिए यह प्रमाणित कर दिया जाये कि उस सर्टिफिकेट की राशि, ब्याज और लागत का भुगतान अधोहस्ताक्षरी को कर दिया गया है।
4.3 कोई भी अन्य पदाधिकारी या अन्य व्यक्ति बिक्री के सम्बंध में किसी भी प्रकार की ड्यूटी कर पायेगा, हालांकि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बेची जाने वाली सम्पत्ति को प्राप्त करने हेतु कोई बोली या उसे प्राप्त करने की हित का कोई भी प्रयास करेगा। बिक्री आयकर अधिनियम 1961 की द्वितीय अनुसुची में उल्लेखित शर्तों के अनुसार और नियम के निम्नलिखित अन्य शर्तों के अनुसार होगी।
4.4 अधोहस्ताक्षरी के श्रेष्ठ सूचना के अनुसार उल्लेखित अनुसुची में विवरणों को शामिल किया गया है लेकिन किसी प्रकार की त्रुटि, गलत विवरण या इस घोषणा में किसी तथ्य के चूक के लिए अधोहस्ताक्षरी उत्तरदायी नहीं होगा।
5.(क) आरक्षित मूल्य का विवरण **नीचे वर्णित** है जिसके नीचे सम्पत्ति नहीं बेची जायेगी।

अचल सम्पत्तियों का विवरण	आरक्षित मूल्य	ईएमडी
प्रमाणपत्र देनदार सं. 4 की अचल संपत्ति जो खाता सं. 4, 23, 24, 22, 37, प्लॉट सं. 147, 261, 358, 401, 307, 308, 397, 402, 33, 300, 178, 215, 301, 310, 311, 302, 94 एवं 95, खेवट सं. 5, ग्राम बख्शीडीह, थाना अनगड़ा, थाना सं. 3, में कुल क्षेत्रफल – 9.80 एकड़ में बिक्री विलेख सं. 3205/3001 दिनांक 13.05.1950 द्वारा स्थित है।	रु. 68,60,000/–	रु. 6,86,000/–

(6). **इच्छुक बोलीकर्ताओं को आरक्षित मूल्य ईएमडी, पैन कार्ड, पहचान प्रमाण पत्र, पता प्रमाण पत्र इत्यादि कागजातों के साथ जमा करना होगा और कम्पनी की दशा में कम्पनी के बोर्ड सदस्यों द्वारा पारित प्रस्ताव की प्रति या काई अन्य कागजात जो कम्पनी के प्रतिनिधित्व/ अटॉर्नी का दावा भी कर सके समेत 22.02.2023 के शाम 4:00 बजे तक या पहले वसूली पदाधिकारी, डीआरटी, रांची के कार्यालय में जमा करना होगा, इसके बाद ही वे 24.02.2023 को सुबह 11:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक होने वाले ई–नीलामी में भाग लेने हेतु सक्षम होंगे। यदि नीलामी बंद होने के समय के अंतिम 5 मिनट में बोली डाली जाती है तो बंद होने का समय स्वतः ही 5 मिनट के लिए बढ़ जायेगा।**
(7). इच्छुक बोलीदाताओं को ईएमडी राशि वसूली अधिकारी, डीआरटी, रांची के खाते में **RTGS/ NEFT/ EFT द्वारा चालू खाता सं. 31598921087, आइएफएससी कोड : SBIN0007507, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इंद्रपुरी शाखा, रांची** जमा करानी होगी।
(8). बोली प्रपत्र के साथ **ईएमडी** की रसीद **वसूली अधिकारी के कार्यालय, ऋण वसूली न्यायाधिकरण, पांचवी मंजिल, आर.आर.डी.ए. बिल्डिंग, कचहरी चौक, रांची** में जमा की जाएगी।
(9). वह राशि **रूपये 1,00,000/–** होगी जिसके द्वारा बोली बढ़ाई जानी है, बोली की रकम से सम्बंधित या बोलीकर्ता द्वारा उत्पन्न होने वाले विवाद की दशा में उस लॉटको पूनः निलामी के लिए रखा जायेगा।
(10). असफल बोलीकर्ता वसूली पदाधिकारी, डीआरटी, राँची से ई–निलामी बिक्री प्रक्रिया बंद होने के तुरंत बाद **ईएमडी** राशि सीधे वापस ले सकते हैं।
(11). सफल/उच्चतम बोली लगाने वाले को ईएमडी को समायोजित करने के बाद बोली/बिक्री राशि के 25 प्रतिशत **"वसूली अधिकारी, डीआरटी, रांची", के पक्ष में RTGS/ NEFT/ EFT द्वारा चालू खाता सं. 31598921087, आइएफएससी कोड : SBIN0007507, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इंद्रपुरी शाखा, रांची** में देय होगा। इसे अगले बैंक कार्य दिवस यानि शाम 04:00 बजे तक इस ट्रिब्यूनल के पास जमा करना होगा। इसमें विफल रहने पर ईएमडी जब्त कर लिया जाएगा।
(12). सफल/उच्चतम बोलीदाता को बिक्री राशि का शेष 75 प्रतिशत वसूली अधिकारी, डीआरटी, रांची के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट/पे ऑर्डर के माध्यम से जमा करना होगा। इसे संपत्ति की नीलामी की तारीख से 15वें दिन या उससे पहले **"वसूली अधिकारी, डीआरटी, रांची", के पक्ष में RTGS/ NEFT/ EFT द्वारा चालू खाता सं. 31598921087, आइएफएससी कोड : SBIN0007507, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इंद्रपुरी शाखा, रांची** में देय होगा। यदि 15वां दिन रविवार या अन्य छुट्टी का दिन होता है तो इस दिन को छोड़कर 15वें दिन के बाद पहले कार्यालय दिवस में रु० 1,000/– तक 2 प्रतिशत की दर से और रु० 1,000/– के उपर कुल राशि 1 प्रतिशत की दर से पाउंडेज रजिस्ट्रार, डीआरटी, रांची के पक्ष में जमा करना है। (डाक के माध्यम से शेष 75 प्रतिशत राशि जमा करने के मामले में, उपरोक्त के अनुसार वसूली अधिकारी तक पहुँच जाना चाहिए)।
(13). विहित अवधि में भूगतान में विफल होने पर सम्पत्ति की पूर्न बिक्री फिर से बिक्री की घोषणा करने के बाद की जायेगी। यदि अधोहस्ताक्षरी उचित समझे तो बिक्री में होने वाली खर्च को सरकार के समक्ष रखते हुए जमा को जब्त कर सकता है और विफल क्रेता सम्पत्ति या उस सम्पत्ति के किसी भी अंश को जो कि बिक्री के लिए रखी गई है, खरीदने का दावा खो देगा।
(14). उच्चतम बोलीकर्ता को किसी भी लॉट का क्रेता घोषित किया जायेगा बशर्ते कि बोली की रकम आरक्षित मूल्य से कम ना हो। यह अधोहस्ताक्षरी की इच्छा पर होगा कि वो प्रस्तावित मूल्य स्पष्ट रूप से अपर्याप्त पाये जाने पर अनुपयुक्त समझते हुए उच्चतम बोली को अस्वीकार/ स्वीकार कर सकता है।
(15). संपत्ति जैसी है और जहाँ है/ जो है/ बिना शिकायत के आधार पर बेची गई है। बोलीकर्त्ताओं को सलाह दी जाती है/ आगाह किया जाता है कि वे एसआरओ के साथ–साथ राजस्व अभिलेखों को सत्यापित करें और अपनी बोली जमा करने से पहले संपत्ति की प्रकृति, विवरण, स्थिति, अदिभार, ग्रहणाधिकार, प्रभार, वैधानिक बकाया आदि के बारे में खुद को संतुष्ट करें। सरकार/ स्थानीय निकाय को देय सांविधिक देय/दायित्व आदि, यदि कोई हो, जो बिक्री सूचना /निविदा दस्तावेज में दर्शाए गए हैं, क्रेता(ओं) द्वारा वहन किए जाएंगे।
(16). **कब्जे की सुपुर्दगी** : नीलामी क्रेता द्वारा सभी खर्चों और प्रासंगिक शुल्कों को वहन किया जाएगा। प्रमाणपत्र धारक बैंक/ वित्तीय संस्थान द्वारा बिक्री आय के विनियोग के अनुरोध पर केवल नीलामी क्रेता द्वारा स्वामित्व विलेख प्राप्त करने और संपत्ति का कब्जा देने का मेमो दाखिल करने पर ही विचार किया जाएगा।
(17). अधोहस्ताक्षरी को किसी या सभी बोलीयों को अनुचित पाये जाने पर स्वीकार या रद्द करने या किसी भी वक्त निलामी को बगैर कोई कारण बताये रद्द करने का अधिकार सुरक्षित है।
इस न्यायाधिकरण, राँची की मुहर एवं मेरे हाथों द्वारा 19 दिसम्बर, 2022 को दिया गया।

(गौरव कु. कसेरा)
वसूली पदाधिकारी

नोट : विवाद की स्थिति में अंग्रेजी पाठ्य मान्य होगा।

पत्र सूचना कार्यालय रांची की ओर से आयोजित था कार्यक्रम

चाइबासा में क्षेत्रीय मीडिया कार्यशाला 'वार्तालाप' का आयोजन

एडीजी पीआइबी, पुलिस अधीक्षक चाइबासा, डीडीसी भी कार्यशाला में हुए शामिल

पीएम आवास, मनरेगा, कृषि और मत्स्य पालन से जुड़े योजनाओं पर लाभुकों से बातचीत सत्र का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

चाइबासा। सूचना प्रसारण मंत्रालय के विभाग पत्र सूचना कार्यालय, रांची द्वारा चाइबासा जिला प्रशासन के सहयोग से मंगलवार को सुबह 10 बजे से समाहरणालय परिसर स्थित सभागार में क्षेत्रीय मीडिया कार्यशाला 'वार्तालाप' कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन जिला उपायुक्त अनन्य मित्तल के द्वारा संपन्न हुआ। पद्मश्री बलबीर दत्त, पीआइबी रांची के अपर महानिदेशक, पुलिस अधीक्षक चाइबासा, उप विकास आयुक्त, डीपीओ व डीपीआरओ चाइबासा, बीडीओ सदर की भी इस अवसर पर उद्घाटन सत्र में मौजूदगी रही। वरिष्ठ पत्रकार चंदन मिश्र और प्रशांत झा भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। दीप प्रज्ज्वलन के बाद सभी अतिथियों का विभाग द्वारा शॉल, पुष्प गुच्छ तथा स्मृति चिह्न भेंट कर विधिवत स्वागत किया गया।

उपायुक्त अनन्य मित्तल ने अपने संबोधन में पत्र सूचना कार्यालय द्वारा जिले में वार्तालाप कार्यक्रम आयोजित करने की पहल की सराहना की। उन्होंने जिला में चलाया जा रहे केंद्र सरकार द्वारा प्रमुख योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया एवं यह जानकारी दी कि कृषि एवं मत्स्य पालन के क्षेत्र में चाइबासा जिले में काफी सराहनीय कार्य हुआ है।

सभी अतिथियों का पीआइबी की तरफ से स्वागत करते हुए पत्र सूचना कार्यालय रांची के अपर महानिदेशक अखिल कुमार मिश्रा ने बताया कि वार्तालाप के आयोजन का मकसद आम और सहज भाषा में जिलों में जाकर मीडिया से रूबरू होना है। तथा विकास से जुड़े विभिन्न आयामों पर खुले मंच पर द्विपक्षीय चर्चा करना है। वहीं पत्रकारों से रूबरू होते हुए वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री बलबीर दत्त ने पूर्व कालीक एवं आज की मीडिया के बीच एक तुलनात्मक विवरण रखा और ग्रामीण पत्रकारिता का भारत जैसे कृषि प्रधान देश में और अधिक मजबूत पक्ष होने का समर्थन किया।

हिंदुस्तान अखबार से जुड़े वरिष्ठ पत्रकार चंदन मिश्र ने जिला से आये हुए पत्रकारों के सवालों को लिया एवं उनके द्वारा जिले में रिर्पोटिंग के दौरान होने वाली दिक्कतों पर खुलकर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे अंचल तथा जिला स्तर पर होने वाली पत्रकारिता भारत में असली खबरों का तथा विकास से जुड़ी खबरों का प्रथम स्तंभ हैं। इंटरनेट तथा सोशल मीडिया के आ जाने के बाद खबरों के क्षेत्र में आये आमूलचूल परिवर्तन पर भी प्रकाश डाला।

आजाद सिपाही से आए हुए वरिष्ट पत्रकार प्रशांत झा ने वोटिंग में नयी तकनीकों के समागम से हुए क्रांति के ऊपर विशेष चर्चा की और उन्होंने बताया कि कैसे किसी खबर के प्रति अपना नजरिया बदलने से ही हम उसे पॉजिटिव या नेगेटिव स्टोरी में बदल सकते हैं। उन्होंने कहा कि विकास से जुड़ी योजनाओं का एक सतत दौर होता है इसलिए हमें उससे जुड़े पॉजिटिव पक्ष को उजागर करने का प्रयास करना चाहिए। पूरे वार्तालाप कार्यशाला को तीन सत्रों में रखा गया था । जिसमें मीडिया के आयाम तथा जिले में चलायी जा रही प्रमुख विकास योजनाओं से हुए लाभ तथा उसके लाभुकों से मीडिया को रूबरू कराया गया। चूंकि 2023 को भारत सरकार विश्व मिलेट्स वर्ष के रूप में भी मना रही है, इसलिए मोटे अनाज से होने वाले फायदे के ऊपर भी इस कार्यशाला में चर्चा हुई।

डीपीआरओ चाइबासा इशा खंडेलवाल ने भी मीडिया से आग्रह किया कि वो इस चर्चा में होने वाले सुझाव को अपनाने का प्रयास करें। कार्यशाला का सफल संचालन क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी गौरव पुष्कर तथा बीडीओ सदर, चाइबासा पारुल सिंह द्वारा ओजस्वी पूर्ण तरीके से किया गया।

वार्तालाप के साथ ही सूचना प्रसारण मंत्रालय के रांची स्थित विभाग केंद्रीय संचार ब्यूरो द्वारा कार्यलय प्रमुख शाहिद रहमान के निर्देशन में एक 2-दिवसीय चित्र प्रदर्शनी का भी जिले में आयोजन किया जा रहा है जिसका उद्घाटन उपायुक्त अनन्य मित्तल ने किया।

इस आयोजन में जिले के करीब 60 पत्रकारों ने हिस्सा लिया और कार्यशाला की सार्थकता को सराहा। साथ ही पीआइबी से ऐसे और आयोजन करने का आग्रह किया।

कार्यशाला के समापन पर धन्यवाद ज्ञापन करते हुए पीआइबी के कार्यालय प्रमुख ओंकार नाथ पांडेय ने सभी पक्षों को बेहतर तालमेल और सहयोग हेतु किये गये प्रयासों को सराहा।

आजाद सिपाही
188100 Subscribers
झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch Time (HR) 11 Lakh+
YouTube Channel
Subscribe NOW
No 1 Channel

आजाद सिपाही
रांची, बुधवार, 18 जनवरी, 2023
www.azadsipahi.in

झारखंड में नयी नियोजन नीति जल्द

रांची। हाइकोर्ट में झटके के बाद नियोजन नीति 2021 में संशोधन की कवायद तेजी से चल रही है। इसकी फाइलें झारखंड के सरकारी दफ्तरों में दौड़नी शुरू हो गयी हैं और उम्मीद की जा रही है एक से डेढ़ महीने के अंदर संशोधित नियोजन नीति सामने आ जायेगी। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन विधानसभा में भरोसा दिला चुके हैं कि सरकार युवाओं की मांग और इच्छा के अनुसार ही नियोजन नीति लायेगी।

क्या हटेगा, क्या जुड़ेगा?

आइये, जानते हैं कि नयी नीति में किन महत्वपूर्ण प्रावधानों को शामिल किया जायेगा और 2021 में लायी गयी नीति में से कौन से प्रावधान हटाये जायेंगे।

1. हिंदी भी क्षेत्रीय भाषा मानी जायेगी: 2021 की नीति में क्षेत्रीय भाषा के पत्र के रूप में हिंदी को मान्यता नहीं दी गयी थी। इस बार इसे क्षेत्रीय भाषा के वैकल्पिक पत्र के रूप में रखा जायेगा। उर्दू पहले से ही क्षेत्रीय भाषा की सूची में शामिल है, जो यथावत रहेगी।

2. झारखंड के ही शैक्षणिक संस्थानों से 10वीं और 12वीं परीक्षा उत्तीर्ण होने की बाध्यता को हटाया जायेगा।

3. परीक्षाओं में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता देने के लिए स्थानीय रीति-रिवाज, परंपरा की जानकारी की शर्त नयी नीति में लागू रहेगी। इसका स्वरूप क्या होगा, इस पर मंथन चल रहा है।

फिर से दूसरे राज्यों की पॉलिसी का हो रहा अध्ययन

दूसरे राज्यों की भी नीति का अध्ययन कराया जा रहा है। छत्तीसगढ़, राजस्थान, ओड़िशा आदि राज्यों की नियमावली को फिर से देखा जा रहा है। यह प्रयास हो रहा है कि एक माह के अंदर नयी नियोजन नीति तैयार कर ली जाये। जिस पर कैबिनेट की स्वीकृति भी ली जायेगी। नयी नीति बनने के बाद नये सिरे से कर्मचारी चयन आयोग नियुक्ति के लिए विज्ञापन जारी करेगा।

क्यों खारिज हुई 2021 की नीति

दरअसल, राज्य सरकार ने 2021 की नियोजन नीति में यह प्रावधान किया था कि सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए किसी भी नियुक्ति प्रक्रिया में शामिल होने के लिए उनका झारखंड से ही मैट्रिक और इंटर पास होना अनिवार्य होगा। वहीं, यह नियम आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों पर लागू नहीं किया गया था। उन्हें इससे छूट दी गयी थी। पूरा मामला हाइकोर्ट गया था, जिसके बाद पूरी सुनवाई के बाद इसे दिसंबर माह में ही हाइकोर्ट ने रद कर दिया था।

आइआइएम के हॉस्टल में फंदे से छात्र का झूलता शव मिला

दोनों हाथ बंधे होने के कारण हत्या की व्यक्त की जा रही आशंका

आजाद सिपाही संवाददाता

पिस्कानगड़ी। नगड़ी थाना क्षेत्र स्थित आइआइएम कालेज के हॉस्टल में पंखा से लटका हुआ एक छात्र का शव पुलिस ने मंगलवार को बरामद किया। छात्र के दोनों हाथ बंधे हुए थे। छात्र का रूम आइआइएम कैंपस में पांचवें तल्ले पर 505 पर स्थित है। युवक की पहचान शिवम पांडेय (22) के रूप में हुई है। वह उत्तर प्रदेश के बनारस का रहने वाला है। छात्र यहीं सेकेंड इयर में पढ़ता था और कैंपस में ही हास्टल में रहता था। बताया जाता है कि सोमवार रात साढ़े 11 बजे शिवम के दोस्तों ने उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया पर अंदर से कुछ आवाज नहीं आयी और न ही उसने दरवाजा खोला। जब रोशनदान से उसके कमरे में दोस्तों ने झांका तो देखा उसका शव पंखे से लटका हुआ है, तब खिड़की का शीशा तोड़ कर छात्र अंदर गये और उसके शव को नीचे उतारा और नगड़ी पुलिस को इसकी सूचना दी। सूचना मिलते ही रात में ही नगड़ी पुलिस वहां पहुंची। सुबह में उसके रांची में रहने वाले रिश्तेदार को बुलाया गया और उनकी उपस्थिति में शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेजा गया। मौके पर डीएसपी प्रवीण कुमार सिंह भी पहुंचे और मामले की जानकारी ली। युवक के दोनों हाथ भी बंधे हुए थे। इससे युवक की हत्या की आशंका व्यक्त की जा रही है। इस संबंध में आइआइएम संस्थान द्वारा इसे आत्महत्या का मामला बताने का प्रयास किया जा रहा है। संस्थान पर जानकारी लेने पहुंचे पत्रकारों को भी अंदर जाने नहीं दिया गया और न ही इस संबंध में कोई जानकारी ही दी गयी। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। नगड़ी थाना प्रभारी ओमप्रकाश टोप्पो ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मामले में कुछ कहा जा सकता है।

शिवम पांडेय। फाइल फोटो

पिता ने कहा- बिना पुलिस की उपस्थिति के बॉडी कैसे उतारी, घटना की हो पूरी जांच

रांची। आइआइएम रांची के स्टूडेंट्स शिवम पांडेय की हॉस्टल में हुई मौत का मामला अब नया मोड़ ले रहा है। आइआइएम पहुंचे शिवम के पिता अखिलेश्वर पांडेय ने कहा कि यह साजिश लग रही है। मैं किसी पर आरोप नहीं लगा रहा मगर इस घटना की जांच होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिवम की पर्सनालिटी ऐसी नहीं थी कि वो डिप्रेशन में जाये। हमारी हर दिन बात होती थी। वह हंसमुख लड़का था। ऐसे में अचानक से यह कह देना कि शिवम नहीं रहे, संदेह पैदा करता है। पिता ने कहा कि संस्थान के मैनेजमेंट ने बॉडी को उतारा। ऐसा बताया गया कि मेडिकल जांच के लिए उतारा गया, लेकिन इसकी सूचना पुलिस को क्यों नहीं दी गयी। पुलिस की उपस्थिति के बिना बॉडी कैसे उतारी गयी।

बीटेक के बाद मैनेजमेंट की ओर आया था

पिता अखिलेश्वर पांडेय ने बताया कि मुझे आइआइएम मैनेजमेंट की ओर से रात के 10.06 बजे के करीब फोन पर बताया गया कि शिवम नहीं रहे। उन्होंने मुझे बताया कि शिवम ने सुसाइड कर लिया है। शिवम ने कंप्यूटर इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, उसके बाद मैनेजमेंट को चुना था। उन्होंने बताया कि ऐसा कोई दिन नहीं होता था, जब हमारी बात नहीं होती है। यूपी में नया घर बन रहा है, उसके बारे में भी अक्सर हमारी बात होती थी। ऐसे में वह सुसाइड कर लेगा, यह भरोसा नहीं लग रहा।

क्या कहती है पुलिस

रांची ग्रामीण एसपी नौशाद आलम के मुताबिक शिवम की उम्र लगभग 22 साल है। पुलिस को प्रबंधन की ओर से रात साढ़े ग्यारह बजे सूचित किया गया। इसके बाद मौके पर पुलिस पहुंची और जांच में जुट गयी। हॉस्टल का वार्डन सहित अन्य स्टाफ और स्टूडेंट्स से पूछताछ की गयी है। पुलिस के बयान के मुताबिक डिनर के वक्त कुछ स्टूडेंट्स ने बताया कि हॉस्टल का कमरा नंबर 505 रेस्पांड नहीं कर रहा है। इसके बाद वहां स्टाफ पहुंचे। कमरे के बाहर लगे शीशे से देखा तो शिवम पंखे से लटका हुआ था। चूंकि कमरा अंदर से बंद था तो संस्थान के लोगों ने ही कमरा खोला और शिवम को बचाने की नीयत से उतरा।

चर्च कांप्लेक्स के इंप्रेशन गिफ्ट शॉप में लगी आग

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। चर्च कांप्लेक्स स्थित कावेरी रेस्टोरेंट्स के ऊपर इंप्रेशन गिफ्ट शॉप में आग लगी गयी। दुकान में आग लगते ही आसपास के लोग बुझाने में जुट गये। हालांकि, आग लगने के कारणों का फिलहाल पता नहीं चला है। आग लगने की जानकारी मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम पहुंची और आग पर काबू पा लिया गया।

एचइसी संयुक्त संघर्ष मोर्चा ने सांसद को ज्ञापन सौंपा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। एचइसी को बचाने की मांग पर मंगलवार को एचइसी संयुक्त संघर्ष मोर्चा के पदाधिकारी सांसद प्रतिनिधि विनय जयसवाल के नेतृत्व में सांसद संजय सेठ से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। एचइसी के वर्तमान स्थिति पर विस्तार से चर्चा किया, जिसमें मूल रूप से एचइसी को सुचारू रूप से चलाने के लिए एवं 14 माह का बकाया वेतन को लेकर बात रखी गयी। इसमें यूनियनों ने बारी-बारी से अपनी बातों को सांसद के समक्ष रखा और केंद्र से सहयोग की मांग किया, वहीं सांसद संजय सेठ ने कहा कि संयुक्त मोर्चा को पूरा सहयोग करेंगे। भारी उद्योग मंत्री से फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में समय लेकर सभी यूनियनों से दो-दो प्रतिनिधि के अलावा अधिकारियों से दो प्रतिनिधि के साथ बैठक करवाने की बात कही।

मौके पर उपस्थित हटिया लोक मंच रामकुमार नायक, एचइसी मजदूर संघ से जीतू लोहरा, हटिया प्रोजेक्ट वर्कर्स यूनियन सीके सिंह, एचइसी श्रमिक संघ से शनि सिंह, एचइसी लि. म. क. स. कृष्ण मोहन सिंह, हटिया म. यू. हरे राम रजवार, हटिया कामगार यूनियन अर्जुन राम, जनता मजदूर यूनियन एस जे मुखर्जी, साथ ही साथ हरेंद्र यादव, विमल महली, जितेंद्र सिंह विकास तिवारी, रमा शंकर प्रसाद, सुनील पांडेय, खुर्शीद आलम, मनीष कुमार सहित 250 से अधिक कर्मचारी शामिल हुए।

खतियान आधारित स्थानीय नीति हेमंत सरकार का पॉलिटिकल स्टंट : जदयू

झारखंड के प्रभारी डॉ अशोक चौधरी ने पार्टी पदाधिकारियों, जिला अध्यक्षों के साथ की बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जनता दल यूनाइटेड (जदयू) ने 1932 के खतियान पर हेमंत सोरेन सरकार के स्टेप को महज पॉलिटिकल स्टंट करार दिया है। राजकीय गेस्ट हाउस, मोराबादी में मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बिहार सरकार में मंत्री और झारखंड के प्रभारी डॉ अशोक चौधरी ने कहा कि झारखंड सरकार 1932 के खतियान पर जो कुछ कर रही है। वह सतही है। केवल पॉलिटिकल स्टंट है। हर दल अपने वोटर के हिसाब से कुछ योजनाएं बनाता है। 1932 के खतियान को विधानसभा में लाकर फिर इसे केंद्र के पास उसने भेजा है। पर केंद्र-राज्य के जगजाहिर संबंधों को देखते इसे कानून का रूप नहीं मिल सकेगा। यह संदिग्ध ही रहेगा। ऐसे में खतियान यात्रा भी बेमतलब की है। प्रेस वार्ता के दौरान प्रदेश अध्यक्ष और सांसद खीरू महतो, पूर्व मंत्री सुधा चौधरी, गौतम सागर राणा समेत अन्य नेता मौजूद थे। इससे पूर्व रांची के पूर्व सांसद रामटहल चौधरी ने अशोक चौधरी से भेंट कर शुभकामनाएं दी।

6 माह में दुरुस्त होगा संगठन

अशोक चौधरी ने कहा कि 2019 के विधानसभा चुनाव में 40 से अधिक सीटों पर चुनाव जदयू ने लड़ा था, पर जनता से अपेक्षित भरोसा नहीं मिल सका। पार्टी का स्वरूप संतोषजनक नहीं रहने के कारण ऐसा हुआ, अब संगठन को दुरुस्त किया जा रहा है। खीरू महतो के नेतृत्व में पार्टी अगले 6 माह में नये स्वरूप और कलेवर में दिखेगी। पुराने नेताओं से संपर्क साधा जा रहा है आने वाले दिनों में कई नेता पार्टी में दिखेंगे। मंगलवार को पार्टी पदाधिकारियों, जिला अध्यक्षों के साथ हुई बैठक में इस पर गंभीर चर्चा हुई है। इसके लिए सभी प्रमंडलों में रैलियां होंगी। झारखंड में 2024 के विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव में अकेले या गठबंधन के साथ भागीदारी के संबंध में पार्टी अध्यक्ष और शीर्ष नेता फैसला लेंगे।

पीएम की रेस में नीतीश नहीं

एक सवाल के जवाब में डॉ अशोक चौधरी ने कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कभी भी यह नहीं कहा कि वे पीएम बनना चाहते हैं। उन्होंने एक बड़े महागठबंधन तैयार करने की बात की थी। कोई भी गठबंधन हो, उसमें कांग्रेस को लाना ही होगा इसके लिए राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के बाद उनसे और कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी से भी नीतीश मिलेंगे। बिहार में तेजस्वी के नेतृत्व में अगला चुनाव के मसले पर कहा कि अभी कुछ कहना ठीक नहीं।

केबलिंग के नाम पर शहर में किये गये सभी गड्ढों को जल्द भरें : डिप्टी मेयर

एक सप्ताह के अंदर खंभों पर अवैध रूप से लगे तारों को हटायें

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। डिप्टी मेयर संजीव विजयवर्गीय ने मंगलवार को विद्युत आपूर्ति विभाग और विभिन्न निजी कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक की। डिप्टी मेयर ने कहा कि शहर में विद्युत आपूर्ति विभाग की ओर से चलाये जा रहे अंडर ग्राउंड केबलिंग की वजह से सड़क में गड्ढे किये गये हैं। काम पूरा होने के बाद भी गड्ढा को नहीं भरा गया है। उन्होंने कहा कि शहर में जितने भी अंडर ग्राउंड केबलिंग की वजह गड्ढे किये गये हैं, उसे जल्द से जल्द भरा जाये।

उप महापौर ने कहा कि केबलिंग का कार्य करने से पहले उक्त स्थल के चारों तरफ बैरिकेडिंग करा कर कंपनी का बोर्ड लगाया जाये, जिससे अन्य विभागों सहित स्थानीय लोगों को मालूम हो सके कि किस कंपनी के द्वारा यह कार्य कराया जा रहा है। इससे किसी भी प्रकार की समस्या होने पर कार्य कराने वाली कंपनी से सीधा संपर्क स्थापित किया जा सके। साथ ही संबंधित सभी कंपनियों को सात दिन के अंदर कार्य करा कर गड्ढा ढंकते हुए पूर्व की स्थिति में किया जाना और जब तक गड्ढा को ना भरा जाये, तब तक बैरिकेडिंग रखने को सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। साथ ही एक सप्ताह के अंदर जिनके भी अवैध रूप से बिजली के पोलों पर केबलिंग का कार्य किया गया है। वह सभी अपने केबल को हटा लें अन्यथा मजबूरन उनके तारों को हटा दिया जायेगा।

उक्त समीक्षा बैठक में कुंवर सिंह पाहन-अपर नगर आयुक्त रांची नगर निगम, विद्युत कार्यपालक अभियंता चंद्र मोहन शर्मा, वीरेंद्र किस्कू, हिमांशू कुमार, गौरव कुमार, राजेश कुमार मंडल एवं जियो के प्रतिनिधि सुमित कुमार मौजूद रहे।

अब मंत्रालय में दीदियों के हाथों से बने भोजन का स्वाद लेंगे अधिकारी

रांची। अब झारखंड मंत्रालय में दीदियों के हाथों से बना भोजन का स्वाद अधिकारी लेंगे। राज्य सरकार के निर्देश पर एफएफपी बिल्डिंग, धुर्वा स्थित मंत्रालय परिसर में दीदी किचन कैंटीन खोले जाने की तैयारी है। भवन निर्माण विभाग, झारखंड (सर्किल-2, रांची) ने इस बिल्डिंग में कैंटीन के निर्माण की कवायद शुरू की है। इस कैंटीन के निर्माण पर 54 लाख 9 हजार रुपये से अधिक राशि के खर्च होने का अनुमान है। भवन निर्माण विभाग केवल सिविल वर्क का कार्य करायेगा। इसके संचालन की प्रक्रिया समाज कल्याण विभाग, झारखंड के स्तर से ही करायी जायेगी। भवन निर्माण विभाग दीदी किचन कैंटीन के निर्माण के लिए टेंडर जारी करेगा। वेबसाइट पर 21 जनवरी को इसे जारी किया जायेगा। एक सप्ताह के भीतर 27 जनवरी तक आवेदन जमा करने का मौका योग्य एजेंसियों को मिलेगा। इसके बाद 28 जनवरी को इसे खोला जायेगा। जिसे भी इसका कार्य आवंटन होगा, उसे चार महीने के भीतर सभी सिविल वर्क पूरे करने होंगे। बताया कि समाज कल्याण विभाग ने दीदी किचन कैंटीन के लिए रुचि दिखायी है। उसकी पहल के बाद ही भवन निर्माण ने इसके निर्माण के लिए कदम उठाया है। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद एसएचजी ग्रुप से जुड़ी महिलाओं को इसके संचालन का मौका दिये जाने की बात कही गयी है। इसका मूल उद्देश्य महिला सशक्तिकरण के प्रयास को आगे बढ़ाना है।

शिव बारात 18 फरवरी को

रांची (आजाद सिपाही)। श्री श्री शिव बारात आयोजन समिति 18 फरवरी को महाशिवरात्रि के दिन रातू रोड से शिव बारात निकालेगी। अध्यक्ष रमेश सिंह ने कहा कि इस बार शिव बारात में कई मनोहारी और जीवंत झांकियों के अलावा मध्यप्रदेश की ताशा पार्टी भी शामिल होगी। बैठक में नये सत्र के लिए कमेटी का गठन किया गया। रमेश सिंह सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये, जबकि सांसद दीपक प्रकाश को समिति का मुख्य संरक्षक मनोनीत किया गया।

आदिवासी बचाओ महारैली 5 मार्च को

रांची (आजाद सिपाही)। आरक्षण रोस्टर का पालन किये बिना ही अनुबंध कर्मियों के स्थायीकरण के विरोध में 5 मार्च को मोरहाबादी मैदान में आदिवासी बचाओ महारैली आयोजित की जायेगी। इसे लेकर पूर्व विधायक देवकुमार धान की अध्यक्षता में आदिवासी समन्वय समिति की बैठक हुई। इसमें विशेष रणनीति बनायी गयी। कुरमी, कुड़मी महतो द्वारा खुद को आदिवासी की सूची में शामिल करने की मांग, आदिवासियों के लिए जनगणना प्रपत्र में अलग धर्म कॉलम की मांग, आदिवासियों के मारंगबुरू पारसनाथ धार्मिक स्थल को मुक्त कराने सहित अन्य पर चर्चा हुई।

छात्राओं ने वरदान हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर का भ्रमण किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राजकीय बालिका इंटर उच्च विद्यालय बरियातू रांची की छात्राओं ने औद्योगिक भ्रमण में भाग लिया।

शैक्षणिक भ्रमण छात्राओं ने वरदान हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर काठीटांड़ रातू रोड रांची में किया। व्यवसायिक विषय हेल्थ एंड केयर की कुल 45 छात्राओं ने हॉस्पिटल के कार्यप्रणाली को जाना। साथ में विद्यालय के वरीय शिक्षक शशि प्रकाश, मारग्रेट एक्का, मनीषा मार्ग्रेट तिर्की तथा व्यावसायिक प्रशिक्षक आकाश कुमार पांडेय एवं बंटी कुमार भी उपस्थित थे। इस अवसर पर हॉस्पिटल की मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा कि इस तरह के भ्रमण से बच्चों का कौशल विकास होता है तथा उनमें आगे बढ़ने का हौसला मिलता है। इसके उपरांत छात्रों ने हॉस्पिटल के विभिन्न विभागों का भ्रमण किया और उनके कार्य प्रणाली को समझा। भ्रमण के छात्रों को समस्त टेस्टिंग व गुणवत्ता मानकों के बारे में बताया गया।

श्री राम कथा का तीसरा दिन : अंधकार में कोई प्रकाश भर कर दे दे, उसी का नाम श्री राम है

जिन्हें सुनने की शक्ति नहीं, उन्हें बोलना भी नहीं चाहिए : राजन महाराज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रांची के हरमू मैदान में आयोजित श्री राम कथा के तीसरे दिन राजन महाराज ने कहा कि जिन्हें सुनने की शक्ति नहीं उन्हें बोलना भी नहीं चाहिए। मंदिर के भगवान को पूजिये या ना पूजिये लेकिन घर के भगवान माता-पिता की अवश्य पूजा कीजिए उनका सम्मान कीजिए। उन्होंने राम के नाम को परिभाषित कर बताया जीवन में अंधकार आ जाये उस अंधकार में कोई प्रकाश भरकर दे दे उसी का नाम श्री राम है। राजन महाराज ने प्रभु श्री राम जन्म और कैकेई सुमित्रा के प्रसंगों पर भी चर्चा की। इस अवसर पर भजनों से पूरे पंडाल के श्रोतागण झूम उठे, नाचने गाने लगे मानो ऐसा लग रहा था। अयोध्या नहीं बल्कि रांची के हरमू मैदान में भगवान आ रहे हों। भगवान का दर्शन करने के लिए लोगों में भारी उत्साह उमंग देखने को मिला। कथा से पहले मुख्य यजमान प्रेमचंद श्रीवास्तव, सपत्नी उर्मिला श्रीवास्तव, श्रवण अग्रवाल सपत्नी, विजय हरलालका, संतोष सरावगी सपत्नी ने पूरे परिवार के संग व्यास पूजन, गुरु पूजन भजन व माल्यार्पण कर श्री राजन महाराज का अभिनंदन और स्वागत किया। इसके पूर्व मंच पर पार्षद अरुण झा, पूर्व पार्षद सुनीता देवी, निरंजन शर्मा, भारती चितलांगिया, संदीप वर्मा, सोनू भारद्वाज सहित कई लोगों ने महाराज श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। आयोजन समिति के प्रवक्ता प्रमोद सारस्वत ने बताया कि बुधवार चौथे दिन की कथा धनुष यज्ञ श्री सीताराम विवाह महोत्सव के प्रसंग का सुंदर वर्णन सुनेंगे। कथा स्थल में मुख्य संयोजक प्रकाश धेलिया, संयोजक मनीष साहू, प्रमोद सारस्वत, बसंत शर्मा, मुकेश काबरा, सजन पडिया, दीपक पाठक, राजू यादव आशुतोष दिवेदी सहित काफी संख्या में सदस्य अपनी सेवा दे रहे हैं। आरती के उपरांत लोगों के बीच प्रसाद का वितरण किया गया।

महत्वपूर्ण न्यूज

इडी ने मेसर्स कौशल्या निर्माण प्राइवेट लिमिटेड और कौशल्या टाउनशिप प्राइवेट लिमिटेड की 90.38 लाख रुपये की संपत्ति को किया अटैच

रांची (आजाद सिपाही)। इडी ने मंगलवार को बड़ी कार्रवाई की है। इडी की टीम अलकतरा घोटाले मामले में जांच कर रही है। इडी की टीम ने मेसर्स कौशल्या निर्माण प्राइवेट लिमिटेड और कौशल्या टाउनशिप प्राइवेट लिमिटेड की 90 लाख 38 हजार की संपत्ति को अटैच किया है। इडी की रांची स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने सीबीआइ की रांची स्थित आर्थिक अपराध शाखा में दर्ज अलकतरा घोटाले के केस के आधार पर 1.08 करोड़ रुपये के मनी लांड्रिंग मामले में केस दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया था। 2021 में इसी सिलसिले में इडी ने मेसर्स कौशल्या इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड के खिलाफ कार्रवाई करते हुए बंगाल के झाड़ग्राम में कौशल्या हेरिटेज होटल को जब्त किया था।

सरला बिरला पब्लिक स्कूल के छात्र को इंस्पायर मानक अवार्ड 2022-23

रांची (आजाद सिपाही)। सरला बिरला के जयवर्धन जायसवाल ने इंस्पायर मानक अवार्ड 2022-23 में 10000 रुपये प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। जिससे वह अपनी योजना को एक साइंस प्रोजेक्ट में परिवर्तित कर सकें। जिसको वह जिला शिक्षा प्राधिकरण के जिला स्तरीय एग्जिबिशन एंड प्रोजेक्ट कंपटीशन (डीएल. पीसीएस) में इसका प्रदर्शन करेगा। विद्यालय के कार्मिक एवं प्रशासनिक प्रमुख डॉ प्रदीप वर्मा ने विद्यार्थी की योजना की प्रशंसा की। प्राचार्या परमजीत कौर ने कहा कि विद्यालय में एनईपी-2020 के अनुरूप छात्रों को इनोवेटिव प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए वातावरण प्रदान किया जाता है। उन्होंने कहा कि स्कूल ने वैज्ञानिक कौशल विकसित करने के लिए एक स्कूल इनोवेशन काउंसिल भी बनायी है। उन्होंने छात्र को बधाई दी और उसके भविष्य के लिए उसे शुभकामनाएं दीं।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर धुर्वा में साइबर सुरक्षा एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

रांची (आजाद सिपाही)। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर धुर्वा रांची में मंगलवार को छात्र/छात्राओं हेतु साइबर सुरक्षा एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यशोधरा, पुलिस उपाधीक्षक, साइबर प्रकोष्ठ, रांची व प्रवीण कुमार, थाना प्रभारी धुर्वा ने छात्रों व शिक्षकों को सोशल मीडिया एवं आनलाइन फाइनेंशियल फ्राड संबंधित अपराध क्या हैं और इनसे सुरक्षा के क्या उपाय हैं, विषय पर विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यक्रम में विद्यालय के मंत्री श्री अखिलेश्वर नाथ मिश्र, सदस्य अमरकांत झा, प्राचार्य डा संध्या सिंह, सब इंसपेक्टर धुर्वा थाना सुभाष कुमार महतो और प्रभात रंजन उपस्थित रहे।

मोबाइल दुकान में सेंधमारी कर चोरों ने लाखों रुपये के उड़ाये सामान

रांची (आजाद सिपाही)। न्यू मार्केट हटिया चौक में सोमवार देर रात अज्ञात चोरों ने सेंधमारी कर एक मोबाइल दुकान में 47 हजार नगदी सहित लाखों रुपये के मोबाइल पर हाथ साफ कर दिया। मोबाइल फोन की कीमत करीब 25 लाख रुपये बतायी जा रही है। दीवार की तरफ से सेंधमारी कर चोरों ने अंदर प्रवेश कर दुकान में चोरी को अंजाम दिया है। अपर हटिया निवासी शुभम गुप्ता मंगलवार को जब दुकान पहुंचे तो देखा कि पैसों का गल्ला खुला था तो वहीं मोबाइल फोन सेट गायब है, मामले की सूचना पर जगरनाथपुर थाना प्रभारी पुलिस मौके पर पहुंचकर छानबीन में जुट गयी।

कोरोपुट में जनजातीय पुस्तकालय, संग्रहालय और शोध केंद्र खुलेगा

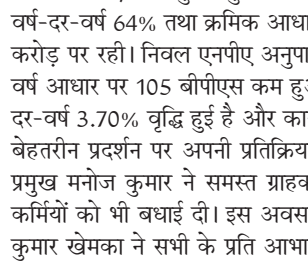

रांची (आजाद सिपाही)। ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय कोरापुट के कुलपति डॉ चक्रधर त्रिपाठी ने राष्ट्रपति भवन में महामहिम द्रौपदी से मिले। उन्होंने कोरापुट में विश्व स्तरीय जनजातीय पुस्तकालय, पुरातत्व संग्रहालय और शोध संस्थान का खोलने का प्रस्ताव दिया। इस प्रसंग में महामहिम से सकारात्मक बातचीत हुई और महामहिम ने कुलपति के इस शैक्षणिक कदम की सराहनीय की।

बैंक ऑफ इंडिया को वित्तीय वर्ष 2023 की तीसरी तिमाही में 1,151 करोड़ का शुद्ध लाभ

रांची (आजाद सिपाही)। सार्वजनिक क्षेत्र का प्रमुख बैंक, बैंक ऑफ इंडिया का वित्तीय वर्ष 2023 की तीसरी तिमाही हेतु शुद्ध लाभ, क्रमिक आधार पर 20% वृद्धि और वर्ष-दर-वर्ष 12% वृद्धि के साथ सुधरकर 1,151 करोड़ हो गया। परिचालन लाभ, वर्ष-दर-वर्ष 74% वृद्धि तथा क्रमिक आधार पर 8% वृद्धि के साथ सुधरकर 3,652 करोड़ हो गया। आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) सुधरकर 0.55% पर रहा। निवल ब्याज मार्जिन (एनआइएम) 3.28% पर रहा, इसमें वर्ष-दर-वर्ग 101 वीपीएस तथा क्रमिक आधार पर 24 बीपीएस का सुधार हुआ है। निवल ब्याज आय (एनआइआइ) वर्ष-दर-वर्ष 64% तथा क्रमिक आधार पर 10% वृद्धि के साथ 5,596 करोड़ पर रही। निवल एनपीए अनुपात 1.61% पर रहा, यह वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 105 बीपीएस कम हुआ है। कासा जमाराशियों में वर्ष-दर-वर्ष 3.70% वृद्धि हुई है और कासा प्रतिशत 44.56% है। बैंक के बेहतरीन प्रदर्शन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए झारखंड राज्य प्रमुख मनोज कुमार ने समस्त ग्राहकों का आभार चताया और सभी कर्मियों को भी बधाई दी। इस अवसर पर रांची अंचल प्रमुख संजय कुमार खेमका ने सभी के प्रति आभार एंव हर्ष प्रकट किया।

शहीदों की जगह हमारे दिल में है उनके रास्ते पर चलते रहेंगे : बंधु

अमर स्वतंत्रता सेनानी पांडेय गणपत राय के आदर्शों पर चलकर ही झारखंड के विकास और संतुलित समाज का निर्माण संभव : डॉ प्रणव कुमार बब्बू

रांची रिवोल्ट जनमंच ने अमर शहीद स्वतंत्रता सेनानी पांडेय गणपत राय की जयंती पर आदर्शों पर चलने का लिया संकल्प

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सामाजिक वैचारिक मंच रांची रिवोल्ट जनमंच ने पांडेय गणपत राय की 214 वीं जयंती मनायी। मंगलवार को रांची के शहीद स्थल, जिला स्कूल के समीप कार्यक्रम आयोजित की गयी। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि कांग्रेस प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा कि झारखंड की धरती वीर सेनानियों की है। देश के प्रति समर्पित प्रत्येक शहीद की जगह हम सभी के दिलों में है। उन्हीं के बताये हुए रास्ते पर हम हमेशा से चलते रहे हैं और चलते रहेंगे। श्री तिर्की ने कहा कि देश की आजादी में पांडेय गणपत राय का अतुलनीय एवं अद्भुत योगदान है। उन्होंने न केवल अपना सर्वश्रेष्ठ बलिदान दिया बल्कि सभी को इसके लिए प्रेरित भी किया। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार आम लोगों के प्रति पूरी तरीके से समर्पित है और खुशी इस बात की भी है कि शहीदों के बताये मार्ग पर सरकार निरंतर गतिशील है। इस अवसर पर अपने संबोधन में रांची रिवोल्ट जनमंच के संयोजक डॉ प्रणव कुमार बब्बू ने कहा कि रांची रिवोल्ट जनमंच का यह प्रयास है कि शहीदों के बताये रास्ते को सकारात्मक रूप में जमीनी स्तर पर कार्यान्वित किया जाये और आम लोगों की विचारधारा को उसके अनुरूप बनाया जाये ताकि सभी का संतुलित और तेज गति से विकास हो। झारखंड आंदोलनकारी मोर्चा के केंद्रीय संयोजक प्रवीण प्रभाकर ने कहा कि मौलिक रूप से झारखण्ड के सभी लोगों के हृदय में देशहित सबसे ऊपर रहा है। जयंती समारोह में रांची रिवोल्ट जनमंच के जय प्रकाश गुप्ता, अभिषेक कुमार मिंकू, वंदना उपाध्याय, शेखर सहाय, राजीव रंजन सिन्हा, मधु सिंह, सुजाता भगत, सोनी पांडेय, विजय दत्त पिंटू, संतोष दीपक, सूर्य विकाश मिंज, सुनील टोप्पो, सूरज कुमार, जयदीप सहित अन्य मौजूद थे।

'मेधा दही खाओ-ईनाम पाओ' प्रतियोगिता में 190 प्रतिभागी शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड राज्य दुग्ध उत्पादक सहकारी महासंघ (जेएमएफ) जो मेधा ब्रांड के नाम से प्रख्यात है, द्वारा मंगलवार को मेधा डेयरी प्लांट, होटवार, रांची में मेधा दही खाओ-ईनाम पाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें 190 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और तीन मिनट में दही खाकर तीन वर्गों (महिला, पुरुष एवं वरिष्ठ नागरिक) में पुरस्कार प्राप्त किये। पुरस्कार पाने वालों के नाम महिला वर्ग : प्रथम-दही साम्राज्ञी पूनम देवी निवासी बूटीमोर, द्वितीय-दही मंजूसा देवी निवासी कोकर, रांची एवं तृतीय-दही वीरा प्रमिला देवी निवासी टाटीसिलवे, पुरुष वर्ग : प्रथम-दही सम्राट संजय कुमार सिंह निवासी महिला बटालियन, द्वितीय-दही विनय सिंह निवासी बूटी मोड़, तृतीय-दही वीर, मनोज कुमार मिश्रा निवासी खादगढ़ा, वरिष्ठ नागरिक वर्ग : प्रथम-दही भूषण नीलकंठ झा निवासी करमटोली, द्वितीय-दही महाराज बीके सिंह, निवासी नमकुम, तृतीय-दही शौर्य कैलाश राम निवासी एचबी रोड, रांची हैं। महिला वर्ग में प्रथम विजेता पूनम देवी ने 1.80 किलो ग्राम दही, पुरुष वर्ग में प्रथम विजेता संजय कुमार सिंह ने 2.92 किलो ग्राम दही एवं वरिष्ठ नागरिक वर्ग में प्रथम विजेता नीलकंठ झा ने 2.52 किलो ग्राम दही का सेवन किया।

इस अवसर पर मेधा डेयरी के प्रबंध निदेशक सुधीर कुमार सिंह, महाप्रबंधक पवन कुमार मारवाह एवं जयदेव बिशवास, विपणन प्रमुख अमृतेश कुमार एवं अन्य उपस्थित थे।

इस अवसर पर (जेएमएफ) के प्रबंध निदेशक ने हमारी पुरानी खाने-पीने की संस्कृति को रेखांकित करते हुए कहा कि पुराने समय में गोनू झा की कहानी मशहूर थी कि पूरा पेट भरने के बाद भी वो कई किलो दही एवं मिठाई खा जाया करता था। प्रबंध निदेशक ने यह भी बताया कि दिन प्रति दिन मेधा दही की मांग बढ़ रही है।

इस प्रतियोगिता का उद्देश्य ग्राहकों में सहकारी डेयरियों द्वारा प्रदान किये जा रहे स्वच्छ एवं सेहतमंद उत्पादों का अधिक से अधिक मात्रा में उपयोग करने हेतु जागरूकता फैलाना है। मेधा दही विदेश से मंगाये गये उच्च गुणवत्ता पूर्ण कल्चर से जमाया जाता है। मेधा दही संक्रामण रहित है और इसे खाने से शरीर स्वस्थ रहता है।

अमृत कला महोत्सव में कलाकार सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अंतरराष्ट्रीय कला एवं संस्कृति फाउंडेशन, बैंगलोर एवं परफोर्मिंग एंड फाइन आर्ट्स विभाग, रांची विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से अमृत कला महोत्सव का आयोजन मंगलवार को रांची विश्वविद्यालय, रांची के आर्यभट्ट सभागार में किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में रांची विश्वविद्यालय, रांची के कुलगीत की प्रस्तुति की गयी। इसके बाद मुख्य अतिथि रांची विश्वविद्यालय, रांची के कुलपति प्रो (डॉ) अजीत कुमार सिन्हा, अंतरराष्ट्रीय कला एवं संस्कृति फाउंडेशन, बैंगलोर के निदेशक श्रीवत्स शांडिल्य, रांची विश्वविद्यालय, रांची के परीक्षा नियंत्रक डॉ आशिष कुमार झा, रांची विश्वविद्यालय, रांची के व्यावसायिक शिक्षा परिषद की उपनिदेशक डॉ स्मृति सिंह एवं स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन, राँची विश्वविद्यालय, रांची के निदेशक प्रो (डॉ) बीपी सिन्हा को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। कार्यक्रम को विधिवत शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथिगणों ने दीप प्रज्वलित कर किया। अमृत कला महोत्सव के अवसर पर परफोर्मिंग एंड फाइन आर्ट्स विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची की समन्वयक डॉ नियति कल्प ने अतिथियों के सम्मान में स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अंतरराष्ट्रीय कला एवं संस्कृति फाउंडेशन, बैंगलोर के निदेशक श्रीवत्स शांडिल ने अपने संबोधन में भारत की सांस्कृतिक विरासत को विभिन्न कला के माध्यम से जीवंत बनाये रखने पर बल दिया साथ ही सहयोग के लिए विश्वविद्यालय के प्रति आभार भी व्यक्त किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि का स्वागत अंतरराष्ट्रीय कला एवं संस्कृति फाउंडेशन, बैंगलोर के निदेशक श्रीवत्स शांडिल्य ने अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर किया।

मुख्य अतिथि कुलपति ने कहा कि झारखंड में प्रतिभाओ की कमी नहीं हैं, बस उसे निखारने की जरूरत है। इसी उद्देश्य से विश्वविद्यालय आनेवाले दिनों में अंतर्राष्ट्रीय ट्राइबल युथ फेस्टिवल का आयोजन करने जा रहा है जिसमें विभिन्न जगहों के ट्राइबल फूड एवं उनकी संस्कृतियों का प्रदर्शन किया जाएगा। साथ ही कई एम. ओ. यू. करने की भी योजना हैं। साथ ही अंतरराष्ट्रीय कला एवं संस्कृति फाउंडेशन,बैंगलोर के प्रति आभार भी जताया।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के द्वारा रचित रंगीत नया गाता हूँ की नृत्य के रूप में प्रस्तुति को दर्शकों ने खूब सराहा जिसको नृत्य निर्देशित कत्थक गुरु विपुल नायक ने किया। ओडिसी एकेडमी की तरफ से वंदे मातरम की नृत्यात्मक प्रस्तुति की गई जिसको निर्देशित सविता मिश्रा ने किया। इस नृत्य की सुंदर प्रस्तुति पर मुख्य अतिथि ने कलाकारों का पुष्प गुच्छ से सम्मानित किया।

कार्यक्रम के अंतिम प्रस्तुति के रूप में धायित्री कला केंद्र की तरफ से कत्थक नृत्य-जायोस्तुते की प्रस्तुति तीन ताल पर की गयी जिसे कला प्रेमियों द्वारा खूब सराहा गया। उसके बाद मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथिगणों के द्वारा कलाकारों का सम्मान किया गया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में परफोर्मिंग एंड फाइन आर्ट्स विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची के शिक्षक विपुल नायक, मनीष, एवं सुजीत कुमार का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का मंच संचालन राजश्री ने किया।

छात्र संघ चुनाव छात्र-छात्राओं का अधिकार है : अभिषेक झा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अखिल झारखंड छात्र संघ (आजसू) का प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के संयोजक अभिषेक झा के नेतृत्व में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के कुलपति से मिलकर उन्हें छात्र संघ चुनाव कराने के लिए ज्ञापन सौंपा। मौके पर अभिषेक झा ने कहा कि विगत पिछले 3 वर्षों से डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में छात्र संघ चुनाव ना हो पाना निंदनीय है, छात्र संघ चुनाव छात्र-छात्राओं का अधिकार है, इसके जरिए उन्हें अपना प्रतिनिधि चुन कर अपनी मांगों को मजबूती से विश्वविद्यालय प्रशासन के समक्ष रखने का अवसर मिलता है। छात्र संघ चुनाव को लेकर संवेदनशील ना होना साफ दर्शाता है कि विश्वविद्यालय प्रशासन छात्र संघ चुनाव नहीं कराना चाहती है। श्यामा प्रसाद के संयोजक अभिषेक झा ने कहा कि विधानसभा लोकसभा राज्यसभा नगर निकाय चुनाव पंचायत चुनाव सभी समय पर हो जाते हैं, लेकिन छात्र संघ चुनाव में हमेशा देरी होती है। अभिषेक झा ने साफ स्पष्ट शब्दों में श्यामाप्रसाद के कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य को कहा कि अगर छात्र संघ चुनाव की घोषणा अभिलंब नहीं की गई तो अखिल झारखंड छात्र संघ डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में होने वाले सीनेट का विरोध करेगा। वहीं मौके पर मौजूद कुलपति ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि किसी भी हालत में जल्द से जल्द चुनाव संपन्न कराया जायेगा। मौके पर जगत मुरारी, सचिन रंजन, रोहित सिन्हा, हिमांशु, रिशु, सूर्या, आर्यन, अशफाक, विवेक पांडे, सुमित, प्रणव गांगुली उपस्थित थे।

समापन समारोह में प्रो गोपाल पाठक ने सरला बिरला विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में क्रियान्वित कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा 16-17 जनवरी, को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, भोपाल मध्य प्रदेश में दो दिवसीय अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम संपन्न हुआ। इस राष्ट्रीय समागम में संस्थाओं की आपसी संबद्धता को बढ़ावा एवं पोषण, सतत विकास व मूल दक्षतायें, शोध एवं नवाचार, भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक विकास, पर्यावरण, नेतृत्व एवं प्रशासन तथा उच्च शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास के अंतर्गत वहनीय एवं सुलभ गुणात्मक शिक्षा तथा शिक्षा में लोकोपकार एवं सामाजिक जुड़ाव तथा उत्तरदायित्व जैसे विभिन्न विषयों पर देश के महत्वपूर्ण शिक्षाविदों एवं बुद्धिजीवियों ने न केवल विचार विमर्श किए बल्कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन के लिए रोडमैप भी तैयार किया। समागम में सरला बिरला विश्वविद्यालय रांची के कुलपति प्रोफेसर गोपाल पाठक ने सरला बिरला विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अभी तक क्रियान्वित कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते हुए कहा कि सरला बिरला विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग के सभी छात्रों के लिए संस्कृत को अनिवार्य रूप से लागू किया गया है तथा विश्वविद्यालय के सभी विभागों के छात्रों के लिए योग की एक क्लास अनिवार्य रूप से संचालित की जा रही है। उन्होंने समागम में सभी प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि सरला बिरला विश्वविद्यालय अपने छात्रों के हंड्रेड परसेंट अटेंडेंस पर फोकस कर रही है। उन्होंने विश्वविद्यालय में मल्टीडिसीप्लिनरी अप्रोच को लागू किए जाने तथा छात्रों के कैरक्टर बिल्डिंग की भी बात की जिससे राष्ट्र को स्किल के साथ-साथ चारित्रिक रूप से सक्षम योग्य नागरिक मिल सकें। उन्होंने कहा कि सरला बिरला विश्वविद्यालय ग्लोबल स्टैंडर्ड एजुकेशन देने के लिए विश्व प्रसिद्ध कैलिफोर्निया के बर्कले विश्वविद्यालय के साथ किये गये आपसी समझौते की भी चर्चा की। विदित हो कि विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम 2023 में बड़े पैमाने पर देश भर के सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों एवं राज्य के विश्वविद्यालयों तथा निजी विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलाधिपति, चेयरमैन , निदेशक, ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट के चेयरमैन, प्राचार्य प्राध्यापक, शिक्षाविदों आदि ने सहभागिता की।

श्री श्याम मंदिर में 33वां श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री श्याम मित्र मंडल की स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में मंगलवार को 33वां श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा पाठ का उत्सव का भव्य एवं मनोहारी आयोजन धूमधाम से संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंडल के उपमंत्री अनिल नारनोली ने अपने परिवार के साथ श्री हनुमान जी महाराज के दिव्य पावन अखंड ज्योति प्रज्वलित करके केसरिया पेड़ा गुड़ चना फल अर्पित किया। सुगंधित इत्र अर्पित किया। अनिल नारनोली ने चंदन वंदन करके श्रीरामचरितमानस ग्रंथ का पाठवाचककको का पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री हनुमान महाराज की जय जयकारों के बीच पाठ वाचक मनीष सारस्वत, ओम शर्मा व सहयोगी ने ढोलक गिटार झांझ कड़ताल के साथ श्री गणेश वंदना करके श्री हनुमान चालीसा का पाठ सुंदरकांड का संगीतमय पाठ प्रारंभ किया। श्री श्याम मित्र मंडल के महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने बताया कि पाठकों ने मंदिर में उपस्थित सैकड़ों भक्तों से सामूहिक रूप से पाठ करवाया। पाठ के मध्य में अनेक भजनों का गायन भी किया गया। श्री सुभाष रौनक पोद्दार ने घी श्रवण ढानढनिया ने चना प्रसाद राजेश सिंघानिया ने इत्र एवं एक श्री श्याम भक्त ने गिरीगोला सेवा श्रद्धा भाव से निवेदित की। ज्ञातव्य है कि श्री श्याम मित्र मंडल के स्वर्ण जयंती वर्ष पर हर शनिवार को श्री श्याम भंडार हर मंगलवार को श्री सुंदरकांड व श्री हनुमान चालीसा उत्सव का सफलतापूर्वक आयोजन होता आ रहा है। पाठ उत्सव के समापन के पहले सभी भक्तों ने खड़े होकर पुनः श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया।

कंचन वरण विराज सुबेसा कानन कुंडल कुंचित केसा के स्वर श्री श्याम मंदिर के साथ पूरा हरमू रोड गूंज उठा। भक्तजनों ने ताली बजाकर आस्था के साथ बैठकर अपनी मनोकामना प्रस्तुत की। महाआरती व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। श्री श्याम मित्र मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी, महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया, श्रवण ढानढनिया, अनिल नारनौली, रतन शर्मा, स्नेह पोद्दार, प्रदीप मोदी, रौनक पोद्दार, श्याम सुंदर जोशी, कमल लोहिया, आशीष डालमिया ने उपस्थित होकर व्यवस्था व प्रसाद वितरण में सहयोग किया। कल बाबा श्याम ग्यारस बुधवार को बाबा श्याम की एकादशी संकीर्तन रात्री 9.30 बजे से मन्दिर में होगा। शनिवार को 46 वां श्री श्याम भंडारा श्री श्याम मित्र मंडल के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में शनिवार 21 जनवरी को संध्या पांच बजे से 46वां श्री श्याम भंडारा होगा। मंडल के अध्यक्ष श्री सुरेश सरावगी ने सभी को आमंत्रित किया है।

रिमोट इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से जुड़े सवाल

चुनाव आयोग ने देश के तमाम राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के सामने रिमोट इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (आरवीएम) का प्रदर्शन किया। इसका मकसद देश में अपने गृह जिलों से दूर रहने वाले मतदाताओं को वहीं से वोट करने की सुविधा देना है। इसमें दो राय नहीं कि चुनाव आयोग की इस पहल का मकसद अच्छा है। चुनावों में मतदान का कम प्रतिशत देश में आदर्श लोकतंत्र की राह में किसी न किसी रूप में बाधा बनता है। देखा गया है कि बड़े शहरों में काम करने गये मतदाताओं का एक बड़ा हिस्सा सिर्फ वोट देने के लिए अपने गांव नहीं लौट पाता। इस तरह से वह वोट देने के अधिकार से वंचित रह जाता है। 2011 की जनगणना के मुताबिक, देश में ऐसे वोटरों की संख्या 45.36 करोड़ है, जो अपने गृह जिलों से बाहर रहते हैं। देश की कुल आबादी के मुकाबले यह संख्या करीब 37 फीसदी है। 2019 के लोकसभा चुनावों की बात करें तो उसमें 67.4 फीसदी मतदान रिकॉर्ड किया गया था। इन आंकड़ों का मतलब यह नहीं है कि कम मतदान प्रतिशत का एकमात्र कारण इन मतदाताओं का वोटिंग से दूर रहना है, लेकिन यह एक बड़ा कारण जरूर है। वैसे भी मतदाताओं की इतनी बड़ी संख्या को उनके हाल पर नहीं छोड़ा जा सकता। उन्हें सुविधाजनक ढंग से वोटिंग प्रक्रिया में शामिल करने की व्यवस्था करना चुनाव आयोग का दायित्व है। इस लिहाज से आरवीएम निश्चित रूप से अच्छा कदम है। लेकिन कंग्रेस सहित देश के 16 विपक्षी दलों ने रविवार को ही एक बैठक कर चुनाव आयोग की इस पहल के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए इसका विरोध करने का फैसला किया। इनका कहना है कि इस पहल से जुड़ी कई चीजें अभी साफ नहीं हैं। इनके अपने संदेह, सवाल और आशंकाएं हैं। हालांकि इन दलों ने अभी चुनाव आयोग को औपचारिक तौर पर अपने रुख से वाकिफ नहीं कराया है। उससे पहले ये दल 25 जनवरी को एक और बैठक करेंगे, जिसमें उनके सवालों पर चुनाव आयोग के रुख की समीक्षा की जायेगी। वैसे भी आयोग की ओर से इन दलों को 31 जनवरी तक का समय दिया गया है। बड़ी बात यह है कि किसी भी दल ने चुनाव आयोग की इस पहल के इरादों पर सवाल नहीं उठाया है। न किसी का यह कहना है कि गृह जिलों से बाहर रहने वाले वोटरों को अपने कामकाज के इलाकों में ही वोट देने की सहूलियत नहीं मिलनी चाहिए। मतलब यह कि आयोग की इस पहल को लेकर मोटी सहमति पहले से ही कायम है। जरूरत इस बात की है कि इन दलों के मन में जो भी संदेह हैं, उनके जो भी सवाल हैं, उन्हें समय रहते सही ढंग से संबोधित किया जाये, ताकि रोजी-रोजगार के तकाजों के चलते अपने घर से दूर रह रहे नागरिक भी बिना किसी दिक्कत के वोट देने के अपने अधिकार का इस्तेमाल कर सकें।

2011 की जनगणना के मुताबिक देश में ऐसे वोटरों की संख्या 45.36 करोड़ है, जो अपने गृह जिलों से बाहर रहते हैं। देश की कुल आबादी के मुकाबले यह संख्या करीब 37 फीसदी है। 2019 के लोकसभा चुनावों की बात करें तो उसमें 67.4 फीसदी मतदान रिकॉर्ड किया गया था।

अभिमत
आजाद सिपाही

बसपा को उत्तर प्रदेश में पहली सरकार बनाने में कांशीराम के उस फैसले की अहम भूमिका थी, जिसमें उन्होंने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन किया था। समाजवादियों की मदद से मायावती के रूप में देश में कोई पहली दलित महिला मुख्यमंत्री बनी। वह दिन था 3 जून 1995 का। हालांकि उनकी यह सरकार साढ़े चार महीने ही चली। गठबंधन टिकाऊ नहीं निकला।

मायावती का दांव और विपक्ष के उखड़े पांव

अकु श्रीवास्तव

बसपा सुप्रीमो मायावती ने एक ऐलान किया है। ऐलान है कि उनकी पार्टी अब किसी राजनीतिक दल से गठबंधन नहीं करेगी। गठबंधन करने से दूसरे दलों को ही लाभ होता है, बसपा को नहीं। मायावती ने अपने जन्मदिन पर यह घोषणा की और उम्मीद है कि कम से कम इस साल राज्यों में होने वाले चुनावों और 2024 के लोकसभा के चुनाव तक इस पर कायम रहेंगी। पहली बात तो यह कि यह अप्रत्याशित कतई नहीं है। मायावती का जबसे बुआ-भतीजे का गठबंधन टूटा है, तब से वह चुनावों में अकेले ही लड़ती रही हैं, लेकिन फिर भी यह उम्मीद करने वाले यह करते रहे हैं कि बीते 5-6 साल में लगभग गर्त में गिर चुकी पार्टी अब शायद विपक्ष के खेमे में आ जाये और अपनी साख की वापसी के लिए काम करे, लेकिन अब भी बसपा का पुराना रुख जारी है।

लेकिन इस बात की तो मीमांसा होगी ही कि मायावती की हालिया घोषणा कि वह अकेले चुनाव लडेगी, किसके लिए झटका है और किसके लिए लाभ का पैंतरा? कांग्रेस और अन्य भाजपा विरोधी दल इस कोशिश में हैं कि 2024 में एकजुट होकर भाजपा को चुनौती दी जाये। पिछले कुछ वर्षों में भाजपा ने अपने कई मित्रों को खोया है। इनमें शिरोमणि अकाली दल, उद्धव ठाकरे वाली शिवसेना, नीतीश कुमार जैसे गद्दी पकड़ साथी वाला जद (यू), सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी आदि प्रमुख हैं। (सुहेलदेव और अकाली दल के फिर से वापसी की खबरें भी आने लगी हैं।) विपक्ष की उम्मीद की डोर इस बात से बंधी है कि वह किस तरह एकजुट होता है। इसके लिए शरद पवार, केसीआर और प्रशांत किशोर अपने-अपने तरीके से हाथ-पांव मार कर करीब-करीब थक चुके हैं।

कांशीराम ने जो फसल बोई थी, उसका अधिकांश हिस्सा काटा जा चुका है।

बसपा की राजनीति अब मायावती के चारों ओर एक घेरे में सिमट कर रह गयी और जमीन पर वह कहीं आगे बढ़ कर कोई संघर्ष करती नजर नहीं आ रहीं। कुछ समय पहले तक कांग्रेस राजनीति के नाम पर जिस निठल्ले चिंतन से ग्रस्त थी, कमोबेश बसपा की भी यही स्थिति है।

ऐसे में मायावती की घोषणा ऐसी कोशिशों को और हताश करने वाली है। भाजपा के लिए यह लाभ का सौदा है कि विपक्ष 2024 में भी बिखरा रहे। इस तरह मायावती का किसी से गठबंधन न करने का दाव, विपक्ष के पहले से उखड़े पांव के नीचे से थोड़ी और जमीन खींचने वाला ही लग रहा है। ऐसे में बसपा अपने लिए जो रणनीति बना रही है, क्या वह उसकी खोई जमीन फिर से वापस दिलाने की कोशिश है? इसके लिए बसपा के अतीत को समझना जरूरी है कि वह कैसे एक बड़ी ताकत बनी और क्यों आज इतनी दयनीय हालत में पहुंची? कभी कांशीराम के नेतृत्व में जमीन से शुरू हुई बहुजन समाज पार्टी (बसपा) देश के सबसे बड़े राजनीतिक दबदबे वाले राज्य उत्तर प्रदेश की सत्ता में पहुंची और दिखाया कि जातीय राजनीति का रास्ता भी सत्ता के एक बड़े दरवाजे पर खुल सकता है।

बसपा को उत्तर प्रदेश में पहली सरकार बनाने में कांशीराम के उस फैसले की अहम भूमिका थी, जिसमें उन्होंने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन किया था। समाजवादियों की मदद से मायावती के रूप में देश में कोई पहली दलित महिला मुख्यमंत्री बनी। वह दिन था 3 जून 1995 का। हालांकि उनकी यह सरकार साढ़े चार महीने ही चली। गठबंधन टिकाऊ नहीं निकला। उसके बाद मायावती भाजपा की मदद से 1997 और 2002 में दो बार फिर मुख्यमंत्री बनीं मगर दोनों ही बार सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी। मगर चौथी बार 13 मई 2007 से 15 मार्च 2012 तक वह पूरे पांच साल के कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री रहीं। बसपा ने यह सरकार अपने दम पर बनाई और इसे पूरी तरह से मायावती का करिश्मा माना गया।

मगर पिछले एक-डेढ़ दशक से मायावती के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी बेहद अनिश्चितता से भरी पार्टी बन गई है। कांशीराम ने जो देशभर के दलितों के बीच अलख जगा कर उन्हें उनकी राजनीतिक ताकत का अहसास कराया था, उस बोध का पूरा दोहन मायावती ने किया। उन्होंने अनेक ऐसे फैसले किये, जिनकी उम्मीद उनका अपना समाज नहीं करता था।

कांशीराम ने ब्राह्मणवाद और मनुवाद के खिलाफ संघर्ष से एक अलग तरह की दलित राजनीति शुरू की थी, जिसे मायावती ने सतीश मिश्रा के साथ सोशल इंजीनियरिंग का नारा देते हुए 2007 में सफलतापूर्वक पलट दिया और यूपी में पूरे बहुमत से सरकार बनायी। मगर यह सफलता शायद काठ की हांडी जैसी ही रही है, जो दूसरी बार नहीं चढ़ी।

मायावती भले इसे स्वीकार करने में हिचक दिखाएं मगर पिछले विधानसभा और लोकसभा चुनाव के आंकड़े बताते हैं कि उनका जनाधार और वोट बड़े पैमाने पर खिसका है, सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही नहीं, राजस्थान, पंजाब और मध्य प्रदेश में भी, जिनकी बदौलत उनकी पार्टी को तकनीकी रूप से राष्ट्रीय दल का दर्जा मिला। पड़ोस के राज्यों से तो वह कब की जा चुकी थीं, लेकिन उत्तर प्रदेश ने उनकी लाज बचा रखी थी। कांशीराम ने देश की जनसंख्या में 65 फीसदी बहुजन समाज होने का सियासी गणित लगाते हुए 6000 विभिन्न जातियों को जोड़ने के उद्देश्य से बहुजन समाज पार्टी की नींव रखी थी।

वह दिन था 14 अप्रैल 1984, बीआर अंबेडकर की जयंती। बसपा ने 1989 में जब पहला लोकसभा चुनाव लड़ा तो 4 सीटों पर जीत दर्ज करते हुए कुल वोटों के 2.07 फीसदी मत हासिल किये थे। उसके तीन लोकसभा सीटें उत्तर प्रदेश से और एक पंजाब से जीती थी। बसपा की राजनीति अब मायावती के चारों ओर एक घेरे में सिमट कर रह गयी और जमीन पर वह कहीं आगे बढ़ कर कोई संघर्ष करती नजर नहीं आ रहीं। कुछ समय पहले तक कांग्रेस राजनीति के नाम पर जिस निठल्ले चिंतन से ग्रस्त थी, कमोबेश बसपा की भी यही स्थिति है।

राहुल गांधी ने सड़क पर उतर कर कांग्रेस को उस स्थिति से निकालने की कोशिश जरूर की है, पर होगा क्या, कहा नहीं जा सकता। कांशीराम ने जो फसल बोई थी, उसका अधिकांश हिस्सा काटा जा चुका है। सच तो यह है कि मायावती के शोरूम से काफी माल दूसरे लोग ले जा चुके हैं और उनके पास जो कुछ बीज बचे हैं, उससे वह पिराई भी नहीं करना चाहतीं, नयी फसल नहीं उगाना चाहतीं। बस सिर्फ अपने खाने के लिए अगले कुछ वर्षों के लिए अनाज की व्यवस्था कर लेना चाहती हैं।

जमशेदपुर की खबरें

चौरास्ता टुसू मेला में पंहुचे विधायक मंगल कालिंदी

टुसू प्रेमियों को पुरस्कार देकर किया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

पटमदा। पूर्वी सिंहभूम जिला के पटमदा प्रखंड स्थित चौरास्ता में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भव्य टुसू मेला सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंगलवार को आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में दूरदराज से हजारों हजार की संख्या में ग्रामीण शामिल होकर मेला का आनंद उठाया। कार्यक्रम में मुख्य अथिति जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी शामिल हुए। आयोजक समिति के द्वारा विधायक को माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर झुमुर संगीत, छौ नृत्य का आयोजन किया गया। टुसू में पहला पुरस्कार लड़ाईडूंगरी को 2 हजार, दूसरा पुरस्कार सारी बाटालुका को 15 सौ, तीसरा पुरस्कार बेंझाम को 13 सौ एवं चौथा पुरस्कार आगुईडांगरा को एक हजार रुपये दिया गया। मौके विधायक ने कहा टुसू पर्व एवं मकर संक्रांति झारखंड वासियों

का महापर्व है। झारखंड के रहने वाले आदिवासी मूलवासी, मजदूर किसान वर्ग के लोग हर्ष उल्लास के साथ मनाते हैं। विधायक ने कहा पर्व त्योहार के साथ-साथ खास कर ग्रामीण क्षेत्र में युवाओं को शिक्षित होना अति आवश्यक है। इसलिए राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से आग्रह करते हुए बोड़ाम में डिग्री कॉलेज की स्वीकृति दिलाया गया है। विधायक ने डिग्री कॉलेज के लिए टुसु मेला के दौरान मंच से राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बधाई दी। विधायक ने कहा झारखंड अलग राज्य की लड़ाई गुरुजी शिबू सोरेन का देन है। लेकिन राज्य बनने के बाद सबसे अधिक आजसू-बीजेपी की सरकार रही। अलग राज्य के निमार्ता गुरुजी का सोच है गांव के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुचे। उनके सोच को पूरा करने के राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन लगातार प्रयास कर रहे है। आपकी सरकार आपकी योजना आपके द्वार के माध्यम से सरकारी योजनाओं का लाभ जन जन तक पहुचाया जा रहा है। रोजगार से युवाओ को जोड़ने का काम किया जा रहा है। विधायक ने पूर्व में लोगों को रोजगार नहीं मिलने पर प्रवासी मजदूर के रूप में बाहर के प्रदेशों में काम करने जाते थे। जिसका खुलासा कोरोना काल के दौरान हुआ है। राज्य के 16 लाख मजदूरों को कोरोना काल में मुख्यमंत्री ने सुरक्षित अपने घर झारखंड लाने का काम किया। ग्रामीणों को सास्थ्य लाभ पहुचाने के लिए माचा अस्पताल को चालू कराया गया। ताकि ग्रामीणों को चिकित्सा सुविधा का लाभ मिल सके। स्वच्छ पेयजल के लिए चांडिल डैम से 228 करोड़ की योजना की स्वीकृति के बाद काम शुरू कराया गया।

इनकी रही मौजूदगी

मौके पर जिप सदस्य खगेन महतो, प्रदीप बेसरा, विधायक प्रतिनिधि चंद्रशेखर टुडू, ग्राम प्रधान सुधीर चंद्र टुडू, सुधांशु महतो, माधव महतो, हरिपद सोरेन, पंजाब किशोर बास्के, मोहनलाल बास्के, पतिलाल महतो, उमाकांत महतो सहित सैकड़ो झामुमो नेता व कार्यकर्ता व ग्रामीण शामिल रहे।

सड़क सुरक्षा सप्ताह के दौरान रन फॉर सेफ्टी का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। सरायकेला खरसावां जिला में सड़क सुरक्षा सप्ताह के समापन के दौरान जिला प्रशासन के द्वारा तीन किलोमीटर का रन फॉर सेफ्टी का आयोजन किया गया। मंगलवार को रन फॉर सेफ्टी गेस्ट हाउस से शुरू होकर बिरसा मुंडा स्टेडियम में समाप्त हुआ। दौड़ का मुख्य उद्देश्य लोगों को यातायात नियमो के प्रति जागरूक करना है। अन्य वर्षों की तुलना में बीते वर्ष सड़क दुर्घटनाओं की संख्या ज्यादा रही जिसके कारण प्रशासन सड़क सुरक्षा को लेकर ज्यादा सचेत नजर आया। स्कूली बच्चों ने नारा लगाते हुए कहा हेलमेट पहने जान बचाएं,सीट बेल्ट पहने परिवार बचाएं, सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा, वन मिस्टेक गेम ओवर, स्पीड थ्रील बट किल, गाड़ी चलाएं शोक से नहीं, ड्रंक एंड ड्राइव जानलेवा है बोलते हुए नारों को बुलंद किया। रन फॉर सेफ्टी के आयोजन में उपायुक्त

अरवा राजकमल, डीडीसी प्रवीण कुमार गागराई, एसडीओ राम कृष्ण कुमार, सीओ सुरेश प्रसाद सिन्हा, सरायकेला थाना प्रभारी नीतीश कुमार समेत जिला प्रशासन के आलाधिकारियों के अलावा आम नागरिक सहित स्कूली बच्चों ने हिस्सा लिया। उपायुक्त अरवा राजकमल ने कहा यातायात में हुई मामूली चूक की वजह से लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ती है। हमारा उद्देश्य है ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोड सेफ्टी की जानकारी देकर सड़क दुर्घटनाओं में कमी लायी जा सके। उन्होंने कहा लोग आज खुलेआम यातायात नियमो की अनदेखी कर अपनी जान जोखिम में डाल रहे है। ऐसे में जरूरी है लोग यातायात नियमों का पालन करें। यह रन फॉर सेफ्टी उसी का एक हिस्सा है।सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना ही इस दौड़ का मुख्य उद्देश्य है। उपायुक्त अरवा राजकमल ने कहा जागरूकता कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यातायात नियमों के प्रति लोगों को जागरूक कर उन्हें यातायात नियमों का पालन करने हेतु प्रेरित करना है। उपायुक्त ने सड़क सुरक्षा सप्ताह 2023 के तहत लोगों को जागरूक करने के लिए जिला परिवहन विभाग द्वारा चलाए गए जागरूकता अभियान की सराहना की। उन्होंने कहा आमलोगों को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए इसी प्रकार अलग- अलग तरह के व्यापक प्रचार- प्रसार करने की जरूरत है। आम लोगों को यातायात नियमों की जानकारी देते हुए डीसी ने लोगो से अपने एवं परिवार के लिए यातायात नियमों का पालन अवश्य करने की अपील किया की। सीट-बेल्ट, हेलमेट का उपयोग करने का निर्देश दिया।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में जेपी नड्डा के कार्यकाल विस्तार पर भाजपा जमशेदपुर महानगर ने दी बधाई

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। भाजपा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में जगत प्रकाश नड्डा के कार्यकाल को जून 2024 तक बढ़ाया। मंगलवार को बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सर्वसम्मति से मुहर लगी। गृह मंत्री अमित शाह ने प्रेस कांफ्रेंस कर इसकी जानकारी दी। वही जेपी नड्डा के कार्यकाल बढ़ाये जाने पर देशभर के भाजपा कार्यकर्ता हर्षित हैं। वहीं दूसरी ओर जमशेदपुर के

भाजपा कार्यकर्ता भी शीर्ष नेतृत्व के निर्णय पर उत्साहित हैं। भाजपा जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष गुंजन यादव ने अध्यक्ष के रूप में जेपी नड्डा के कार्यकाल बढ़ाये जाने पर हर्ष व्यक्त की। उन्होंने बयान जारी

कर कहा जेपी नड्डा के कार्यक्षमता, अनुभव और मार्गदर्शन में कार्य करना कार्यकर्ताओं को हमेशा उत्साहित और प्रेरित करता है। उन्होंने कहा जेपी नड्डा के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव समेत राज्यों के विधानसभा चुनाव में पार्टी जनता का आशीर्वाद प्राप्त पर विजय पताका लहरायेगी। भाजपा जमशेदपुर प्रेस प्रवक्ता प्रेम झा ने खुशी जताते हुए कहा असंख्य भाजपा कार्यकताओं को अपने कार्य कुशलता और सादगी से प्रेरित करने वाले पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा को सफलतम कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की।

पान गुमटी में चलता था अवैध लॉटरी का धंधा, 20.89 लाख नकद के साथ एक गिरफ्तार, मुख्य सरगना फरार

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। पूर्वी सिंहभूम जिले में पुलिस को एक बार फिर बड़ी सफलता हाथ लगी है। एसएसपी प्रभात कुमार के निर्देश पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध लॉटरी धंधे का खुलासा कर दिया। मंगलवार को एसएससी प्रभात कुमार ने इसकी जानकारी दी। पुलिस ने इस मामले में एक पान गुमटी संचालक को गिरफ्तार कर लिया। संचालक के पास से 20,89,788 रुपए और 1198 पीस अवैध लॉटरी के अलावा अन्य सामान बरामद कर लिया। गिरफ्तार आरोपी में गालूडीह निवासी गौतम मंडल शामिल है। हालांकि इस मामले में संचालक फरार है। जानकारी देते हुए एसएसपी प्रभात कुमार ने बताया पुलिस को अवैध लॉटरी बेचे जाने की सूचना प्राप्त हुई थी। इसको लेकर एक टीम का गठन कर गालूडीह आंचलिक मैदान में एक पान गुमटी में छापेमारी की गई।छापेमारी के दौरान पान गुमटी संचालक गौतम मंडल को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने उसके पास से 5 नोट बुक भी बरामद किया गया है। जिसमे कई अहम सुराग मिले है। पूछताछ में पुलिस को मुख्य सरगना के बारे में भी जानकारी मिली है। जिसकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

व्हाट्सएप पर चलता था अवैध लॉटरी का धंधा

एसएसपी प्रभात कुमार ने बताया अवैध लॉटरी नागालैंड की है जो डिजिटल तरीके से संचालित हो रही थी। आरोपियों द्वारा एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर लॉटरी नंबर दिया जाता था। पेमेट के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनो की सुविधा उपलब्ध किया गया था। एसएसपी प्रभात कुमार ने आम जनो से अनुरोध करते हुए कहा अगर कहीं अवैध तरीके से कोई धंधा संचालित है या कोई नशे का कारोबार चल रहा है तो इसकी सूचना पुलिस को देकर सहयोग करे। ताकि पुलिस मौके पर आगे की करवाई कर सके।

महत्वपूर्ण न्यूज

मेराल प्रखंड मुख्यालय में गणतंत्र दिवस पर झंडोत्तोलन का समय निर्धारित

मेराल (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रखंड मुख्यालय के विभिन्न सरकारी संस्थानों में झंडोत्तोलन का समय निर्धारित किया गया। इस बाबत मंगलवार को प्रखंड प्रमुख दीपमाला कुमारी की अध्यक्षता एवं बीडीओ प्रवेश कुमार साव की उपस्थिति में प्रखंड सभागार में बैठक हुई। बैठक में शामिल विभिन्न कार्यालयों के प्रतिनिधियों एवं पंचायत प्रतिनिधियों की सहमति से झंडोत्तोलन का समय निर्धारित किया गया। जिसमें प्रखंड सह अंचल कार्यालय में सुबह 9:05 बजे, थाना में 9:25 बजे, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 9:50 बजे, मेराल पूर्वी पंचायत सचिवालय में 10:05 बजे, उत्क्रमित मध्य विद्यालय प्रखंड परिसर में 10:15 बजे, प्रखंड पशुपालन कार्यालय में 10:25 बजे, प्लस टू उच्च विद्यालय में 10:35 तथा कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में 10:55 बजे झंडोत्तोलन करने का निर्णय लिया गया। बैठक में जिला परिषद सदस्य मेराल दक्षिणी रौशन प्रवीण, उप प्रमुख निजामुद्दीन खां, थाना प्रभारी नीतीश कुमार, पशुपालन विभाग से प्रभारी बीएएचओ डॉ कृष्ण कुमार सिंह, सीएससी से डॉ अनिल साह, सांसद प्रतिनिधि रूपू महतो, चंद्रमणि पाठक, करीब अंसारी के अलावे प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी सहित प्रखंड के कई मुखिया तथा अन्य कर्मी शामिल थे।

प्रखंड कार्यालय के सभागार में अंचल पदाधिकारी ने की वन अधिकार की बैठक

भंडरिया (आजाद सिपाही)। प्रखंड कार्यालय के सभागार में अंचल पदाधिकारी मदन महली ने वन अधिकार की बैठक की। बैठक में उन्होंने कहा कि गरीब भूमिहीन लोग 2005 से घर बनाकर रह रहे हैं या जोत-कोड़ कर रहे हैं। उन्हें वन अधिकार अधिनियम 2005 के तहत वन पट्टा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि श्मशान, खेल मैदान आदि जंगल में लोग बना दिये हैं तो उन्हें भी वन अधिकार के तहत वन पट्टा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि गरीब असहाय लोगों के लिए सरकार वन अधिनियम के तहत उन्हें वन पट्टा देने का काम कर रही है। लोग इस कानून का गलत इस्तेमाल ना करें और जंगल को अनावश्यक ना काटें। इस मौके पर अंचल निरीक्षक शिवपत राम, भंडरिया, जनेवा, बड़गड़, बीजका सहित अन्य पंचायत के लोग शामिल थे।

जिला शिक्षा पदाधिकारी ने धुरकी एवं सगमा प्रखंड के विभिन्न स्कूलों का किया औचक निरीक्षण

धुरकी/सगमा (आजाद सिपाही)। जिला शिक्षा पदाधिकारी अनीता पूर्ती ने धुरकी व सगमा प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों का मंगलवार को औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय का जिला शिक्षा पदाधिकारी ने वार्डन अर्चना कुमारी से विभिन्न स्कूली शैक्षणिक गतिविधि की जानकारी प्राप्त की। इसके बाद जिला शिक्षा पदाधिकारी +2 उच्च विद्यालय धुरकी में पहुंचकर विद्यालय में पढ़ाई कराने वाले सभी शिक्षकों की उपस्थिति पंजी देखकर जानकारी प्राप्त की। उक्त सभी विद्यालयों का निरीक्षण करने के बाद जिला शिक्षा पदाधिकारी अनीता पूर्ती ने बताया कि बीरवल उच्च विद्यालय उत्कृष्ट विद्यालय की सूची में है इसलिए वह स्वयं निरीक्षण कर विद्यालय की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर रही हैं, क्योंकि उत्कृष्ट विद्यालय होने के कारण डीसी उक्त विद्यालय को कभी भी देखने आ सकते हैं।

दुर्गा मंडप चौपाल निर्माण के लिए मंत्री ने किया 51 हजार रु. का सहयोग

मेराल (आजाद सिपाही)। प्रखंड के लोवादाग में विष्णु मंदिर के प्रांगण में दुर्गा मंडप चौपाल निर्माण के लिए मंत्री मिथिलेश ठाकुर के द्वारा निजी कोष से 51 हजार रु. का सहयोग राशि प्रदान किया गया। जिसमें मुख्य रूप से उपस्थित पार्टी के सचिव मनोज ठाकुर, उपाध्यक्ष आशुतोष पांडेय, दशरथ प्रसाद, विधायक प्रतिनिधि बबलू सिंह, प्रखंड अध्यक्ष महिला मोर्चा आराधना सिंह, सूरज चंद्रवंशी, बैद्यनाथ (बैजू), प्रखंड 20 सूत्री अध्यक्ष शंभू गुप्ता, पंचायत अध्यक्ष बलेंद्र सिंह, महिला मोर्चा पंचायत अध्यक्ष पुष्पा सिंह तथा पार्टी के कई पदाधिकारी एवं पंचायत वासी उपस्थित थे।

कैदी की मौत : गढ़वा जेल के कैदी की मौत मामले में परिजनों ने जेल प्रशासन पर लगाया सूचना नहीं देने का आरोप

मृतक रामकयास यादव के पुत्र ने जतायी हत्या की आशंका

जेल अधिकारी ने कहा- अचानक बिगड़ी रामकयास यादव की तबियत, इलाज के दौरान हुई है मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा जेल में हत्या के आरोप में आजीवन कारावास की सजा काट रहे भवनाथपुर थाना क्षेत्र के रपुरा गांव निवासी स्व. लक्ष्मण यादव के 50 वर्षीय पुत्र राम कयास यादव की संदेहास्पद मौत हो गई। घटना बीते सोमवार की संध्या 5:00 बजे की है। जब अचानक तबियत खराब होने के बाद जेल प्रशासन द्वारा रामकयास को सदर अस्पताल में इलाज के लिए लाया गया। जहां चिकित्सकों द्वारा इलाज से पूर्व ही उसे मृत घोषित कर दिया गया। क्योंकि अस्पताल पहुंचने से पहले ही उसकी मौत हो चुकी थी। उधर घटना की जानकारी मिलने के बाद मृतक के परिजन अस्पताल पहुंचे। जहां लोगों ने रामकयास यादव को मृत पाया। मृतक रामकयास यादव के पुत्र नंदलाल यादव ने पूरी जानकारी देते हुए कहा कि उसके

कैदी की मौत किस कारण से हुई यह जांच का विषय है : जेल में तैनात पुलिसकर्मी

उधर बीमार कैदी रामकयास को लेकर अस्पताल पहुंचे जेल में तैनात पुलिसकर्मी से जब हमने बात की तो उनके द्वारा बताया गया कि नवंबर माह में कैदी रामकयास यादव की तबीयत खराब हुई थी। जिसके बाद इलाज होने पर सुधार हो गया था, किंतु कल अचानक तबीयत बिगड़ी। रामकयास यादव ने कहा कि घबराहट सा लग रहा है, तब जेल में प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों द्वारा उसे मृत घोषित कर दिया गया। साथ ही कहा कि कैदी रामकयास यादव की मौत कैसे हुई, किस कारण से हुई यह जांच का विषय है। जांच कराया जा रहा है। जांच के बाद जो कुछ भी निकल कर सामने आएगा उसे लोगों के बीच रखा जाएगा।

पिता जी गत 2014 से हत्या के आरोप में आजीवन कारावास की सजा काट रहे थे। बताया कि पिछले कोरोना काल के समय उनकी तबीयत खराब हुई थी, जिसके बाद सदर अस्पताल में ही इलाज के दौरान वह पूरी तरह से स्वस्थ होकर वापस जेल में थे और पूरी तरह स्वस्थ थे। पिछले तीन माह पहले मेरी मां देवंती देवी एवं छोटा भाई उनसे जेल में मुलाकात किये थे। उस समय भी किसी भी तरह की कोई परेशानी या बीमारी होने की बात उन्होंने नहीं कही। मेरी मां और भाई द्वारा भी बताया गया कि इतने दिनों तक जेल में रहने की कसक भले है, पर वे पूरी तरह से स्वस्थ हैं। यहां तक कि कल ही कारावास के टेलीफोन नंबर 82355 54961 पर 4:00 बज कर 8 मिनट पर 46 सेकंड उनसे बात भी हुई थी। किंतु उसके बाद वे किस कारण से अचानक बीमार हुए और उनकी मौत तक हो गई। इस बावत अब तक हमें जेल प्रशासन द्वारा कोई जानकारी नहीं दी गई है। हम सभी मीडिया में प्रकाशित खबर के जरिए हुई जानकारी के आधार पर जब सदर अस्पताल पहुंचे तो यहां पर अपने पिता को मृत पाया। यह स्वाभाविक मौत नहीं, यह हत्या है। इसकी पूरी जांच होनी चाहिए ताकि मालूम चल सके कि आखिर मेरे पिता को अचानक कौन सी ऐसी बीमारी हुई जिससे अस्पताल पहुंचने से पहले ही उनकी जान चली गयी।

वहीं सदर थाना पुलिस ने सदर अस्पताल पहुंच शव को अपने कब्जे में लेकर मामले की छानबीन करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जिसके बाद शव का पोस्टमार्टम चिकित्सकों की तीन सदस्यीय टीम द्वारा करते हुए शव परिजनों को सौंप दिया गया।

डीडीसी ने गणतंत्र दिवस समारोह में झांकी प्रस्तुतीकरण पर किया विचार-विमर्श

सभी विभागों को 20 जनवरी तक अपनी झांकी की थीम एवं लिस्ट सौंपने के दिये निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। उप विकास आयुक्त गढ़वा की अध्यक्षता में गणतंत्र दिवस समारोह 2023 को लेकर समारोह स्थल पर झांकी प्रस्तुतीकरण पर विचार करने हेतु बैठक की गयी एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। जेएसएलपीएस गढ़वा, पीएचइडी गढ़वा, स्वास्थ्य विभाग, जिला समाज कल्याण एवं कल्याण विभाग गढ़वा, परिवहन कार्यालय, शिक्षा विभाग एवं

डीआरडीए द्वारा झांकी की प्रस्तुति कराने हेतु निर्णय लिया गया। उक्त सभी विभाग/संस्थान द्वारा दिनांक 20 जनवरी 2023 तक अपनी झांकी की थीम एवं लिस्ट सौंपने हेतु निर्देशित किया गया। सभी संबंधित विभागों द्वारा सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं एवं जनहित के मुद्दे से जुड़े विषयों पर सुनियोजित तरीके से प्रस्तुतीकरण करते हुए झांकी प्रदर्शित करने की बात कही गई। झांकी प्रस्तुत करने वाले वाहनों को सुसज्जित कर झांकी में प्रदर्शित करने की बात कही गई। उक्त बैठक में निदेशक डीआरडीए दिनेश प्रसाद सुरीन, स्वास्थ्य विभाग से उपाधीक्षक एके सिंह, कार्यपालक अभियंता पीएचईडी पीके सिंह, जिला कल्याण पदाधिकारी नीलेश मुर्मू, गढ़वा नगर परिषद अध्यक्ष पिंकी केसरी, पुलिस उपाधीक्षक संतोष कुमार, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी गढ़वा एके यादव, शिक्षा विभाग से जिला कार्यक्रम प्रबंधक गायत्री साहू व अन्य लोग उपस्थित थे।

बंशीधर नगर में गणतंत्र दिवस पर झांकी प्रस्तुत करने का निर्णय

बंशीधर नगर (आजाद सिपाही)। अनुमंडल कार्यालय के सभागार में मंगलवार को गणतंत्र दिवस समारोह को लेकर एसडीओ आलोक कुमार ने कार्यालय प्रधानों व गणमान्य लोगों के साथ बैठक की। इसमें झंडोत्तोलन का समय निर्धारित किया गया। साथ ही अनुमंडल स्तरीय मुख्य समारोह अनुमंडलीय मैदान में आयोजित करने, मुख्य समारोह में विद्यालयीय बच्चों के द्वारा मार्च पास्ट व सरकारी विभागों के द्वारा झांकी प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। एसडीओ ने मुख्य समारोह में विद्यालयीय बच्चों के सांस्कृतिक व मैदानी कार्यक्रम को लेकर बीडीओ श्रवण राम व सीओ अरुण कुमार मुंडा को संस्था प्रमुखों के साथ दो दिनों के भीतर बैठक कर निर्णय लेने तथा इससे संबंधित प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। मार्च पास्ट में शहरी क्षेत्र के सभी विद्यालय को भाग लेने का निर्देश दिया। मौके पर एसडीपीओ प्रमोद कुमार केशरी, कार्यपालक दंडाधिकारी अजय तिर्की, पुलिस निरीक्षक कृष्ण कुमार, प्रमुख उर्मिला देवी, नपं उपाध्यक्ष लता देवी, जिप सदस्य प्रतिनिधि प्रमोद कुमार, बीस सूत्री अध्यक्ष शैलेश चौबे, बीडीओ श्रवण राम, विधायक प्रतिनिधि ओमप्रकाश गुप्ता, अनुमंडलीय अस्पताल उपाधीक्षक डॉ सुचित्रा कुमारी, बीईईओ विजय पांडेय, पेंशनर समाज के अध्यक्ष गदाधर पांडेय, सचिव शिवशंकर प्रसाद, रामानंद पांडेय, सुजीत कुमार यादव, मो. मंजूर राही, अनिल विश्वकर्मा, कमलेश पांडेय, कमलेश बिहारी, अविनाश चंद्र, सविता कुमारी उर्फ लवली आनंद, तहमीना परवीन सहित संस्था प्रमुख व गणमान्य लोग उपस्थित थे।

झारखंड के आलोक कुमार चौधरी को सर्वोच्च राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से किया गया सम्मानित

यह पुरस्कार व्यक्तियों और स्वैच्छिक संगठनों को उनके किये गये उत्कृष्ट कार्यों की पहचान के लिए दिये जाते हैं

आजाद सिपाही संवाददाता

रंका। कर्नाटक के हुबली धारवाड़ में 12 से 16 जनवरी तक आयोजित 26वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2023 में आर्यभट्ट साइंस क्लब के समन्वयक एवं रंका अनुमंडल मुख्यालय निवासी आलोक कुमार चौधरी को सर्वोच्च राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार व्यक्तियों और स्वैच्छिक संगठनों को उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों की पहचान के लिए दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य युवाओं को राष्ट्रीय विकास या समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना और उनमें समुदाय के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा करना है। नवाचार, संस्कृति, मानव अधिकारों की सुरक्षा, कला और साहित्य, पर्यटन, पारंपरिक चिकित्सा, सक्रिय नागरिकता, सामुदायिक सेवा, खेल और शैक्षणिक उत्कृष्टता जैसी गतिविधियों के विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत, युवा एवं खेल मंत्री भारत सरकार के अनुराग सिंह ठाकुर, कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवा राज बोम्मई के द्वारा रंका अनुमंडल मुख्यालय निवासी आलोक कुमार चौधरी को एक प्रमाण पत्र, पदक एवं एक लाख रुपये नकद के साथ सम्मानित किया गया है। इस खबर को सुनकर रंका आर्यभट्ट साइंस क्लब रंका के लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई है।

आरकेवीएस बीएड कॉलेज में सत्र 2022-24 के प्रशिक्षणार्थियों के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन

गढ़वा (आजाद सिपाही)। रेहला रोड स्थित आरकेवीएस बीएड कॉलेज में मंगलवार को बीएड सत्र 2022-24 के प्रशिक्षणार्थियों के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें बीएड सत्र 2021-23 के प्रशिक्षणार्थियों ने नये प्रशिक्षणार्थियों का भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम में उपस्थित कालेज के निदेशक अलखनाथ पांडे ने सभी नये प्रशिक्षुओं का स्वागत करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में नामधारी कॉलेज के अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर डॉ प्रवीण प्रभाकर के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का भी आयोजन किया गया। सभी प्रशिक्षणार्थियों एवं कालेज कर्मियों के द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान श्री पांडेय ने कहा कि स्व. प्रभाकर एक नेक दिल इंसान थे। उनके निधन से हम सभी काफी मर्माहत हैं। उनकी कमी हमेशा खलेगी। कार्यक्रम में कॉलेज के प्राचार्य डॉ चन्द्रदीप पांडेय, एसकेएल दास, दीपक चौबे, राजेंद्र चौबे ,रितेश कुमार, सतीश कुमार तिवारी, प्रवीण कुमार आदि मौजूद थे।

Govt. of Jharkhand
Department of Information Technology & e-Gov.,
308, 3rd Floor, Project Building, Dhurwa, Ranchi-834004
Phone: 0651-2400001 Email:it.egovdept@gmail.com

NIT

Re-Tender Ref No. IT/VWS/2022/2

Request for Proposal for Selection of Service Provider for Annual Maintenance Contract (AMC) Service of Indoor HD LED Video Wall System installed at CM Conference Hall and CS Meeting Hall, Project Building

Department of Information Technology & e-Gov., Govt. of Jharkhand invites online bid through e-Tendering process for selection of Service Provider for Annual Maintenance Contract (AMC) services of two set of Indoor HD LED Videowall System installed at CM Conference Hall and CS Meeting Hall, Project Building. The invitation to bid is open to all bidders having relevant experience meeting the eligibility criteria as mention in the RFP document. Bidders are advised to study the RFP document and Terms & Conditions carefully and completely. Submission of Bids shall be deemed to have been done after careful study of RFP document and examination of Terms & Conditions with full understanding of its implications.

1.	Name of Work	Annual Maintenance Contract (AMC) Service of Indoor HD LED Video Wall System installed at CM Conference Hall and CS Meeting Hall, Project Building
2.	Tender Ref No.	Re-Tender Ref No. IT/VWS/2022/2
3.	Cost of tender Document	INR 10,000/ -(Ten Thousand only) in the form of Demand Draft in favour of Secretary, Department of Information Technology & e-Gov. payable at Ranchi
4.	Earnest Money Deposit (EMD)	INR 2,00,000 /- (Two Lac only) in the form of Bank Guarantee (Validity 180 days) in favour of Secretary, Department of Information Technology & e-Gov. payable at Ranchi
5.	**Availability of Tender Online for bidding**	
i.	Bid Downloading Date	18/01/2023 at 10:00 AM
ii.	Online Bid submission Start	18/01/2023 at 10:00 AM
iii.	Last date and time of Online Bid Submission	07/02/2023 at 2.00 P.M.
iv.	Technical Bid Opening	07/02/2023 at 3.00 P.M.
v.	Commercial Bid Opening	To be announced later
vi.	Place of Technical Bid opening	Department of Information Technology & e-Gov.,Govt. of Jharkhand, #308, 3rd Floor, Project Building, Dhurwa, Ranchi -834004, Phone:0651-2400001, Email:it.egovdept@gmail.com

- Cost of Tender Document, EMD and Technical Bid Document(Hard Copy) shall be deposited in the office of the Secretary, Department of Information Technology & e-Gov., Govt. of Jharkhand, #308, 3rd Floor, Project Building, Dhurwa, Ranchi-834004 on all working days latest by on or before the last date of online bid submission date and time either by registered post/Speed post or by hand. Only those applications will be entertained whose cost of Tender Document, EMD and Technical Bid Document(Hard Copy) is received on or before last date and time of online bid submission date. Secretary, Department of Information Technology & e-Gov., Govt. of Jharkhand will not be held responsible for the postal delay, if any, in the delivery of the document or non-receipt of the same.
- Bids shall be submitted online on the website http://jharkhandtenders.gov.in
- The Authority reserves the right to accept/reject any or all the tender(s) received without assigning any reason thereof.
- **Tender Document can be downloaded from** jharkhandtenders.gov.in

Sd/-
(Sunil Kumar Poddar)
Under Secretary to Govt.

PR 287699 Information Technology(22-23)D

बैठक : गायत्री परिवार की जिला स्तरीय गोष्ठी में लिया गया संकल्प

गायत्री और यज्ञ को घर-घर पहुंचायेगा गायत्री परिवार

जिले के सभी 20 प्रखंडों में प्रखंड समन्वय समिति का पुनर्गठन का लिया गया निर्णय

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। अखिल विश्व गायत्री परिवार गढ़वा जिला इकाई की जिलास्तरीय गोष्ठी जिला मुख्यालय स्थित कल्याणपुर शक्तिपीठ में संपन्न हुई। इसमें विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हुए वार्षिक कार्य योजना बनायी गयी। इसमें मुख्य रूप से जिले के सभी 20 प्रखंडों में प्रखंड समन्वय समिति का पुनर्गठन करते हुए सभी घरों तक गायत्री एवं यज्ञ को पहुंचाने का निर्णय लिया गया। इस क्रम में संगठन के सभी प्रमुख सात आंदोलनों को गति देने के लिये

आंदोलन प्रमुखों को दायित्व दिया गया। गोष्ठी में समाज में बढ़ रही दुष्प्रवृतियों और विकृत सभ्यता-संस्कृति का बढ़ रहे प्रभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने आंदोलनों से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने की आवश्यकता बतायी गयी। विशेष रूप से संस्कार परंपरा को घर-घर स्थापित करते हुए अधिक से अधिक गर्भवती महिलाओं का पुंसवन संस्कार कराने के लिये प्रेरित करने हेतु आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी से महिलाओं को जोड़ने पर बल दिया गया। इसके लिये सभी आंगनबाड़ी सेविकाओं और सहियाओं से सहयोग लेने की बात कही गयी।

गोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि आज जिस तरह से पारिवारिक व सामाजिक समस्याएं बढ़ रही हैं, इससे निजात के लिये सभी लोगों की नजर गायत्री परिवार पर टिकी हुई है। इसको देखते हुये गायत्री परिजनों को अपनी भूमिका बढ़ानी होगी। गोष्ठी में जिला समन्वयक ने वर्ष 2023 में जिले के सभी क्षेत्रों में अधिक से अधिक कार्यक्रम करने और लोगों को यज्ञीय जीवनशैली के प्रति प्रेरित करने के लिये अधिक से अधिक समय निकालने की आश्यकता बतायी। मुख्य प्रबंध ट्रस्टी संजय सोनी ने सभी प्रखंडों और मंडलों से निष्ठा के साथ अपने संकल्पों को पूरा करने का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने वित्तीय अनुशासन का पालन पूरी गंभीरता से करने की अपील की। महिला मंडल की शोभा पाठक एवं अनिता देवी ने नारी जागरण कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

गोष्ठी में संतन मिश्र, गढ़वा प्रखंड समन्वयक अखिलेश कुशवाहा, बरडीहा के रामाशंकर सोनी, कांडी के रामरेखा प्रजापति आदि ने भी विचार रखे। गोष्ठी में मझिआंव के वीरेंद्र सोनी एवं शिव प्रसाद के द्वारा युग संगीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर सरयू चंद्रवंशी, मिथिलेश कुशवाहा, प्रभु दयाल प्रजापति, वृंदा ठाकुर, अनिल विश्वकर्मा, डॉ सुनील विश्वकर्मा, रंजीत केसरी, बेचन राम, महिला मंडल की मीना कमलापुरी, सत्या चौबे, नीलम शर्मा, ममता चौबे सहित काफी लोग उपस्थित थे।

राहे के कमदडीह गांव में टुसू मेला हर्षोल्लास संपन्न

आजाद सिपाही संवाददाता

राहे। प्रखंड के कदमडीह गांव में रामकृष्ण टुसू मेला मंगलवार को उल्लास के साथ संपन्न हुआ। मेले में अंबा रानी झूमर म्यूजिकल ग्रुप के द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।लोक गायक दिनेश महतो, अंबा रानी महतो, दुर्योधन महतो, सुलोचना महतो के झूमर गीत से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिये। मेले में लोग सांस्कृतिक कार्यक्रम का मजा लिया। मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ राजाराम महतो, मुखिया रम्भावती देवी, पंचायत समिति सदस्य निधि देवी, किरीटी महतो, भुनेश्वर महतो, जगदीश महतो, मेला कमेटी के राजू महतो, नरोत्तम मुंडा, भृगुराम लोहरा, कैलाश महतो, परीक्षित महतो, चरण सिंह मुंडा, सुभाष महतो आदि मौजूद रहे।

छात्राओं और अभिभावकों को किया गया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

राहे। झारखंड आवासीय विद्यालय राहे के प्रबंधन के द्वारा विद्यालय के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्राओं और उनके अभिभावकों को समारोह आयोजित कर सम्मानित किया गया। विद्यालय की छात्रा हरिप्रिया रानी को कोलकाता में विज्ञान प्रदर्शनी में विशेष पुरस्कार मिला था। राज्य स्तरीय साइंस और कला उत्सव में चंपा कुमारी और अर्चना कुमारी को पुरस्कार मिला था। जिला स्तरीय कला उत्सव में नमिता कुमारी और प्रतिभा कुमारी को पुरस्कार मिला था। राज्य स्तरीय कला उत्सव में अमृता कुमारी को गायन कला में पुरस्कार मिला था। इन सभी छात्राओं और उनके अभिभावकों को विद्यालय परिसर में राहे बीडीओ हारून रशीद, सीओ महेंद्र छोटन उरांव, प्रभारी रामरेखा पासवान के द्वारा सम्मानित किया गया। विद्यालय परिवार ने छात्राओं को बेहतर दिशा निर्देश देने के लिए इनके गुरु को भी सम्मानित किया। मौके पर वार्डन परमेश्वरी कुमारी सौरभ कुमार सिंह, शिक्षिका विमला कुमारी, सहित काफी संख्या में अभिभावक मौजूद थे।

अज्ञात लोगों ने झोपड़ी में लगायी आग

बुंडू (आजाद सिपाही)। बुंडू अनुमंडल कार्यालय के समीप अज्ञात लोगों ने प्रतिमा पांडे की झोपड़ी में बीती रात को आग के हवाले कर दिया। प्रतिमा पांडे ने बुंडू थाना में अज्ञात लोगों के ऊपर एक शिकायत कराई है। प्रतिमा पांडे ने कहा कि ये झोपड़ी नुमा होटल से ही मेरे तथा मेरे परिवार का रोजी रोटी चलती है बीते दो-तीन दिन से मेरे झोपड़ी को बनाती हूं। उतनी बार आग लगा दिया जाता है। जिससे मेरे पास परिवार का भरण पोषण करने के लिए काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पुलिस ने संदेह के आधार पल बगल के होटल मालिक को बुलाया व पुछ ताछ कर छोड़ दिया।

विधायक नीलकंठ ने किया कार्यक्रम को संबोधित

खूंटी विधायक ने घंसौली पंचायत पर तीन पीसीसी पथ का किया शिलान्यास

आजाद सिपाही संवाददाता

कर्रा। भारतीय जनता पार्टी महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे लाने का काम कर रही है। हमारे गांव समाज के उत्थान के लिए महिलाओं की अहम भूमिका है, जिसे ध्यान में रखते हुए भारतीय जनता पार्टी महिलाओं को आगे लाने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, उक्त बातें खूंटी विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा कर्रा प्रखंड अंतर्गत घुनसुली पंचायत के चांपी गांव में कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि पांचवी बार यहां की जनता ने हमें अपना विधायक चुना। 2000 ई. में जब पहली बार में विधायक चुना गया था उस वक्त क्षेत्र के मूलभूत समस्या सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य हर क्षेत्र में हमारे यह क्षेत्र बहुत पिछड़ा हुआ था। आज हर गांव को मुख्य सड़क से जोड़ा जा

चुका है छोटे बड़े नाले नदी में पुल पुलिया का निर्माण कराया जा चुका है। गांव-गांव में बिजली पहुंचाने का हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी पूरा हो चुका है। पहले क्षेत्रों में मोटरसाइकिल से भी कहीं आना जाना मुश्किल हुआ करता था वही आज सड़क पर बड़े-बड़े गाड़ी दौड़ते नजर आ रहे हैं। सड़क बनने से यहां के किसान भाइयों को भी और व्यापारी वर्ग के लोगों को अपने कारोबार को आगे बढ़ाने में काफी मदद मिल रही है। इससे पूर्व विधायक ने घुनसुली पंचायत के दाढ़ी, चांपी और टोली और चापी उरांव टोली में विधायक मद से पीसीसी पथ का नारियल फोड़कर,फीता काटकर शिलान्यास विधायक ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय जनता पार्टी प्रखंड अध्यक्ष बालकिशुन महतो द्वारा किया। संचालन अंजय महतो ने किया।

इनकी रही मौजूदगी

कार्यक्रम को खूंटी जिला विधायक प्रतिनिधि काशीनाथ महतो, खूंटी जिला परिषद उपाध्यक्ष मंजू देवी के अलावा अन्य ने भी संबोधित किया। स्वागत भाषण राजेश खलखो ने किया कार्यक्रम का संचालन अजय महतो और धन्यवाद ज्ञापन मनोज महतो द्वारा किया गया। मौके पर उपस्थित ग्रामीणों ने विधायक को अपनी समस्याओं से अवगत कराया मौके पर मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी खूंटी जिला उपाध्यक्ष कैलाश राम महतो प्रखंड अध्यक्ष बालकिशुन महतो, कलिंदर राम, अजंय महतो, मनोज महतो, राजेश बखला के अलावे सैकड़ों महिला-पुरुष उपस्थित है।

ऐतिहासिक हरिहर मेला में उमड़ी भीड़

सिल्ली (आजाद सिपाही)। कोंचो स्वर्णरेखा नदी तट पर मंगलवार को ऐतिहासिक हरिहर मेला में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। जहां लोग गाजे-बाजे के साथ नाचते गाते मेला स्थल पर पहुंचे, वहीं मेले में पहुंचे लोगों ने मेला परिसर स्थित भगवान विष्णु , शिव, राम गणेश एवं काली मंदिरों में पूजा-अर्चना की। विभिन्न गांवों से महिला मंडली के दल टुसू गीत गाते हुए मेला परिसर पहुंचे एवं स्वर्णरेखा नदी में टुसू को विसर्जित भी किया। बच्चों ने मेले परिसर में लगे झूले, ब्रेक डांस आदि का आनंद लिया। वहीं महिलाओं ने घरेलू समानों की खरीदारी की। महिलाओं एवं बच्चों ने चाट, फुचके, चाउमीन, बादाम, मटर आदि का आनंद लिया। मेला कमेटी द्वारा टुसू (चौड़ल) प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। मेला को सफल आयोजन में सुनील सिंह, हाराधन महली ,लक्ष्मण महतो, कामेश्वर महतो, शरत कुमार महतो, सुर्यनारायण महतो, खिरोधर महतो, त्रिलोचन महतो, संजीव महत, बिनोद महतो, अनिकेत महतो, उत्तम महतो, अरुण महतो, संतोष महतो, बबलू महतो, जतित महतो, शक्तिधर महतो, मंजीत हजाम, सुकुमार सिंह, मिथुन महतो मेला कमेटी के सदस्य समेत ग्रामीणों का सराहनीय योगदान रहा।

मेले में पहुंचे विधायक और पूर्व विधायक

सिल्ली। कोंचो गांव के स्वर्णरेखा नदी तट के हरिहर मेला में पुर्व उपमुख्यमंत्री सह स्थानीय विधायक सुदेश कुमार महतो, पुर्व विधायक अमित महतो, समाजसेवी श्यामसुंदर महतो, कांग्रेस पार्टी रांची जिला ग्रामीण अध्यक्ष डॉ राकेश किरण महतो, मुखिया, पंसस समेत कई पंचायत प्रतिनिधि शामिल हुए। जहां एक ही मंच से सभी ने लोगों का अभिवादन किया। मंच संचालन मेला कमेटी के संरक्षक सुनील सिंह ने किया। मेले में हजारों की संख्या में लोग पहुंचे एवं मेले का आनंद उठाया। मेला में मुख्य आकर्षण का केंद्र मिक्की माउस स्लाइडिंग एवं डिस्को डांस रहा। जहां बच्चों ने भरपूर मजा लिया।

हाथ से हाथ जोड़ो कार्यक्रम को सफल बनायें कांग्रेस कार्यकर्ता : बंधु तिर्की

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की के निर्देश पर खूंटी जिला कांग्रेस कमेटी की संगठनात्मक बैठक मंगलवार को जिला परिसदन परिसर में आयोजित की गई। बैठक में बंधु तिर्की ने नव नियुक्त जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा और प्रखंड अध्यक्षों को एक सप्ताह के अंदर पूरी कमेटी के गठन का निर्देश दिया और इसकी रिपोर्ट पदेश कार्यालय में जमा करने को कहा। जिला महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्ष को इस माह के अंत तक जिला कमेटी सहित सभी प्रखंड और मंडल कमेटी का गठन करने को कहा। तिर्की ने सात फरवरी को महिला कांग्रेस कमेटी की विशेष समीक्षा बैठक बुलाने का निर्देश दिया। उन्होंने जिले के सभी कार्यकताओं से भारत जोड़ो यात्रा के बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के हाथ से हाथ जोड़ो कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया। बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश उपाध्यक्ष कालीचरण मुंडा, खूंटी जिला प्रभारी सुरेश बैठा, खूंटी विधानसभा प्रभारी अमरेंद्र सिंह, जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा, देवजीत देवघरिया, पुनीत हेमरोम, विलसन तोपनो, नरेश तिर्की, गोपाल भगत, पौलुस पूर्ति, जॉन कंडुलना, विनायक राय, मरियम आईंद, बसंत सुरीन, गुलाम गौस, कैसर खान, फिरोज आलम, जमील अख्तर, तल्हा खां, शशिकांत होरो, मीनाक्षी तोपनो, सुनीता गोप आदि उपस्थित थे।

बुंडू में हाथियों ने मचाया जम कर उत्पात

बुंडू (आजाद सिपाही)। बुंडू प्रखंड के खुदीमधुकम स्थित मुड़हू टोला में लगभग 40-45 की संख्या में हाथियों के झुंड ने लोगों की लहलहाती फसल एवं खरियान में रखें धान को खा गये ग्रामीणों के अनुसार रात लगभग 10 बजे के आसपास 40-45 की संख्या में हाथियों ने घेरकर लोगों की आलू टमाटर राहर मटर आदि फसलों को भारी क्षति पहुंचाई है। ग्रामीणों में त्रिभुवन महतो, देवेंद्र नाथ

महतो, नगेंद्र नाथ महतो, सोमवारी बाला, सावना महतो, अक्षय कुमार महतो, विरोला देवी, सुकरू देवी, आसाराम लोहरा, गणेश महतो के धान एवं आलू खाकर चपट गये। बुंडू प्रखंड के प्रमुख राजकुमार बिंझिंया, गुरु पद गोराई, मुखिया सिद्धार्थ मुंडा भी गांव पहुंचे और वन विभाग से ग्रामीणों को हाथी से राहत दिलाने की बात कही। उन्होंने गांव में फटाके टॉर्च अलाव की व्यवस्था करने की मांग की तथा क्षतिपूर्ति की यथाशीघ्र मुआवजा देने की मांग की।

मराबुरु जारगो और पिरिहातू गांव में 26वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल के जवानों ने पोस्ते की खेती नष्ट की

आजाद सिपाही संवाददाता

तमाड़। रांची और खूंटी जिलों में तैनात 26वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल की 'सी'और 'डी' समवाय ने दिनाकं 17/01/2023 को साइको और तमाड़ पुलिस के साथ 33 एकड़ अवैध पोस्ता की खेती को नष्ट कर दिया। सशस्त्र सीमा बल की विभिन्न समवायों और स्थानीय पुलिस पिछले कई दिनों से रांची और खूंटी जिलों के कई गांवों और आस पास के जंगल क्षेत्रों में संयुक्त अभियान द्वारा अवैध पोस्ता और गांजे के फसल को नष्ट करने का अभियान चलाया जा रहा हैं।

इसी कड़ी में गुप्त सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सचिन कुमार, द्वितीय- कमान-अधिकारी के नेतृत्व में 'सी' समवाय बसुकोचा ने तमाड़ पुलिस के साथ मराबुरु जारगो गांव के कई स्थानों में संयुक्त अभियान चलाकर लगभग 17 एकड़ अवैध पोस्ता की खेती को नष्ट कर दिया।

आगे भी कार्रवाई रहेगी जारी

इसी के साथ दिनेश कुमार, उप कमांडेंट के नेतृत्व में 'डी' समवाय उलीहातू ने उप-निरीक्षक संजय कुमार साइको पुलिस के साथ पिरिहातु गांव के विभिन्न जगहों पर संयुक्त अभियान चलाकर लगभग 16 एकड़ अवैध पोस्ता की खेती को नष्ट कर दिया। दोनों समवायो ने कुल 33 एकड़ अवैध पोस्ता की फसल को नष्ट कर दिया एवं आगे आने वाले दिनों में भी इसी प्रकार से संयुक्त अभियान चलाकर अवैध पोस्ता और गांजे की फसल को नष्ट किया जायेगा। मौके पर 'सी' और 'डी' समवाय के सहायक कमांडेंट भोला नाथ और सौमेन गोराई अपनी अपनी पार्टियों के साथ उपस्थित थे।

महिला सशक्तिकरण को लेकर विशेष बैठक का आयोजन

कर्रा (आजाद सिपाही)। महिला सशक्तिकरण को लेकर वनवासी कल्याण केंद्र के तत्वावधान में मंगलवार को कर्रा प्रखंड अंतर्गत डेहकेला पंचायत में विशेष बैठक हुआ। साथ ही जी 20 समिट हेतु राष्ट्र के प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया एवम बिशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए चर्चा किया गया। मौके पर वनवासी कल्याण केंद्र झारखंड प्रांत के श्रद्धा जागरण प्रमुख मुसाफिर विश्कर्मा, भाजपा मंडल अध्यक्ष रामध्यान सिंह, महिला मोर्चा जिला महामंत्री सीमा देवी, भाजयुमो अध्यक्ष विनय गुप्ता, वनवासी कल्याण केंद्र जिला से साधु मुंडा, भाजयुमो महामंत्री मधुसूदन, महिला समूह की अध्यक्ष ममता देवी, नीतू देवी आदि लोग शामिल थे। कार्यक्रम के अंत मे सभी अतिथि ने महिला समूह की अध्यक्ष ममता के घर पर भोजन किया।

सब्जी मंडी बंद होने से किसानों की बढ़ी परेशानी

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। जरिया के त्रिवेणी महतो का कहना है कि बेड़ो में सब्जी मंडी बंद होने से किसानों की परेशानी बढ़ गई है। मंडी के बंद रहने से फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। प्रखंड क्षेत्र में उगाई जाने वाली मटर व आलू बिहार सहित झारखंड बंगाल उड़ीसा में भेजा जा रहा है लेकिन किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है।

हिंदुओं को जगाने का काम कर रहा है हिंदू जागरण मंच: संजय वर्मा

खूंटी (आजाद सिपाही)। हिंदू जागरण मंच झारखंड प्रांत के परावर्तन प्रमुख संजय वर्मा ने कहा कि हिंदू जागरण मंच हिंदुओं की सांस्कृतिक, अध्यात्मिक और धार्मिक भावना को जगाने का काम कर रहा है। वर्मा मंगलवार को शहर के गायत्री नगर में आयोजित मंच की खूंटी जिला समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलध्यक्ष संजय सिंह ने की। प्रांत परावर्तन प्रमुख ने कहा कि हिंदू अपनी जीवन पद्धति को भूल गये हैं और भटक रहे हैं। यही कारण है कि देशभर में जिहादी खतरा बढ़ता जा रहा है। आए दिन लव जिहाद की खबरें मीडिया की सुर्खियां बन रही हैं। गैर हिंदू यह नहीं चाहते कि देश एकात्म भाव में आगे बढ़े। बैठक में संगठन को धारदार बनाने के लिए संगठन विस्तार पर विशेष चर्चा हुई और इसके लिए जिला अध्यक्ष संजय सिंह द्वारा जिला कमेटी का आंशिक विस्तार किया गया। कमेटी में विश्वदीप कश्यप को जिला उपाध्यक्ष, कृष्णा सिंह को जिला मंत्री और हरि नारायण साहू (बाबू)को युवा प्रमुख बनाया गया। बैठक में मुख्य रूप से भारतीय सरना समाज के केंद्रीय अध्यक्ष भीम सिंह मुंडा, सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार, ज्योतिष भगत, बालमुकुंद कश्यप, मदन मोहन गुप्ता, संजीव चौरसिया, सुभाष कुमार मिश्रा, सोमेश्वर उरांव, कुश साहू, सागर कुमार, लव साहू, अरुण कुमार महतो आदि स्वयंसेवक उपस्थित थे।

उत्कृष्ट कार्य के लिए ओबीसी कांग्रेस ने उपायुक्त को किया सम्मानित

खूंटी (आजाद सिपाही)। खूंटी जिले के विकास में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए खूंटी जिला ओबीसी कांग्रेस के अध्यक्ष सोनू इमरान ने उपायुक्त शशि रंजन को सम्मानित किया। मौके पर सोनू दमरान ने कहा कि जिले में चल रही विकास योजनाओं में उपायुक्त का अहम योगदान है। कांग्रेस अध्यक्ष ने उपायुक्त को कर्रा प्रखंड के लोधमा गांव को विकसित करने का आग्रह उपायुक्त से किया। उस पर डीसी ने लोधमा क्षे के विकास के लिए चलाई जार विकास योजनाओं की जानकारी दी। मौके पर सामजसेवी सोनू सिंह भी मौजूद थे।

लंबित योजनाओं को अविलंब पूरा करें: शशि रंजन

खूंटी (आजाद सिपाही)। उपायुक्त शशि रंजन की अध्यक्षता में मंगलवार को विशेष केंद्रीय सहायता योजना को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान स्वास्थ्य के क्षेत्र में केंद्रीय सहायता मद(एससीए) से आवश्यक व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा की गई। डीसी ने विशेष केंद्रीय सहायता योजना अंतर्गत क्रियान्वित योजनाओं की अद्यतन भौतिक एवं वित्तीय प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान उपायुक्त द्वारा योजनाओं की समीक्षा के क्रम में लंबित और प्रक्रियाधीन योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई तथा अधिकारियों को कई निर्देश दिये गये। उपायुक्त ने सभी विभागों की योजनाओं की प्रगति एवं वर्तमान स्थिति की जानकारी ली और लंबित योजनाओं को अवलिंब पूरा करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने निर्देशित किया कि ट्रेनिंग सेंटर के माध्यम से किसानों के लिए उचित प्रशिक्षण व संसाधन केंद्र विकसित किया जाना है। कृषि आधारित आधारभूत संरचनाओं को विकसित करने के सम्बंध में विभिन्न बिंदुओं पर विशेष विचार-विमर्श किया गया। उपायुक्त ने निर्देशित किया कि कृषि, शिक्षा, पेयजल से सम्बंधित किये गए कार्यों के अनुश्रवण के लिए विभिन्न पांच-पांच सदस्यों की समितियों का गठन किया जाए। उन्होंने कहा कि कि शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य व कृषि के क्षेत्र में चरणबद्ध रूप से कार्य किये जाए। उपायुक्त ने निर्देश दिया कि बिरसा लाइब्रेरी के प्रबंधन की पूरी जिम्मेदारी जिला परिषद के मुख्या कार्यपालक अधिकारी को दी जायेगी। कंप्यूटर लैब के उचित संचालन के लिए जिला शिक्षा पदाधिकारी और जिला सूचना एवं विज्ञान पदाधिकारी को निर्देशित किया गया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने पर्यटन के विकास को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने डोंबारी बुरू में रास्ता चौड़ीकरण, शेड, सौंदर्यीकरण एवं पर्यटकों के बैठने की उचित व्यवस्था करने को कहा।

महिला सशक्तीकरण पर चर्चा

खूंटी (आजाद सिपाही)। वनवासी कल्याण केंद्र के सदस्यों की मंगलवार को कर्रा प्रखंड के डहकेला गांव में हुई बैठक में महिला सशक्तीकरण को लेकर विचार विमर्श किया गया। वक्ताओं ने कहा कि महिलाओं के विकास के बिना न गांव का विकास होगा और देश का। कहा गया कि वनवासी कल्याण केंद्र महिला सशक्तीकरण की दिशा में लगातार काम करेगा। बैठक जी20 सम्मेलन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त किया और उन्हें शुभकामनाएं दी गईं। मौके पर वनवासी कल्याण केंद्र के झारखंड प्रांत श्रद्धा जागरण प्रमुख मुसाफिर विश्कर्मा, भाजपा मंडल अध्यक्ष रामध्यान सिंह, महिला मोर्चा जिला महामंत्री सीमा देवी, भाजयुमो अध्यक्ष विनय गुप्ता, वनवासी कल्याण केंद्र के साधु मुंडा, भाजयुमो महामंत्री मधुसूदन, महिला समूह की अध्यक्ष ममता देवी, नीतू देवी सहित कई लोग मौजूद थे।

टुसू मेला : प्रसिद्ध 33वां भगत टुसू मेला सह बालिका फुटबॉल एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हर्षोल्लास संपन्न

टुसू मेला में उमड़ा जनसैलाब

अतिथि भी मेला के रंग में रंग गये, ढोल नगाड़ा बजाकर मेला की खुशियों को किया साझा

मेला हमारी लोक संस्कृति की पहचान और विरासत की धरोहर हैः आदित्य साहू

लोगों के साथ मिल कर मेला की खुशी मनाते अतिथिगण तथा मेला भगवान राम एव हनुमानजी के नौका बिहार की जीवंत झांकी।

आजाद सिपाही संवाददाता

अनगड़ा। मकर संक्रांति के अवसर पर साल्हन गांव स्थित स्वर्णरेखा नदी तट पर लगने वाला प्रसिद्ध 33वां भगत टुसू मेला हर्षोल्लास के साथ संपन्न हो गया। इस मेला में आसपास व दूरदराज से हजारों की संख्या में लोगों की भीड़ उमड़ी। वहीं मेला में आसपास के दर्जनों गांवों की महिलाएं व युवतियां आकर्षक टुसू के साथ नाचते-गाते हुए पहुंची। मेला में कृष्णा भगत द्वारा निकाली गई भगवान राम व हनुमान के नौका बिहार की जीवंत झांकी आकर्षण का केन्द्र रही।

इस अवसर पर बालिका फुटबॉल प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। जिसमें बालिकाओं नें बेहतर खेल का प्रर्दशन कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। मेला के उत्साह व उमंग में अतिथिगण भी अपने आपको रोक नहीं सके और ढोल-नगाड़ा बजाकर लोगों के साथ मेले की खुशियां मनाई। संध्या में रंगारंग नागपुरिया गीत, संगीत व नृत्य का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में कलाकारों ने एक से बढ़कर एक नागपुरी गीत प्रस्तुत कर लोगों को थिरकने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद आदित्य साहू थे जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व विधायक रामकुमार पहान, डॉ अमर कुमार चौधरी, भाजपा ग्रामीण जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र महतो, भाजपा नेता जैलेन्द्र कुमार, अनिल टाइगर, जिप सदस्य अनुराधा मुण्डा, ओरमांझी प्रखंड प्रमुख अनुपमा देवी, कर्नल बीके सिंह आदि उपस्थित हुए।

मौके पर सांसद आदित्य साहू ने कहा कि मेला न सिर्फ हमारी लोक संस्कृति की पहचान है बल्कि यह हमारे विरासत की धरोहर है जिसे अक्षुण्ण बनाये रखने की जरूरत है। रामकुमार पहान ने कहा कि मेला संस्कृति समाजिक समरस्ता को बढ़ावा देती है। यह हमें एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहने तथा खुशहाली का पैगाम देती है। जैलेन्द्र कुमार ने कहा कि मेला सांस्कृतिक व सामाजिक समरस्ता को बढ़ावा देता है, मेला में आकर लोग अपनी परंपरा और संस्कृति से रूबरू होते हैं। सुरेन्द्र कुमार महतो ने कहा कि मेला में उमड़ी भीड़ यह दर्शाती है कि लोग अपनी परंपरा और संस्कृति के प्रति कितने सजग व जागरूक हैं। मौके पर डॉ अमर कुमार चौधरी, अनुराधा मुण्डा, अनुपमा देवी, अजय महतो, विरेन्द्र सिंह भोगता, मनोज कुमार चौधरी, कामेश्वर महतो, रोशनलाल मुण्डा, रामनाथ महतो, रामकृष्ण चौधरी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मेला समिति के संयोजक डॉ रिझु नायक ने किया। बाद में आयोजन समिति की ओर से सर्वश्रेष्ठ चौड़ल व कृष्णा भगत की झांकी को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजू नायक ने, अतिथियों का स्वागत समिति के मुख्य संरक्षक एतवा नायक भगत ने तथा संचालन डॉ रिझु नायक ने किया। मौके पर विरेन्द्र भोगता, अजय महतो, रामकृष्ण चौधरी, रामसाय मुण्डा, नरेश साहू, राजेन्द्र महतो, धनीराम महतो, विजय महतो, रब्बानी राज, हिमांशु शेखर चौधरी, शंकर बैठा, पतरस कुजूर, सुरेश महतो, संजय नायक आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में मेला समिति के संयोजक डॉ रिझु नायक, संरक्षक एतवा भगत, अध्यक्ष राजु नायक, उपाध्यक्ष बिरजा मुण्डा, दिपक मुण्डा, सचिव प्रकाश नायक, मनक करमाली, ग्रामप्रधान शिबु मुण्डा, मनक करमाली, जनक करमाली, सिकंदर अंसारी, सलीम अंसारी, सूरज करमाली, समशाद अंसारी, दुर्योधन नायक, धनेश्वर नायक, छब्बिया नायक, सुलेन्द्र मुण्डा, महेश नायक, रितेश मुण्डा आदि का सराहनीय योगदान रहा।

महाराजा मदरा मुंडा फुटबॉल चैंपियन ट्रॉफी टूर्नामेंट 7 फरवरी से : सोमनाथ मुंडा

कांके (आजाद सिपाही)। महाराजा मदरा मुंडा फुटबॉल चैपिंयन ट्राफी टूर्नामेंट का उद्घाटन मैच 7 फरवरी से खेला जाएगा। इसे लेकर महाराजा मुंडा रिंग रोड पतरातू में महाराजा मदरा मुंडा समिति के अध्यक्ष संजय मुंडा की अध्यक्षता में बैठक कर निर्णय लिया गया। इस संबध में समिति के मुख्य सरंक्षक सोमनाथ मुंडा ने बताया कि टूनार्मेंट में झारखंड के चक्रधरपुर सहित दूसरे राज्य के हुबली बंगाल,सुदंरगढ़ उड़ीसा,बंगाल टाइगर कोलकता सहित अन्य कई राज्यों की 16 टीम भाग लेगी। सभी मैच नॉक आउट चरण में खेले जाएगें। फाइनल मैच 14 फरवरी को खेला जाएगा। विजेता टीम को 2.50 लाख व उपविजेता टीम को 2 लाख एवं ट्राफी दिया जाएगा। मैन आफ द सीरिज को मोटरसाइकिल इनाम में दिया जाएगा। इस बैठक में जिप सदस्य संजय महतो, मदन महतो, प्रेम किशोर महतो, हयात अंसारी, फरीद खान,अजय एक्का,सूरज प्रकाश सहित कई शामिल थे।

बैडमिंटन मैच के फाइनल में वसीम और नवाब की जोड़ी ने जीता खिताब

कांके (आजाद सिपाही)। युवा बैडमिंटन कल्ब कांके के तत्वावधान में मिल्लत कॉलोनी मैदान में बैडमिंटन टूर्नामेंट का फाइनल मैच खेला गया। टूर्नामेंट के युगल सीनियर वर्ग के फाइनल में वसीम खान व नवाब खान की जोड़ी ने ताबीस सिद्दकी व शाहिद को हराया। वहीं तीसरे स्थान पर सद्दाम व गोल्डन की जोड़ी ने मैच जीता। जूनियर वर्ग के युगल फाइनल में अली व तलहा की जोड़ी ने आसीफ व रुमान को हराकर प्रथम स्थान पर रहे। वहीं तीसरे स्थान पर सन्नी व बिट्टू की जोड़ी विजेता बने.इस मौके पर यूथ कांग्रेस जिलाध्यक्ष जमील अख्तर,कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष संजर खान,मुखिया संगीता भंवरा,समाजसेवी कबीर खान,शकील अंसारी,जफर अली खान,शाहील आलम,संतोष कुमार,लालचंद सोनी,गुड्डु ने पुरस्कार वितरण किया। मैच के सफल आयोजन में मुमताज खान,वसीम खान,मो रियाज,अहसाब खान,सद्दाम,रमीज आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

मंडी बंद होने से इटकी प्रखंड क्षेत्र के लोगों के समक्ष बेरोजगारी का संकट

इटकी (आजाद सिपाही)। गड़गांव के लादू उरांव का कहना है कि बेड़ो व इटकी प्रखंड कृषि पर ही निर्भर है। यहां खेती से लोगों को रोजगार मिलता है। गांव की महिलाएं मटर तोड़कर दो से तीन सौ रुपये कमा लेती हैं। वहीं दर्जनों पुरुष उसे बोरे में भरने व बाजार ले जाकर बेचने का कार्य करने में लगे रहते हैं। लेकिन मंडी बंद होने से ये लोग भी बेकार हो गए हैं।

बेड़ो के बारीडीह में युवा चेतना जागरण कार्यक्रम का आयोजन

बेड़ो (आजाद सिपाही)। प्रखंड के बारीडीह पड़हा मैदान में युवा चेतना जागरण कार्यक्रम के तहत बेड़ो परिसर सेवा समिति के दस संकुल के बीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गांव में काम ना होने के कारण होने वाले पलायन को रोकने के लिए गांव के प्राकृतिक संसाधन के आधार पर गांव में रोजगार के अवसर निर्माण करने की जानकारी देना है। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि सांसद सुदर्शन भगत व विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय संयोजक अनिल बाल शंकर, रामकृष्ण मिशन के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजित कुमार सिंह, डा राजेश कुमार, चिकित्सा पदाधिकारी डा राजीव रंजन, विकास सहयोगी राकेश भगत ने संसदीय संकुल की जानकारी दी। वहीं कृषि वैज्ञानिकों ने अपनी उपज दुगुनी करने की महत्वपूर्ण जानकारी दी। कार्यक्रम में सांसद द्वारा 24 प्रशिक्षित युवकों के बीच कृषि उपकरण प्रदान किया गया। सांसद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास के मंत्र के साथ सरकार समाज का हर व्यक्ति की प्रगति के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा आने वाले समय में शीघ्र ही संकुल गांव के प्रत्येक घर में आयुष्मान कार्ड, केसीसी ऋण,पशुपालन,कृषि,स्व रोजगार दिलाने का काम बेड़ो संकुल विकास परियोजना द्वारा सहयोग किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन सांसद प्रतिनिधि धनंजय कुमार रॉय ने किया। मौके पर राजीव रंजन अधिकारी बलराम सिंह, जगरनाथ भगत, धनंजय सिंह, राजेश साहू, कुमुद वर्मा, शंकर खन्ना, सुभाष उरांव, बिनोद उरांव, सावित्री देवी, रिंकी उरांव आदि मौजूद थे।

विद्या भारती प्रबंधकारिणी समिति का सम्मेलन आज से

समाज केंद्रित शिक्षा ही सम्मेलन का उद्देश्य : रामावतार नारसरिया

आजाद सिपाही संवाददाता

पिस्कानगड़ी। विद्या भारती विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के पदाधिकारियों तथा पूर्व छात्रों की भूमिका और जिम्मेवारी तय करने के लिए दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन 18-19 जनवरी को किया गया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए विद्या भारती उत्तर पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय मंत्री ने कहा कि सर्वस्पर्शी कार्य ही सफलता को प्राप्त करता है। विद्या भारती का कार्य समाज आधारित है। वे मंगलवार को प्रखंड के कुदलोंग स्थित आदित्य जालान बीएड कालेज के सभागार में प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि विद्यालय के प्रबंधकारिणी समिति के पदाधिकारी एवं पूर्व छात्र समाज तथा विद्या भारती के अभिन्न अंग हैं। वर्तमान में हमारा पूर्व छात्र परिषद विश्व का सबसे बड़ा छात्रों का संगठन है।

समिति के पदाधिकारियों तथा पूर्व छात्र के माध्यम से हम राष्ट्रीय चेतना के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, सामाजिक समरसता को जागृत कर रहे हैं। भारत केंद्रित शिक्षा के मूल भाव को हम मजबूती प्रदान कर सकें इस दृष्टि से मंथन जरूरी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जो तथ्य उभर कर सामने आये हैं उसका शत प्रतिशत क्रियान्वयन हो इसमें भी समाज की जागरूकता आवश्यक है। 'चलो जलायें दीप वहां जहां आज भी अंधेरा है' की उक्ति को साकार करने के लिए विद्या भारती द्वारा संस्कार केंद्रों का संचालन होता है। सेवा बस्ती में संस्कार केंद्र के अलावा वनवासी क्षेत्र में एकल विद्यालयों का संचालन, सेवा के अन्य कार्य जैसे प्याऊ, अनाथ बच्चों के केन्द्र, ब्लड बैंक स्थापना, अस्पताल में फल वितरण, निशक्तों की सहायता, गरीब बच्चों की शिक्षा तथा छात्रवृत्ति योजना आदि। इसके अलावा ग्रीष्मकालीन शिविर, मेघावी/प्रतिभा अभिनंदन समारोह, संस्कृति बोध परियोजना की गतिविधियों सहित अन्य कार्यों एवं योजनाओं में सहभागिता है। समाज के अन्य लोग में भी राष्ट्रीय चेतना जागृत हो इसके लिए समिति के पदाधिकारियों तथा पूर्व छात्रों की भूमिका और जिम्मेवारी तय करने के लिए दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है। प्रेस वार्ता में क्षेत्रीय एवं प्रांतीय मंत्री रामावतार नारसरिया, प्रदेश सचिव अजय कुमार तिवारी, क्षेत्रीय पूर्व छात्र संयोजक आलोक तिवारी तथा क्षेत्र प्रचार प्रमुख एवं पूर्णकालिक अखिलेश कुमार उपस्थित थे।

लापुंग प्रखंड के संकुल और प्रखंड कर्मियों को शिशु पंजी के अद्यतीकरण दिया गया प्रशिक्षण

लापुंग (आजाद सिपाही)। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग तथा झारखंड शिक्षा परियोजना के द्वारा सत्र 2022-23 के शिशु पंजी के अद्यतीकरण को समय सीमा के अंदर पूर्ण करने के लिए लापुंग संसाधन केंद्र और सभी संकुलों के सीआरपी बीआरपी, सभी परियोजनाकर्मी तथा अन्य लोगों ने राज्य स्तर पर आयोजित शिशु पंजी के वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। परियोजना के द्वारा आयोजित वर्चुअल जूम मीटिंग के दौरान सभी बीआरपी सीआरपी और परियोजना कर्मियों को 31 जनवरी के पूर्व शिशु पंजी के अद्यतीकरण के कार्य को त्रुटि रहित पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। बैठक के दौरान बताया गया कि सभी विद्यालयों के पोषक क्षेत्र में विद्यालय के प्रधान शिक्षकों के द्वारा विद्यालय के शिक्षकों को

उनकी संख्या के अनुसार टोले मुहल्ले में बांटकर बराबर की संख्या में सर्वे करने के लिए निर्देशित करना तथा कार्य को पूर्ण कराना अनिवार्य है। पोषक क्षेत्र का वैसा बच्चा जो अपने जीवन काल में कभी किसी विद्यालय में नामांकित नहीं हुआ है तो ऐसा बच्चा अनामांकित कहलाएगा। वहीं वैसा बच्चा जो सर्वे तिथि के अंतिम 30 विद्यालय कार्य दिवस के दौरान 85% उपस्थित रहता है तो वह नामांकित और नियमित बच्चा कहलाएगा। बैठक के दौरान यह भी बताया गया कि सर्वे तिथि के अंतिम तीन दिनों में या अंतिम 30 कार्य दिवस के दौरान कभी भी अनुपस्थित रहता है तो ऐसा बच्चा अनियमित बच्चा कहलाएगा। बैठक के दौरान सभी विद्यालयों के प्रधान शिक्षकों को आवश्यक दिशा-निर्देश देने और समयबद्ध तरीके से सभी कार्यों को पूरा करने का कठोर निर्देश दिया गया। बैठक के दौरान प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी लीलावती तिर्की, सीआरपी चंद्रमोहन ठाकुर, सुनील कुमार गुप्ता, मनोज कुमार साहू, मंटू कुमार साहू, बीआरपी रेशम शाहदेव, बबलू कुमार महतो, लाल केश्वर यादव, रिसोर्ट शिक्षक मिथिलेश कुमार सिंह, रुपेन्द्र कुमार साहू सहित कई लोग मौके पर मौजूद थे।

कार्यक्रम : महाकवि घासीराम महली का जयंती समारोह धूमधाम से मना, रास सांसद महुआ माझी ने कहा

महली समाज का नागपुरी भाषा और साहित्य को बचाने में बहुत बड़ा योगदान है

महली समाज के बुद्धिजीवी बिना कोई लालच के समाज को जोड़ने का कार्य कर रहे हैं : विधायक शिल्पी नेहा तिर्की

आजाद सिपाही संवाददाता

चान्हो। क्षेत्र के करकट ग्राम में महाकवि घासी राम महली की 164वां जयंती समारोह मगंलवार को बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। अतिथियों को आदिवासी परम्परा से स्वागत किया गया। मेला में गीत संगीत से पूरा माहौल संगीतमय हो गया। शिव शंकर महली और रामप्रसाद महली के संयुक्त नेतृत्व ने पइका नृत्य से लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। मनोज महतो और सुखदेव महली के गीतों ने लोगों का मन मोह लिया।

मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद महुआ माजी ने अपने संबोधन में कहा कि महली

समाज का नागपुरी भाषा और साहित्य को बचाने में बहुत बड़ा योगदान है। साथ ही उन्होंने महाकवि घासी राम महली रचित किताबों को लिपिबद्ध कराने का आश्वासन दिया। मांडर विधायक शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि महली समाज के मंच में उपस्थित बुद्धिजीवी बिना कोई लालच के समाज को जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। महली समाज के विकास के लिए जो भी सहयोग होगा उसे करने के लिए हमेशा तैयार रहूंगी। महली जनजाति विकास मंच के अध्यक्ष हरि नारायण महली ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महली जन जाति विकास मंच एक सामाजिक संगठन है और हमलोग मंच के द्वारा नागपुरी भाषा और साहित्य के कवि कलाकारों को सम्मान देने के साथ समाज को शिक्षित और संगठित कर के आर्थिक और राजनीतिक रूप से मजबूत करने का प्रयास करेंगे। नागपुरी भाषा के रांची यूनिवर्सिटी के विभागाध्यक्ष डॉ उमेश नंद तिवारी ने कहा कि महाकवि घासी राम महली नागपुरी भाषा के विद्यापति थे। उनके हस्त लिखित गीतों को प्रकाशित करने की आवश्यकता है। प्रमुख होलिका देवी ने कहा महली समाज को शिक्षित और संगठित करने की आवश्यकता है। मंच संचालन संयुक्त रूप से आकाशवाणी रांची की पूर्व उदघोषिका शकुन्तला मिश्रा, मनीष बरवार और भूपेंद्र महली ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में केंद्रीय समिति से रमेश महली, हरि शंकर महली, कुंती देवी, बिसुन महली, भुजन महली, विष्णु महली, शिव शंकर महली, दीप महली, अनिरुद्ध महली, महाराज महली, बटन महली, संजय राम महली, राम लगन महली, कर्मचारी संघ से मनोज तिर्की, रवि शंकर महली, रमेश राम महली, निरंजन महली, स्मारक समिति के मकेश्वर महली, संतोष महली, मनोज राम महली, अशोक महली, देवेन्द्र महली, दीपक महली का विशेष योगदान रहा। मेला में सैकड़ों लोग उपस्थित हुए।

महत्वपूर्ण न्यूज

टुसू मेला झारखंडी संस्कृति और सभ्यता की पहचान है : रिया तिर्की

नामकुम (आजाद सिपाही)। सिरी परगना पड़हा टुसू मिलन समारोह तुंजू नचलदाग के द्वारा मंगलवार को टुसू मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में खिजरी विधायक राजेश कच्छप की पत्नी रिया तिर्की उपस्थित थीं। मौके पर उन्होंने कहा कि टुसू मेला झारखंडी, संस्कृति और सभ्यता की पहचान है। उन्होंने कहा कि टुसू एक ऐसा पर्व है जो गांवों में महीनों तक चलता है। आसपास के दर्जनों गांवों के हजारों लोग टुसू चौड़ल के साथ मेले में सम्मिलित हुये। मेला में झूला, खेल तमाशा, मिठाई, गन्ना एवं दैनिक रोजमर्रा की सामानों की सैकड़ों दुकानें लगी थीं। प्रत्येक वर्ष लगने वाले इस मेले में फुटबॉल मैच का भी आयोजन किया गया था। फुटबॉल मैच में विजेता व उपविजेता टीम को रिया तिर्की ने पुरस्कृत किया। मेले में मुख्य रूप से जिला परिषद सदस्य रीता होरो, पंचायत समिति सदस्य कल्याण लिंडा, मेला अध्यक्ष बजरंग महतो, उपाध्यक्ष कामेश्वर ठाकुर, सचिव शिव नायक, संरक्षक भौकला नायक, कोषाध्यक्ष दुर्जन महतो, कांग्रेसी नेता माधो कच्छप, खुदिया कच्छप, प्रेम मुंडा, मंगल मुंडा उपस्थित थे।

मनरेगाकर्मी शत प्रतिशत झारखंडी और खतियानी

नामकुम (आजाद सिपाही)। राज्य के अनुबंध कर्मियों की नियमितीकरण और मुख्यमंत्री के निर्णय का झारखंड राज्य मनरेगा कर्मचारी संघ स्वागत करता है तथा निवेदन करता है कि जल्द से जल्द इसे अमलीजामा पहना कर नियमितीकरण किया जाये। मुख्यमंत्री के इस निर्णय से आदिवासी संगठन और बन्धु तिर्की इसका विरोध कर रहे हैं। जो एक तरफ से जायज भी है और 100% सत्य भी है। पर प्रखंडों और पंचायत में कार्यरत मनरेगा कर्मी शत प्रतिशत झारखंडी और खतियानी हैं। ग्राम रोजगार सेवक लगभग सभी मूलवासी हैं। ऐसे में मनरेगा कर्मियों के नियमितीकरण का विरोध करना कहीं से भी न्यायोचित नहीं है। राज्य में मनरेगा कर्मी 2007 से अपनी सेवा ग्रामीण विकास विभाग के अति महत्वाकांक्षी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम में सेवा देने के साथ-साथ ग्रामीणों से जुड़े सभी कार्यों को धरातल पर उतारने का काम करते आ रहे हैं। मनरेगा कर्मियों की नियुक्ति रोस्टर (आरक्षित) के आधार पर हुई। सभी सरकारी मापदंड का पालन करने के उपरांत इनकी नियुक्ति हुई है। झारखंड राज्य मनरेगा कर्मचारी संघ की वर्चुअल बैठक में निर्णय लिया गया कि जो भी हमारी नियमितीकरण पर अड़चन डालेगा, उसका विरोध किया जायेगा। मनरेगा कर्मियों ने एक स्वर में कहा कि अगले चुनाव में सबक सिखाने का काम करेंगे।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में प्रधानमंत्री प्रतियोगिता परीक्षा पर चर्चा का आयोजन

ओरमांझी (आजाद सिपाही)। प्रधानमंत्री प्रतियोगिता परीक्षा पर चर्चा का आयोजन सरस्वती विद्या मंदिर स्कुल ओरमांझी में किया गया। इस आयोजन के बारे प्रदेश युवा मोर्चा अध्यक्ष किसलय तिवारी ने बताया कि प्रधानमंत्री प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन खिजरी विधानसभा स्तरीय होगा। जिसमें नाइंथ क्लास से लेकर इंटरमीडिएट तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा ओरमांझी के एसएस हाई स्कूल खेल स्टेडियम में दिनांक 20.01.2023 को समय 10:00 से प्रारंभ किया जाएगा। प्रतियोगिता परीक्षा का समय 2.5 घंटे का होगा। इस परीक्षा में विभिन्न तरह के पेंटिंग का आयोजन किया जाएगा। उत्तीर्ण प्रतिभागियों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाएगा। इस बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश महामंत्री सह राज्यसभा सांसद प्रो आदित्य प्रसाद साहू, जिला अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार महतो, उपाध्यक्ष मानकी राजेंद्र साही, धीरज कुमार महतो, प्रीतम कुमार साहू, नेहा सिंह, अनिल कुमार टाइगर, प्रखंड प्रमुख अनुपमा देवी, मंडल अध्यक्ष दिलीप मेहता, महामंत्री अलखनाथ महतो, शशि भूषण साहू, मीडिया प्रभारी राज किशोर साहू, पंचायत समिति सदस्य ललिता देवी, मुखिया दीपक बड़ाइक, सुनील कुमार, निलमोहन पाहन, संतोष कुशवाहा, किरण देवी, दीपा चौरसिया, भानु प्रताप महतो, सुरेंद्र प्रजापति, रुपेश प्रजापति, धनंजय महतो, कामेश्वर महतो, आनंद महतो, जेठा नायक, शशि मेहता, भाजपा जिला उपाध्यक्ष विक्रांत तिवारी सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

मवि चकला के बच्चों ने किया राज्य संग्रहालय का भ्रमण

ओरमांझी (आजाद सिपाही)। राजकीय कृत मध्य विद्यालय चकला के वर्ग आठ के बच्चों को भारती फाउंडेशन के द्वारा खेल गांव स्थित राज्य संग्रहालय में शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। संग्रहालय में झारखंड के सभी 32 जनजाति परिवारों का रहन-सहन, वेशभूषा, पेशा आदि कई महत्वपूर्ण जानकारियां चित्रण के माध्यम दर्शाया गया है। इसके अलावे मुगल काल के सिक्के, झारखंड के विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों, झारखंड के विभिन्न जगहों से खुदाई में मिली हजारों वर्ष पुरानी मूर्तियां आदि अवलोकन कराया गया। मौके पर शिक्षक संघ के अध्यक्ष सह विद्यालय के सहायक शिक्षक सतीश बड़ाईक ने कहा कि राज्य संग्रहालय निश्चित रूप से शैक्षणिक भ्रमण के लिए उपयुक्त स्थल है। बच्चों को इस तरह के भ्रमण से पौराणिक काल के रहन सहन, परम्परा और पारंपरिक चीजों के बारे जानने का मौका मिलता है। इस अवसर पर विद्यालय के वरीय शिक्षिका निर्मला कुजूर, सुषमा कुमारी भारती फाउंडेशन के अभिषेक कुमार सहित काफी संख्या में बच्चे उपस्थित थे।

शिवधाम जलप्रपात में भव्य टुसू मेला लगा

सिकिदिरी (आजाद सिपाही)। टाटी पंचायत अन्तर्गत बड़कागढ़ा गांव स्थित शिव धाम जलप्रपात में भव्य टुसू मेला का आयोजन किया गया। मेला में बतौर मुख्य अतिथि जिप सदस्य अनगड़ा पूर्वी राजेन्द्र शाही मुण्डा, विशिष्ट अतिथि नवागढ़ मुखिया भुवनेश्वर बेदिया थे। मेला में मुख्य अतिथि ने कहा कि यह शिव धाम जलप्रपात बहुत ही खूबसूरत जगह पर स्थित है। इसे विकसित करने की आवश्यकता है। ताकि क्षेत्र के युवाओं को रोजगार से जोड़ा जा सकेगा। मेला में कुल नौ टुसू लाया गया था। उसमें से मानकी देवी चोकड़ बेड़ा का दल को प्रथम पुरस्कार 1300 रुपये एवं द्वितीय पुरस्कार 1100 रुपए नगद राशि प्रतिमा कुमारी आम्वाडीह के दल को दिया गया। बाकी सभी दलों को सांत्वना पुरस्कार पांच-पांच सौ रुपए देकर सम्मानित किया गया। मेला को सफल बनाने में समिति के अध्यक्ष रामसिंह मुण्डा, सचिव सुधू बेदिया, कोषाध्यक्ष महेन्द्र बेदिया, गपोश बेदिया, भीम बेदिया, बालेशवर बेदिया, दिनेश बेदिया, संतोष रजवार, धनेश्याम बेदिया, हरि नन्दन बेदिया, करम सिंह बेदिया, भीम मुंडा, सीताराम रजवार, चमन बेदिया, मकर सिंह मुंडा, अमर सिंह मुंडा एवं शंकर बेदिया आदि का अहम योगदान रहा।

जिप उपाध्यक्ष ने किया प्रेमा कार और बाइक पार्ट्स दुकान का उद्घाटन

जपला (आजाद सिपाही)। छतरपुर मुख्य पथ के अनुमंडल गेट के समीप प्रेमा कार एवम बाईक पार्ट्स दुकान का उद्घाटन जिप उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह,सकलदेव सिंह,प्रेमा देवी,छोटू सिंह आदि ने संयुक्त रुप से फीता काटकर किया। मौके पर प्रेमा कार एवम बाइक पार्ट्स दुकान के प्रोपराइटर छोटू सिंह द्वारा अतिथियों का माला पहनाकर स्वागत किया गया। मौके पर पलामू जिप उपाध्यक्ष टूटू सिंह ने ने कहा कि हुसैनाबाद में प्रेमा पार्ट्स दुकान खुलने से प्रखंड क्षेत्र के लोगों को काफी सुविधा होगी।उन्होंने कहा कि शहर में सुविधाओं का विस्तार जरूरी है।मौके पर दुकान के प्रोपराइटर छोटू सिंह ने बताया कि हमारे प्रतिष्ठान में कार एवम टू व्हीलर के स्पेयर पार्ट्स उचित मूल्य पर उपलब्ध है।मौके पर वार्ड पार्षद राजेन्द्र पाल, पप्पू सिंह,यमुना सिंह,सद्दाम हुसैन,अशोक सिंह,पंकज सिंह ,सोनल सिंह समेत कई लोग मौजूद थे।

पथरा मुखिया ने किया मध्य विद्यालय में स्कूली किट का वितरण

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। हुसैनाबाद प्रखंड क्षेत्र के उत्क्रमित मध्य बिद्यालय पथरा में झारखंड सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा स्कूल कीट दिया गया था जिसका वितरण पथरा पंचायत के मुखिया नरेश पासवान के द्वारा किया गया।उपस्थित मुखिया ने बिद्यालय के सभी वर्गों में बच्चो से मुलाकात करते हुए पढाई एवं सफाई देख कर काफी हर्षित हुए और बिद्यालय प्रबंधन की सराहना की। मौके पर मुखिया नरेश पासवान ने कहा कि यह स्कूल किट बच्चों के शिक्षण कार्य मे काफी मददगार साबित होगा।विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति लगाव बढ़ेगा और पढ़ाई में रोचकता आएगी।उन्होंने कहा की बच्चें बेहतर शिक्षा हासिल करके समाज और राष्ट्र के विकास मे अपनी महती भूमिका निभाए । साथ ही उन्होंने बच्चों को प्रतिदिन ससमय बिद्यालय पहुँचकर बेहतर तरीके से शिक्षण कार्य करने की अपील की। मौके पर शेख अंसारी,कवींद्र पासवान,धीरेंद्र चौधरी,शमीम बेगम समेत सैकड़ो की संख्या में छात्र-छात्राए मौजूद थे।

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय में छात्र-छात्राओं के बीच पोशाक वितरण

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। विश्रामपुर प्रखंड के बघमनवा पंचायत में स्थित राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय में आज छात्र-छात्राओं के बीच पोशाक का वितरण किया गया। छात्र-छात्राओं के बीच पोशाक का वितरण पंचायत की मुखिया मंजू देवी,समाजसेवी मनीष कुमार व वार्ड सदस्य रेणु देवी ने संयुक्त रूप से किया। प्रत्येक छात्र-छात्रा को दो सेट पोशाक के साथ एक स्वेटर व जुता-मोजा भी दिया गया। वितरण समारोह की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाध्यापक जितेंद्र राम व संचालन शिक्षक संतोष केशरी ने किया। मुखिया मंजू देवी ने कहा कि पोशाक से बच्चों में एक रूपता आती है। मौके पर गीता देवी,सतीश प्रकाश,अरविंद कुमार,प्रेमचन्द यादव,प्रवेश गुप्ता,प्रमोद चौधरी,कृष्णा विश्वकर्मा,गुड्डू यादव सहित कई लोग मौजूद थे।

क्षेत्रीय विधायक सिर्फ हवा हवाई की बात करते हैं : रंग बहादुर सिंह

सतबरवा/पलामू (आजाद सिपाही)। दुलसुलमा में मंगलवार को झामुमो उपाध्यक्ष रंग बहादुर सिंह की अध्यक्षता में ग्रामीणों की एक बैठक की गयी। बैठक में झामुमो कार्यकर्ताओं ने विधायक आलोक चौरसिया पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि 8 साल गुजर गए, विकास का नामोनिशान नहीं है। क्षेत्रीय विधायक सिर्फ हवा हवाई में बात करते हैं। झामुमो प्रखंड उपाध्यक्ष रंग बहादुर सिंह ने कहा कि दुलसुलमा पंचायत के मुरमा में विधायक के द्वारा वन भोज कार्यक्रम में बाहर से भाडा का आदमी लाया गया था। भाड़ा पर आदमी लाकर विकास का ढिंढोरा विधायक आलोक चौरसिया के द्वारा पीटा गया। दुलसुलमा पंचायत स्वर्गीय अनिल चौरसिया का गढ़ रहा है, हमेशा से इस पंचायत के लोग सत प्रतिशत चौरसिया परिवार के साथ खड़ा रहे हैं, पर सत्ता मिलने के बाद वे भूल गए। यहां के लोग अब उनके झांसे में आने वाले नहीं हैं। 2024 के चुनाव में समझ में आ जाएगा। जब से झारखंड में हेमंत सोरेन की सरकार बनी है,तब से विपक्ष के पेट में दर्द होंने लगा है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने झारखंड वासियों को उनका हक देने का काम कर रही है। इस मौके पर विजय सिंह, केदार सिंह, झमन सिंह, खेलावन सिंह समेत एक दर्जन लोग उपस्थित थे।

नेतरहाट में तीन दिवसीय सांसद खेल प्रतिस्पर्धा का आयोजन

सतबरवा/ पलामू (आजाद सिपाही)। लातेहार जिले के नेतरहाट में तीन दिवसीय सांसद खेल स्पर्धा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है, इसमें चतरा लोकसभा से 500 खिलाड़ी भाग लेंगे । उक्त बातें चतरा जिला के युवा मोर्चा अध्यक्ष सह चतरा लोकसभा खेल संयोजक अभिषेक केसरी ने सतबरवा में कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कही। इसमें बतौर मुख्य अतिथि चतरा सांसद सुनील सिंह मौजूद रहेंगे। चतरा लोकसभा संयोजक अभिषेक केसरी ने कहा कि पूरे भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर सांसद खेल स्पर्धा का आयोजन किया जा रहा है। मकसद है कि एथलीट में भारत खेल के हर विभाग में अव्वल रहे। इसके लिए खिलाड़ियों को निखारने व आगे लाने के लिए यह आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज जब एथलीट खेल में भारत के खिलाड़ी भाग लेते हैं, तब हमें सबसे नीचे पायदान पर रहना पड़ता है। उन्होंने कहा कि सतबरवा प्रखंड से 15 खिलाड़ी भाग लेंगे। खिलाड़ियों को सभी व्यवस्था के साथ नेतरहाट में पहुंचाया जाएगा साथ ही उन्हें खेल किट दिया जाएगा। खाने पीने की सारी व्यवस्था वहां पर है। खेल 18,19,20 जनवरी को होगी। इस मौके पर चतरा सांसद के सतबरवा प्रतिनिधि सोनू सिकंदर, पांकी विधानसभा प्रतिनिधि धीरज प्रसाद, युवा मोर्चा पलामू जिला मंत्री विकास तिवारी, डॉ मनोज, मनोज भुईयां सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

नववर्ष में विधायक ने क्षेत्र को तीन के बाद पांच सड़कों का दिया तोहफा : सूर्या सिंह

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। हुसैनाबाद हरिहरगंज विधानसभा क्षेत्र में वर्ष 2009 से 2019 के बीच कितना विकास हुआ और 2019 के बाद हुसैनाबाद हरिहरगंज में कितना विकास हो रहा है। जनता को आकलन करने की जरूरत है। विधायक कमलेश कुमार सिंह जो कहते हैं, उसे पूरा करने में लग जाते हैं। यही वजह है की हुसैनाबाद की जनता उन्हे विकास पुरुष के नाम से जानती है। उक्त बातें एनसीपी के झारखंड प्रदेश प्रवक्ता सूर्या सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कही। उन्होंने कहा कि विधायक कमलेश कुमार सिंह की विकासशील सोच और अथक प्रयासों का नतीजा है की हुसैनाबाद विधानसभा की इस वर्ष के शुरूआत में तीन सड़कों के बाद पांच महत्वपूर्ण सड़कों की स्वीकृति मिली है। जिन सड़कों की स्वीकृति मिली है उसमे हरिहरगंज प्रखंड के तेतरिया भाया बनस्पति, तेंदुआ कला से हल्का रोड होते हुए जगदीशपुर तक, हैदरनगर प्रखंड के जीन ताड़ मोड़ से रमजिता पांती होते हुए सिघना तक, हैदरनगर- जपला मुख्य पथ निमियादोहर से सरगड़ा ,बिलासपुर,नौडीहा, पतरिया, बभंडी होते हुए हैदरनगर हाई स्कूल तक, हुसैनाबाद प्रखंड के उपरी कला मोड़ से ऊपरी खुर्द होते हुए कोसी, चनकार गोपाल , अलीनगर तक सड़क निर्माण शामिल है।

स्वर्गीय मनी बाबू को भुलाया नहीं जा सकता : महापौर

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। नगर निगम की महापौर अरुणा शंकर ने बोर्ड द्वारा पारित वेटरनरी हॉस्पिटल चौक का नामकरण स्वर्गीय अनिल कुमार सिन्हा उर्फ मनी बाबू के नाम करते हुए कहां कि मृदुभाषी व्यक्तित्व के मालिक मनी बाबू को हम सब पूरा मोहल्ला मनी भैया के नाम से पुकारा करते थे और वे हम सबों को हमेशा भाई का स्नेह जीवन भर देते रहे। उन्होंने कहा कि मुझे याद है कि मोहल्ले में किसी के यहां कोई भी दिक्कत या कष्ट हुआ करता था तो वह स्वयं अपने चंद कमाई से यथासंभव मदद किया करते थे जिसकी जानकारी हम सबको बाद में होती थी। मनी भैया आज उनकी याद में इस चौक का नाम कर मैं, मेरे भाई उप महापौर मंगल जी एवं प्रदीप अकेला जी गौरवान्वित महसूस कर रहे है। महापौर ने कहां कि समाज ऐसे ऐसे सामाजिक शख्सियत को हमेशा याद रखे इसी उद्देश्य से कई रोडो का नामकरण किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वर्गीय अनिल कुमार सिन्हा के बेटे एवं परिवार के सदस्य मनोज कुमार सिन्हा, विवेक कुमार सिन्हा, मोनिका सिन्हा, अनीता सिन्हा, सुशील प्रकाश के अलावे संजय सिंह, रवि सिंह, प्रभाकर जी, सतीश जी, संजय श्रीवास्तव, अर्जुन, मेयर प्रतिनिधि सुनील गुप्ता, फिरोजउद्दीन अंसारी तथा काफी संख्या में लोग उपस्थित थे। सभी लोगों ने पुराने लोगों की याद में मार्ग, चौक, चौराहा का नामकरण महापौर द्वारा किया जाने को काफी सराहा।

जिला परिषद बोर्ड की बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिला परिषद बोर्ड की बैठक मंगलवार को समाहरणालय के ब्लॉक-सी के सभागार में जिप अध्यक्ष प्रतिमा कुमारी की अध्यक्षता में हुई। सभागार में जिला परिषद उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह व डीडीसी सह मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी रवि आनंद समेत सभी सदस्य सहित विभिन्न पदाधिकारी शामिल हुए। सर्वप्रथम बैठक में 22 नवंबर को संपन्न हुए बैठक में लिये गये निर्णयों एवं अनुपालन के विषय पर चर्चा किया गया। इसके पश्चात विभिन्न विभागों की विस्तृत रूप से समीक्षा की गयी। बैठक में रोटरी क्लब के सामने के दुकानों को मार्केटिंग कॉम्प्लेक्स के रूप में विकसित करने को लेकर निर्णय लिया गया साथ ही जिला परिषद कार्यालयों में कर्मियों की कमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार कर्मियों को बहाल किए जाने के संबंध में निर्णय लिया गया। बैठक में सदस्यों ने ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली उपभोक्ताओं को विभाग द्वारा दो-दो बिजली बिल दिये जाने की बात कही गयी साथ ही विभाग द्वारा उपभोक्ताओं पर दो-दो बिजली बिल का भुगतान नहीं करने पर प्राथमिकी दर्ज भी की जा रही है। इस पर बैठक में उपस्थित बिजली विभाग के सहायक अभियंता को पूरे मामले की जांच कर आवश्यक प्रतिवेदन उपलब्ध करवाने हेतु निर्देशित किया गया। इसी क्रम में 15वें वित्त की राशि के योजनाओं को पूर्ण कर राशि का शत प्रतिशत व्यय करने का निर्णय लिया गया। जिला शिक्षा अधीक्षक को विद्यालयों में शिक्षकों की कमी दूर करने की दिशा में काम करने हेतु निर्देशित किया गया। इसी तरह सामाजिक सुरक्षा, बिजली विभाग, शिक्षा विभाग, समाज कल्याण, भूमि संरक्षण, कृषि विभाग,आपूर्ति विभाग व अन्य विभागों के अन्यान विषयों की समीक्षा की गयी।

अनुबंध स्वस्थ्य कर्मी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर, स्वास्थ्य व्यवस्था प्रभावित

आजाद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर(पलामू)। विश्रामपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अनुबंध पर कार्यरत सभी स्वास्थ्य कर्मी छः सूत्री मांगों के समर्थन में अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले गये है। जिससे स्वास्थ्य व्यवस्था प्रभावित हुआ है। आज अनुबंध कर्मियों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के मुख्य द्वार पर धरना भी दिया। धरना पर बैठे स्वास्थ्य कर्मियों ने कहा कि राज्य सरकार वादे से मुकर रही है। जिसके चलते आंदोलन का रुख अख्तियार करना पड़ा। उन्होंने कहा कि वर्षो से सेवा देने के बावजूद भी स्थायीकरण नही किया जा रहा है। अल्प मानदेय के साथ अनुबंध पर रखा गया है। जबकि सरकार व विभाग ने संघ से वार्ता के दौरान स्थायीकरण का वादा किया था। एनआरएचएम कर्मियों ने सरकार से स्थायी नियुक्ति हेतु प्रक्रिया शुरू कराने का मांग किया है। अन्यथा हड़ताल अनवरत जारी रखने का आह्वाहन किया। धरना पर बैठने वालों में एएनएम आयशा खातून, रीता कुमारी, प्रतिमा कुमारी, पूनम कुमारी, सुमन कुमारी, सोनम कुमारी, पूर्णिमा पांडेय, अनिता कुमारी, एचडी संतोष कुमार, पंकज कुमार पांडेय, पंकज कुमार सिंह, मिनहाज आलम, सौरभ शुक्ला सहित सभी स्वास्थ कर्मी शामिल थे।

समाजसेवी आत्मानंद चौबे की तीसरी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

आजद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर(पलामू)। विश्रामपुर विस क्षेत्र के प्रसिद्ध समाजसेवी स्वड्ड आत्मानंद चौबे की तीसरी पुण्यतिथि पर उन्हें नमन किया गया। इस मौके पर आत्मानंद चेरिटेबल ट्रस्ट आत्ममन द्वारा रेहला में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा मे उनके परिजनों,प्रसाशनिक अधिकारियों व गण्यमान्य लोगो ने स्वड्ड चौबे के चित्र पर श्रद्धा-सुमन अर्पित किया। स्वड्ड चौबे के सम्मान में दो मिनट का मौन भी रखा गया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता स्वड्ड चौबे के तृतीय पुत्र मुनमुन चौबे व संचालन सतीश चौबे उर्फ बालाजी चौबे ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्रामपुर एसडीपीओ सुरजीत कुमार ने कहा कि स्व.चौबे समाज के लिए एक प्रेरणा थे। उनके द्वारा किए गए पुण्य कार्य से ही उनका परिवार आज सफलता की राह पर अग्रसर है। गढ़वा डीआरडीईटी के निदेशक दिनेश सोरेन ने आत्मानंद चौबे के जीवन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। मुनमुन चौबे ने बताया कि आत्ममन के माध्यम से शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई कार्य चलाया जा रहा है। संत तुलसीदास डिग्री कॉलेज में पुस्तकालय भी खोला गया है। कार्यक्रम के दौरान दस गांव के 200 अभावग्रस्त लोगों के बीच कंबल वितरित किया गया। इसके अलावा आत्मानंद स्मृति छात्रवृति योजना की भी शुरूआत हुई। जिसके तहत पांच मेधावी छात्र छात्राओं को मेडल, प्रशस्ति पत्र व छात्रवृति की राशि दी गई। कंबल व छात्रवृति के राशि का वितरण एसडीपीओ सुरजीत कुमार, डीआरडीए निदेशक दिनेश सोरेन, पुलिस निरीक्षक अजय कुमार सिंह, भाजपा नेता विभाकर नारायण पांडेय, सीएस दुबे,थाना प्रभारी नेमधारी रजक,कांग्रेस नेत्री पूर्णिमा पांडेय व डॉ वीपी शुक्ला ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर भंडारा का भी आयोजन किया गया था। जिसमे सैकड़ो लोगो ने भोजन ग्रहण किया। मौके पर सांसद प्रतिनिधि अनुज पांडेय,पूर्व प्रमुख संतोष चौबे, समाजसेवी गुलाम नवी अंसारी, राजेश चौबे, मनोज चौबे उर्फ बबलू चौबे, शशिनाथ चौबे,गामा चौबे, टुनटुन चौबे, राघवेंद्र चौबे, उमाकांत चौबे, सचिन चौबे, विजय कृष्ण सिंह, शिक्षक मनोज द्विवेदी, भोला राय, संतोष मिश्रा, मुखिया अंजू देवी, रवि शंकर चौबे, चंद्रप्रकाश चौबे,अभिषेक भारद्वाज, बबन सिंह, अशोक चौबे, पद्माकर पाठक, अलका पाठक, ओमी चौबे, डब्लू यादव सहित कई लोग मौजूद थे।

शैक्षणिक भ्रमण से बच्चों में आत्म विश्वास बढ़ता है : अविनाश देव

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर के प्रतिष्ठित संत मरियम स्कूल के छात्र-छात्राएं शैक्षणिक भ्रमण पर राजगीर तथा नालंदा पहुंचे जहां उन्होंने शैक्षणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल की जानकारी ली। बच्चों ने म्यूजियम में इतिहास की जानकारी जुटाई जहां धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया। वही शैक्षणिक जानकारियां भी हासिल की। शैक्षणिक भ्रमण के दौरान एक साथ भोज का भी जमकर लुत्फ बच्चों ने उठाया। इस शैक्षणिक भ्रमण में स्कूल के चेयरमैन अविनाश देव स्वयं उपस्थित थे। इस शैक्षणिक भ्रमण में चेयरमैन अविनाश देव ने स्कूल से जुड़े शिक्षक, शिक्षिकाएं, स्कूली बच्चों को कई महत्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण कराया और उसके बारे में जानकारी दी। जिससे बच्चों को बहुत ही बेहतर जानकारियां हासिल हुई जो उनके भविष्य में काम आएगा।

शैक्षणिक यात्रा से बच्चे हुए लाभान्वित

शैक्षणिक यात्रा में बच्चों के लिए सुखद संजोग यह रहा कि बच्चे दशरथ मांझी के अथक परिश्रम के द्वारा काटे गए पहाड़ में बने रास्तों को देखने पहुंचे वहां उनकी मुलाकात उनके बेटे भागीरथ मांझी से हुई । स्कूल की पूरी टीम ने उनका भव्य स्वागत किया। मौके पर सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए स्कूल के चेयरमैन अविनाश देव ने कहा कि एक साधारण व्यक्ति भी जब किसी कार्य को करने की ठान लेता है तो उसके जिंद के आगे सारी मुश्किलें पस्त हो जाती है और वह उस कार्य को पूरा कर ही देता है। लगातार कई वर्षों तक पहाड़ को काटते काटते आखिरकार दशरथ मांझी ने रास्ता बना ही दिया और उस वक्तव्य को सही साबित किया कि जब तक तोड़ेंगे नहीं तब तक छोड़ेंगे नहीं।

सभी बच्चों ने पूरी शैक्षणिक यात्रा का आनंद उठाया

पूरे यात्रा पर अपना मंतव्य देते हुए वर्ग दसवीं के विद्यार्थी सुशील कुमार ने बताया कि बोधगया जैसे पावन स्थलों पर जाने के पश्चात हमने जाना कि करोड़पति इंसान भी आम जनमानस की तरह जीवन यापन कर रहा है। पैसे का कोई घमंड नहीं है, यहां लोग द्वेष,ईर्ष्या,प्रपंच,झूठ से कोसों दूर है। बच्चों ने स्कूल के चेयरमैन अविनाश देव, प्राचार्य तथा सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का आभार व्यक्त किया है कि जिनके कुशल निर्देशन में इस यात्रा का लाभ उन्हें मिला।

कार्यालय, उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी, पलामू

दूरभाष (मो0) सं0- 8987263405 (जिला भू-अर्जन शाखा) Email:- dlaopalamau@gmail.com

KHATIAN AND VALUATION STATEMENT

(3G Award के तहत् घोषित)

Name of Project :- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–75 (Section-III)

(पलामू जिला अन्तर्गत कि0मी0 147.450 (भोगू) से कि0मी0 196.870 (शंखा) NH-75 पर 4 लेन पथ निर्माण।)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकार (NHAI 75) (कि0मी0 147.450 भोगू से कि0मी0 196.870 शंखा तक पथ का 4 लेन निर्माण हेतु अधिनियम की धारा–3G के तहत् घोषित निम्न विवरणी के अनुसार भूमि अर्जन की जा रही है। तद्नुसार उक्त विवरणी के आलोक में संबंधित रैयत साक्ष्य के साथ अपना दावा/आपत्ति एक सप्ताह के भीतर जिला भू–अर्जन कार्यालय, पलामू में दर्ज करना सुनिश्चित करें। उक्त अवधि के पश्चात् प्राप्त दावा/आपत्ति पर जिला भू–अर्जन कार्यालय विचार करने हेतु बाध्य नहीं होगा।

एन0एच0ए0आई0–75 अन्तर्गत मौजा–पोखराहा कला, थाना–मेदिनीनगर, थाना नं0–204

पत्रांक– 15 (E)/भू0अ0, दिनांक– 07.01.2023

क्र0 स0	ग्राम का नाम	खाता	प्लॉट	अर्जनाधीन रकबा एकड़ में	किस्म	अर्जित भूमि एकड़ में	क्रमांक एवार्ड	एवार्डधारी का नाम पिता के साथ	अभियुक्ति
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	पोखराहा कला	21	1405	0.0037	धान	0.0037	1	इन्द्रदेव सिंह व प्रसाद सिंह पिता अकलु सिंह पिता फकीरचंद सिह, बिरबल सिंह, वैद्यनाथ सिंह, जवाहर, जवाहर सिंह पे0 सीता सिंह पे0 रामजीत सिंह प्रेम सिंह व अर्जुन सिंह पिता नेमन सिंह पिता मनोहर सिंह पिता रामजीत सिंह, अन्त सिंह व राजो कुंवर पिता नन्हकु सिंह पे0 रामजीत पिता नन्हक सिंह	
		21	1440	0.2191	धान	0.2191		तदैव	
		21	1441	0.0835	धान	0.0835		तदैव	
2		22	1376	0.4087	टांड़	0.4087	2	उमेद, धर्मराज, अमर दयाल, लखन पे0 सुदामा पे0 जगेशर भुइयां छोटन भुइयां पिता जगेश्वर भुइयां, धनु भुइयां, शिवकुमार, राजेश, दशरथ, सकेन्द्र पे0 सुखदेव भुइयां पे0 जगेशर भुइयां मालती पे0 रघु पे0 भगेशर भुइयों तपेशर, डोमन, संजय पे0 विगन पे0 भगेश्र भुइयां	
		22	1389	0.4284	टांड़	0.4284		तदैव	
3		3	1467/P	0.1700	धान	0.1700	3	किरण टोप्पो पति प्रेम प्रकाश	
4		3	1467/P	0.0200	धान	0.0200	4	प्रतीमा कुमारी पति प्रदीप उरांव	
5		29	1437 P 1648	0.1000	टांड़	0.1000	5	पार्वती देवी पति साधुशरण सिंह	
		29	1454	0.0135	धान	0.0135		तदैव	
6		34	1378	0.2060	टांड़	0.2060	6	बुधन भुइयां पे0 प्यारी भुइयां पे0 महराज भुइयां, सुरेन्द्र, भोला पे0 अर्जुन भुइयां पे0 जगत देवी, पे0 हुसैनी भुईयां पे0 लुची,	
		34	1391	0.1912	टांड़	0.1912		तदैव	दिलबसिया देवी, पति बाबो महतो उर्फ रामखेलावन महतो के नाम से पंजी–II के हो0सं0 26/V पर जमाबंदी कायम है।
7		26	1379/P	0.0750	टांड़	0.0750	7	महारानी देवी पति कतवारु राम	
8		49	1251	0.1109	टांड़	0.1109	8	रामनाथ सिंह पे0 टोहा सिंह पे0 देवधारी सिंह, पाखो सिंह पे0 तेजु सिंह पे0 देवधारी सिंह, भनु सिंह पे0 नान्हु सिंह पे0 शिवधारी सिंह, सुर्यदेव सिंह व युगेश्वर सिंह पे0 धुमन सिंह पे0 अकलु सिंह	
9		41	1374	0.3965	टांड़	0.3965	9	रामदास सिंह वल्द गुठल सिंह	भनु सिंह, पिता मथुरा सिंह
10		49	1380	0.6876	टांड़	0.6876	10	रामनाथ सिंह पे0 टोहा सिंह पे0 देवधारी सिंह, पाखो सिंह पे0 तेजु सिंह पे0 देवधारी सिंह, भनु सिंह पे0 नान्हु सिंह पे0 शिवधारी सिंह, सुर्यदेव सिंह व युगेश्वर सिंह पे0 धुमन सिंह पे0 अकलु सिंह	
11		3	1467/P	0.1500	धान मकान	0.1500	11	राजेश्वर सिंह व देवेन्द्र सिंह पिता तपेश्वर सिंह पे0 अलियार सिंह	दीपक टोप्पो पिता बनेडिक टोप्पो, केवाला से प्राप्त हुआ है, नामांतरण नहीं हुआ है।
		3	1467/P	0.3739	धान	0.3739		तदैव	
12		29	1400	0.4702	धान	0.4702	12	रामदेव सिंह व रामबदन सिंह, शंकर सिंह पे0 भोला सिंह पे0 डोमन सिंह, जगत सिंह पे0 केसो सिंह, पचु सिंह पे0 प्रमेश सिंह राजदेव सिंह व अनिल सिंह व हरिहर सिंह व रघुवंश सिंह पिता महेश सिंह पिता रामकृश सिंह, सुषमा देवी व फुदनी कुंवर पे0 गोविन्द सिंह पे0 प्रगाश सिंह हरखु सिंह पे0 राधा सिंह पे0 तिलकधारी सिंह	
		29	1403	0.5359	धान	0.5359		तदैव	
		29	1437/1648 /P	0.2696	टांड़	0.2696		तदैव	
		29	1438	0.0284	टांड़	0.0284		तदैव	
		29	1454/1653	0.1020	धान	0.1020		तदैव	
		29	1469	0.1675	धान	0.1675		तदैव	
13		44	1442	0.2903	धान	0.2903	13	राधीका सिंह, कुलदीप सिंह पे0 कमेशर सिंह पे0 बरत सिंह, गणेश सिंह, गिरवर, कमलेश, धर्मदेव, नंन्दकेश्वर पिता मेघनाथ सिंह वो साधुशरण सिंह, पे0 चित्रभान सिंह पे0 जितन सिंह, निहोरा, फागु, महंगु पे0 वासुदेव सिंह पे0 पवन सिंह पे0 तुफानी सिंह, छइन सिंह पे0 स्व0 निर्मल सिंह पे0 बासुदेव पे0 पवन पे0 धर्मदेव पे0 तुफानी सिंह, श्रवण पे0 नंदूदेव पे0 परमेश्वर पे0 तुफानी ससिह बंध पे0 परमेश्वर पे0 तफानी, अनिल सिह पे0 कोदू पे0 परमेश्वर पे0 तुफानी सिंह	
14		14	1450	0.1900	धान	0.1900	14	रामचंद्र सिंह पिता पालो सिंह पिता महाबीर सिंह पिता छतरपति सिंह, मुनेश्वर सिंह पिता दसु सिंह, पिता छतरपति सिंह, सुरेन्द्र सिंह पिता प्रवेश सिंह पिता कन्हाई सिंह पिता छतरपति सिंह	
		14	1451	0.1662	धान	0.1662		तदैव	
		14	1468	0.0899	धान	0.0899		तदैव	
15		7	1377	0.4730	टांड़	0.4730	15	विश्वनाथ साव वो जगरनाथ साव वो वैद्यनाथ साव पिता दशरथ साव	
		7	1382	0.5700	टांड़	0.5700		तदैव	
16		3	1467/P	0.1875	धान मकान	0.1875	16	सुमन कुजुर पिता सुलेमान कुजुर	
17		26	1379/P	0.0750	टांड़	0.0750	17	सरयु राम व लक्ष्मण राम पिता महादेव राम	
18			1253	0.3575	टांड़	0.3575	18	अज्ञात	
			1375	0.2226	टांड़	0.2226		अज्ञात	मुनेश्वर मोची, पिता भिखारी मोची
		26	1379/P	0.1136	टांड़	0.1136		अज्ञात	
			1385	0.7489	टांड़	0.7489		अज्ञात	
			1398	0.3758	टांड़	0.3758		अज्ञात	अर्जुन सिंह, पिता नेमन सिंह, कागजात नहीं है, सिर्फ दखल–कब्जा है।
			कुल	9.0719	कुल	9.0719			

कानूनगो, जिला भू–अर्जन कार्यालय, पलामू।

जिला भू–अर्जन पदाधिकारी पलामू।

अपर समाहर्त्ता पलामू।

उपायुक्त, पलामू।

PR 287650 Land Reforms (22-23)_D

जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में

जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए देश के सभी राज्यों में चलेगा हस्ताक्षर अभियान

कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून सभी धर्मों पर समान रूप से लागू किए जाने की जरूरत

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो : हस्ताक्षरयुक्त पत्रों को फाउंडेशन देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सौंपेगी। 18 जनवरी को रामगढ़ में जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के प्रदेश कार्यसमिति की बैठक होनी है। जिसके तरह बोकारो से रामगढ़ जाने के क्रम में आज रेलवे स्टेशन पर जनसंख्या फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल चौधरी, राष्ट्रीय संयोजक ममता सैगल, राष्ट्रीय महामंत्री कृष्ण मुरारी का स्वागत किया। इस अवसर पर जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल चौधरी ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या देश के विकास में बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। भारत से क्षेत्रफल की दृष्टि में तीन गुना अधिक बड़े पड़ोसी देश चीन ने पहले ही हम दो, हमारे दो... नीति को अपनाया और अब हम दो हमारे एक नियम को कड़ाई से लागू किया है। आज चीन विश्व की महाशक्ति बन गया है, जबकि भारत आज भी गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, अशिक्षा, प्रदूषण और अपराध से लड़ रहा है। कहा कि कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून सभी धर्मों पर समान रूप से लागू किए जाने की जरूरत है, तभी हमारा देश वैश्विक महाशक्ति के रूप में खुद को स्थापित कर पायेगा।

जनसंख्या समाधान फाउंडेशन की तरफ से जिला अध्यक्ष सह हस्ताक्षर अभियान प्रभारी महेन्द्र राय के नेतृत्व में बोकारो जिला के विभिन्न क्षेत्रों में हस्ताक्षर अभियान चलाकर बढ़ती जनसंख्या के कुप्रभाव से आमजनों को जागरूक भी किया। अपनी धर्म संस्कृति का प्रचार प्रसार जरूरी। सनातन संस्कृति प्रचार प्रसार,उसकी रक्षा के लिए हम सभी को जागरूक होना चाहिए। आज जिस तरह सनातन संस्कृति पर प्रहार हो रही वह निंदनीय है उसके विरोध में हम सभी की एकजुटता जरूरी है। जिला अध्यक्ष ने कहा कि संगठन देश के सभी जिलों में करोड़ों लोगों के सहयोग और समर्थन के साथ जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग सरकार के समक्ष रख रहा है। स्वागत करने वालों में अर्जुन सिंह, घनश्याम आनंद, विक्रम गोस्वामी,रंजीत गुप्ता, सुनील सिंह, मोतीलाल गुप्ता, कृष्णा केवट, राजू गुप्ता, रवि गोस्वामी मौजूद रहे।

भाजपा नेत्री रागिनी ने मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

धनबाद (आजाद सिपाही)। दो दिन पूर्व धनबाद के गोल्फ ग्राउंड में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में नवविवाहित 80 जोड़ों को रोजगार एवं सरकारी सुविधा उपलब्ध कराने के संबंध में मंगलवार को भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रागिनी सिंह ने राज्य के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सामूहिक विवाह के तहत नव दांपत्य जोड़ो के सुखमय जीवन को लेकर विशेष प्रावधान के तहत रोजगार देने की मांग की। सर्वधर्म सामूहिक विवाह के आयोजन से कइयों की जिंदगी बढ़ाने का काम किया, जिससे जिले के साथ-साथ राज्य का भी नाम बढ़ा है। इसके लिए आयोजनकर्ताओं, जिला प्रशासन, शहर के उद्योगपतियों एवं व्यवसायियों का सहयोग अति सराहनीय है। जिन्होंने धनबाद ही नहीं पूरे झारखंड का मान सम्मान बढ़ाया। उन्होंने पत्र के माध्यम से मुख्यमंत्री से आग्रह किया है कि सामूहिक विवाह करने वाले इन जोड़ों को रोजगार देने की दिशा में पहल होनी चाहिए इसके साथ-साथ इन्हें रोजगार के लिए राज्य सरकार के अधिकृत बैंको को ऋण उपलब्ध करायी जाये। सामूहिक विवाह में आयोजकों द्वारा दिए गये विवाह प्रमाण-पत्र के आधार पर शिक्षा में भी प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

तेतुलमारी पुलिस और सीआइएसएफ ने छापेमारी कर 15 टन अवैध कोयला सहित ऑटो को पकड़ा

तेतुलमारी/कतरासः तेतुलमारी पुलिस और सीआइएसएफ टीम ने मंगलवार को संयुक्त रूप से छापेमारी कर पांडेडीह 6 नंबर बस्ती से लगभग 15 टन अवैध कोयला सहित कोयला लोड टेम्पू को जब्त कर माइंस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर धंधेबाजों की तलाश में जुट गयी। ज्ञात हो कि गुप्त सूचना के आधार पर स्थानीय पुलिस और बीसीसीएल एरिया 4 की सीआईएसएफ टीम ने संयुक्त रूप से मंगलवार अहले सुबह पांडेडीह 6 नंबर बस्ती में छापेमारी कर 15 टन अवैध कोयला को जब्त किया हालांकि पुलिस आने से पूर्व ही धंधेबाज भागने में सफल रहे, लेकिन कोयला लोड टेम्पू संख्या जेएच 10 बीएक्स 0621 को छोड़ भागे। जिसे पुलिस ने जब्त कर थाना ले आयी और वहीं अवैध कोयला को सीआईएसएफ टीम ने हाइवा के माध्यम से बीसीसीसीएल प्रबंधन को सुपुर्द किया। देर शाम तक प्रबंधन के द्वारा थाना में कोई भी शिकायत नही दिया गया है। कहा जा रहा है बार-बार हो रही छापेमारी में बीसीसीसीएल प्रबंधन लिखित शिकायत देने के बजाय मौन हो जाती है ,जिस कारण प्रशासन और सीआइएसएफ टीम का मनोबल गिर जाता है और धंधेबाजों का मनोबल बढ़ जाता है।

भाजपा नेत्री रागिनी पर आस्था जताते हुए दर्जनों युवाओं और महिलाओं ने थामा भाजपा का दामन

झरियाः झरिया सिंह नगर भुइयां पट्टी के दर्जनों युवाओं व महिलाओं ने मंगलवार को चंदन सिंहा के नेतृत्व में कांग्रेस छोड़कर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रागिनी सिंह पर अपनी आस्था व्यक्त करते हुए भाजपा में शामिल हुए। श्रीमती सिंह ने सभी को माला एवं पट्टा पहनाकर भाजपा की सदस्यता दिलाई और सभी को मिठाई खिलाकर खुशी व्यक्त की। श्रीमती सिंह ने सभी सम्मानित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि वह हमेशा उन लोगों के साथ हर सुख दुख में खड़ी हैं और आगे भी खड़ी रहेंगी। संचालन भाजपा नेता अभिषेक पाण्डेय ने किया। मौके पर धनबाद महानगर जिला उपाध्यक्ष उमेश यादव,पिंकू चौबे,शैलेंद्र सिंह,अखिलेश सिंह,रघु राम,रंजीत रवानी,स्वरूप भट्टाचार्य वही भाजपा में शामिल होने वाले लोगो में सूरज कुमार,विजय कुमार, श्याम कुमार, सौरभ कुमार, दिलीप भुईयां, राजकुमार भुइयां, अजय कुमार भुइयां,गेंडा भुइयां,विकी कुमार,रेखा देवी के अलावा सैकड़ों की संख्या में महिलाए एवं युवा साथी मौजूद थे।

जिला ओबीसी कांग्रेस कमेटी कार्यकारिणी की बैठक संपन्न, संगठन को मजबूत करने का लिया संकल्प

धनबादः धनबाद जिला कांग्रेस कार्यालय में मंगलवार को धनबाद जिला ओबीसी कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रीतम रवानी के तत्वावधान में कार्यकारिणी की बैठक हुई। इस दौरान धनबाद जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष राशिद अंसारी का स्वागत किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष ने कहा कि हाथ से हाथ जोड़ो कार्यक्रम को सफल बनाना एवं ओबीसी संगठन को और ज्यादा से ज्यादा मजबूत करना है ताकि जिले में कांग्रेस सशक्त और सिरमौर बने। मौके पर धनबाद जिला ओबीसी कांग्रेस के उपाध्यक्ष फैज अहमद, संजीव चौहान, महामंत्री कुंदन यादव, रंजीत कुशवाहा,निवारण महतो,राजमणि देवी,रेखा साहब,मुकेश कुमार साह,हुलास रवानी,श्यामल भंडारी, संजय चौहान, माया देवी,हीरा नोनिया,राजू महतो,डालूराम महतो,चंदन राणा, नवल किशोर यादव,वीरेंद्र साहू आदि उपस्थित थे।

एपेक्स के उपाध्यक्ष को किया गया सम्मानित

कतरास बाजारः मोदीडीह कोलियरी कार्यालय परिसर में एक सादे समारोह का आयोजन कर सिमेवा के प्रतिनिधियो ने कोल इंडिया एपेक्स बॉडी (ऑफिसर एसोसिएशन) के नव निर्वाचित उपाध्यक्ष मोदीडीह कोलियरी के पीओ अरविंद कुमार झा का मंगलवार को अभिनंदन किया। कार्यक्रम के दौरान सिमेवा के प्रतिनिधियो श्री झा को शॉल तथा फूलों के बुके देकर सम्मानित किया। मौके पर वक्ताओं ने पीओ श्री झा के क्रियाकलापो की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि इनके कोल इंडिया स्तर पर उपाध्यक्ष चुने जाने पर हम सभी लोगो का मान सम्मान मे बढ़ोतरी हुआ है। वही अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए श्री झा ने कहा कि यह सम्मान का असली हकदार यहाँ के सभी कर्मचारी ,अधिकारी तथा संघ के लोग है।आज जिस पद पर मै निर्विरोध चुना गया हुआ हूं। यह आप सभी असीम प्यार और सनेह के कारण ही हो पाया है।कहा कि अधिकारी के साथ-साथ मै मजदूरो की भी समस्या मे तन मन धन से उनके साथ सदैव बना रहूंगा। मौके पर सिमेवा के बीसीसीएल जोन के महासचिव आदित्यनाथ झा,केन्द्रीय कोषाध्यक्ष मजहर अंसारी,रामेश्वर दुसाध, नीरज गुप्ता,इन्द्रदेव भुईयाँ अमर चौधरी आदि मौजूद थे।

चंदनकियारी विधायक ने किया पीसीसी सड़क का शिलान्यास

पिंड्राजोरा। विधायक मद से चास प्रखंड के कुरा पंचायत अंतर्गत मगनपुर गांव के हरि मंदिर से नीचे कुल्ही तक बनने वाली पीसीसी सड़क का शिलान्यास मंगलवार को चंदनकियारी विधायक अमर कुमार बाउरी ने नारियल फोड़कर किया। शिलान्यास समारोह में उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि बरसात के दिनों में लोगो को चलना दुर्भर हो जाता था। लोगों को इस पार से उस पार जाने के लिए काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। गांव के छोटे छोटे बच्चों को स्कूल जाने के लिए रोक दिया जाता था। ग्रामीणों के विशेष मांग और स्थिति को देखते हुए डीएमएफटी मद् का राशि मगनपुर को उनकी सुविधा के लिए दिया गया। मौके पर चास प्रमुख बेला देवी जयदेव राय,करमचांद राय, शिवप्रसाद राय,विपदतारोणी उपाध्याय,अनुप पाण्डेय,मंजु देवी राय,भगतु राय,झाबु राय आदि उपस्थित थे।

वेदांता-ईएसएल आर्चरी अकादमी की यावना ने नेशनल्स में अपना परचम लहराया

बोकारो 17 जनवरी 2023 - वेदांता-ईएसएल तीरंदाजी अकादमी की युवा तीरंदाज यावना यादव ने आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में आयोजित राष्ट्रीय तीरंदाजी टूर्नामेंट (एनटीपीसी) में अप्रतिम प्रदर्शन किया। 15 जनवरी 2023 को भारतीय तीरंदाजी संघ द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में यावना ने रजत पदक हासिल किया। अंडर-9 श्रेणी में भाग लेते हुए यावना यादव ने विभिन्न राज्यों की 141 अन्य महिला तीरंदाजों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा की और टूर्नामेंट में शीर्ष रैंक धारकों में शामिल हो गईं। मूलीडीह, धनबाद की रहने वाली यावना का पदक जीतने का लम्बा इतिहास रहा है - जिला, अंतर-राज्यीय और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इन्होंने कांस्य से लेकर स्वर्ण तक जीता है। यावना एक प्रतिभाशाली तीरंदाज है जो 2020 से ईएसएल तीरंदाजी अकादमी में अनुभवी प्रशिक्षकों के अधीन प्रशिक्षण ले रही है और विभिन्न टूर्नामेंटों में झारखंड राज्य को गौरवान्वित कर रही है। यावना अकादमी के प्रत्येक तीरंदाज को अपने खेल में हमेशा शीर्ष पर रहने के लिए प्रेरित करती रही हैं। वेदांता-ईएसएल युवा प्रतिभाओं को उत्कृष्टता के अपने संबंधित क्षेत्रों में सीखने, बढ़ने और जीतने के लिए एक जरूरी मंच प्रदान करता है, और झारखंड राज्य का गौरव बढ़ाता है जहां पर तीरंदाजी न केवल एक खेल है बल्कि लोगों की पहचान है।

बीसीकेयू मुगमा शाखा कमेटी का चुनाव संपन्न

आजाद सिपाही संवाददाता

चिरकुंडा। बिहार कोलियरी कामगार यूनियन मुगमा शाखा कमिटी का चुनाव मंगलवार को ऑफिसर्स क्लब में बीसीकेयू के केंद्रीय सचिव सह मुगमा क्षेत्रीय अध्यक्ष अगम राम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का संचालन श्यामापदा गोस्वामी ने किया। वहीं अतिथियों एवं पत्रकारों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित भी किया गया।सम्मेलन के मुख्य अतिथि यूनियन के महामंत्री सह जेबीसीसीआई सदस्य सह पूर्व विधायक अरूप चटर्जी थे। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा की केंद्र सरकार कोलियरियों को निजी मालिकों के हाथों औने पौने दामों में बेच रही है। मुगमा क्षेत्र के गोपिनाथपुर के साथ श्यामपुर ए को महज 28 कड़ोड़ रुपये में 25 साल के लिए लीज में दे दिया गया, जो की हजारों की संपत्ति है। यह सरकारी संपत्ति की खुली लूट है। हमारी यूनियन इसका पुरजोर विरोध करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि मजदूरों की एकता के बल पर ही 19 प्रतिशत(एमजीबी) न्यूनतम गारंटीड लाभ का समझौता कर पाये लेकिन अन्य मुद्दों पर समझौता अभी बाकी है। यूनियन का इतिहास संघर्ष का रहा है तथा आने बाले दिनों में हर चुनौती का सामना करने के लिए भी बीसीकेयू तैयार है। सम्मेलन को हरिप्रसाद पप्पू,कार्तिक दत्ता,बादल चंद्र बाउरी,लालू ओझा,साधन चटर्जी, तारापदो गोप, सुरजीत भादुड़ी,रामजी यादव, अमित मुखजी ,उत्तम कर, हरेराम, विश्वनाथ बाउरी, जयदेव पात्रा, खोखन दास, दिलीप सिंह, आत्मपद मोदी,पापन चटर्जी, विनय सिंह अमरेश चक्रवर्ती व अन्य ने भी संबोधित किया।सम्मेलन के अंत में शाखा कमेटी का चुनाव किया गया। जिसमें अध्यक्ष एसपी गोस्वामी,मनभावती देवी, लोकेश आचार्जी तथा दिलीप कुमार मंडल उपाध्यक्ष, दिपक कुमार सिंह सचिव,सिकंदर यादव एवं मनोज मिश्रा सह सचिव,धर्मेंद्र सिंह संगठन सचिव,वेणुगोपाल, रिंकू राय एवं आनंदी चौहान सह संगठन सचिव,तथा फेलाराम मंडल कोषाध्यक्ष,विजय भारती,आरएन मिश्रा एवं दिलीप कुमार बाउरी सहकोषाध्यक्ष चुने गए।

डीएसपी ने वाहन चोरीकांड का किया खुलासा

गिरफ्तार अभियुक्तों को जेल भेजा

बाघमारा/कतरास (आजाद सिपाही)। सिजुआ स्थित बाघमारा पुलिस अनुमंडल कार्यालय में मंगलवार को अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी निशा मुर्मू ने प्रेस वार्ता कर वाहन चोरी कांड का उद्भेदन करते हुए बताया कि बीते माह 21 दिसंबर को महुदा मोड़ स्थित बंद पड़े ट्रांसपोर्ट धर्मकांटा के सामने से अपराधियों ने चास के भोला कुमार साव के ट्रक को चुरा लिया था। जिसमें लिखित शिकायत पर महुदा थाना कांड 100/2022 धारा 379 भादवी दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया था, अनुसंधान के क्रम में दिनांक 16 जनवरी को इस घटना में चोरी गई ट्रक संख्या जेएच 09 एएफ 0104 सहित घटना में शामिल कुल 8 लोगों में से 7 लोगों की गिरफ्तारी की गई है । घटना में गिरफ्तार किये गये 7 प्राथमिकी अभियुक्तों में समीद खान उर्फ टिंकू खान उर्फ पप्पू, मोहम्मद रियाज खान उर्फ बबलू,दिलीप कुमार चौहान, रामपुकार कुमार, ओंकार राम, मृत्युंजय सिंह उर्फ बब्बू, शैलेंद्र झा उर्फ सलीम शामिल हैं। वरीय पुलिस पदाधिकारी का आदेश अनुसार टीम में शामिल पुलिस पदाधिकारियों एवं आरक्षियों में महुदा थाना प्रभारी गंगासागर ओझा, सअनी चंदन सिंह, थाना में पदस्थापित हवलदार एवं आरक्षी आदि शामिल थे।

दुर्गा सोरेन सेना के अध्यक्ष ने महाप्रबंधक से की वार्ता

कतरासः मजदूर समस्याओं को लेकर दुर्गा सोरेन सेना के युवा केन्द्रीय अध्यक्ष विशाल बाल्मीकि ने मंगलवार को कतरास क्षेत्र के महाप्रबंधक से मिलकर वार्ता किया। इससे पूर्व श्री बाल्मिकी ने महाप्रबंधक को दुर्गा सोरेन सेना कि ओर से गुल्दस्ता एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। श्री बाल्मीकि ने वेस्टमोदीडिह कोलियरी में रह रहे लोगों के बिजली पानी और लाइट कि समस्या से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि वेस्टमोदीडीह वाटर प्लांट से बिना फिल्टर किए पानी कि सप्लाई कॉलोनी में किया जा रहा है। आम जनता बंद बोतल का पानी खरीद कर पानी कि कमी को पूरा कर रहे हैं। कमीयों का क्वाटर रिपेयरिंग के अभाव में जर्जर हो चुका है, कभी कोई बड़ी घटना होने से इंकार नहीं किया जा सकता है। महाप्रबंधक ने सभी मांगों पर सेना के अध्यक्ष को आश्वस्त करते हुए कहा कि समयानुसार सभी समस्या का समाधान कर दिया जाएगा। मौके पर शिवम सिंह, सोनू मुंडा,सागर पासवान, शहनवाज खान,राज कुमार राम आदि उपस्थित थे।

कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद्
झुमरी तिलैया, जिला कोडरमा
Email – jhumritelaiyamunicipalcouncil@gmail.com

ज्ञापांक ..... दिनांक .....

अति-अल्पकालीन बन्दोबस्ती आम सूचना

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 04.02.2023 से 03.02.2024 तक के लिए झुमरी तिलैया नगर परिषद क्षेत्रान्तर्गत निम्नलिखित सैरातों की बन्दोबस्ती हेतु आम डाक की तिथि निम्नवत् निर्धारित की जाती है :–

क्र0	सैरात का नाम	डाक का स्थान	डाक की तिथि एवं समय	सुरक्षित जमा राशि (रू0 में)	सुरक्षित जमानत राशि का 10 प्रतिशत्	आवेदन प्रपत्र का शुल्क (रू0 में)	अभ्युक्ति
1	महाराणा प्रताप चौक के पास श्रम कल्याण केन्द्र के सामने बड़े वाहनों की बन्दोबस्ती	कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद	25.01.2023 को पूर्वाह्न 11:30 बजे से (अपरिहार्य कारणवश स्थगित होने पर अगले कार्य दिवस को पूर्व निर्धारित समय पर)	1094800.00	109480.00	1000.00	–
2	पूर्णिमा टॉकीज/महाराणा प्रताप चौक के समीप ऑटो/ई–रिक्शा स्टैण्ड की बन्दोबस्ती।	कार्यालय, झुमरी तिलैया नगर परिषद	25.01.2023 को अपराह्न 12:30 बजे से (अपरिहार्य कारणवश स्थगित होने पर अगले कार्य दिवस को पूर्व निर्धारित समय पर)	927670.00	92767.00	1000.00	–

निविदा की शर्त विभागीय वेबसाईट www.udhd.jharkhand.gov.in एवं कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखी जा सकती है।

आवेदन प्रपत्र अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय से दिनांक– 24.01.2023 तक (अपराह्न 12:15 बजे तक) कार्यालय अवधि में निर्धारित आवेदन प्रपत्र शुल्क जमा कर प्राप्त किया जा सकता है। आवेदन प्रपत्र (सुरक्षित जमानत राशि का डिमांड ड्राफ्ट/बैंकर्स चेक, जो कार्यपालक पदाधिकारी झुमरी तिलैया नगर परिषद के नाम से देय होगा, के साथ) भरकर एक बंद लिफाफे में दिनांक 24.01.2023 अपराह्न 5:00 बजे तक कार्यालय अवधि में जमा किया जायेगा। तय समयावधि के उपरांत समर्पित किये जा रहे आवेदन पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। बिना कारण बताये डाक को स्थगित/रद्द करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी को सुरक्षित रहेगा।

ह0/–
प्रशासक
झुमरी तिलैया नगर परिषद

PR 287680 Urban Development(22-23)#D

कार्यालय, प्राचार्या, इंदिरा गाँधी बालिका विद्यालय,हजारीबाग

अति अल्पकालीन पुर्ननिविदा आमंत्रण सूचना संख्या 03/2023

इंदिरा गाँधी बालिका विद्यालय, हजारीबाग में **जनवरी 2023** से निम्नलिखित सामग्रियों की आपूर्ति हेतु मुहरबन्द निविदा प्राचार्या इंदिरा गाँधी बालिका विद्यालय, हजारीबाग के पदनाम से आमंत्रित की जाती है। ये निविदा दिनांक **24.01.2023 को 01.00** बजे अपराहन् तक प्राप्त की जायेंगी तथा प्राप्त निविदा दिनांक **24.01.2023** को **03.00** बजे अपराहन में उपस्थित निविदादाता या उनके अधिकृत प्रतिनिधि के समक्ष खोली जायेगी। निविदा में सभी सामग्रियों का दर विद्यालय प्रागंण तक परिवहन व्यय सहित होगा। क्रय की जाने वाली सामानों की कोटि निम्नांकित है :–

क्रम सं0	सामग्रियों का नाम	सत्र
1	खाद्यान्न सामग्री	जनवरी 2023 से दिसम्बर 2023 तक के लिए
2	पावरोटी	जनवरी 2023 से दिसम्बर 2023 तक के लिए
3	सब्जी एवं फल	जनवरी 2023 से जुलाई 2023 तक के लिए
4	चिकेन एवं अण्डा	जनवरी 2023 से दिसम्बर 2023 तक के लिए
5	लेखन, विद्युत, सफाई एवं जल– कल व्यवस्था संबंधी सामग्री	जनवरी 2023 से दिसम्बर 2023 तक के लिए
6	जलावन कोयला	जनवरी 2023 से दिसम्बर 2023 तक के लिए
7	पोषाक धुलाई	जनवरी 2023 से दिसम्बर 2023 तक के लिए
8	विद्यालय पाकशाला में लगाए गए गैस चुल्हा, गैस पाईप लाईन इत्यादि का मरम्मत एवं वार्षिक रख–रखाव।	जनवरी 2023 से दिसम्बर 2023 तक के लिए

क्रय की जाने वाली सामग्रियों की सूची, ठेके की शर्त, अग्रधन राशि इत्यादि से संबंधित पूर्ण विवरण बिल ऑफ क्वांटिटी में अंकित रहेगी। बिल ऑफ क्वांटिटी दिनांक 17.01.2023 **से 23.01.2023** तक कार्यालय खुला रहने के दिन ई–चालान के माध्यम से 50/–रू0 प्रत्येक सामग्री के लिए जमा कर चालान की प्रति कार्यालय में जमा करते हुए हाथों–हाथ प्राप्त किया जा सकता है।

राशि **E-GRAS** में जाकर निम्न हेड में जमा करना है –

1- 58-SCHOOL EDUCATION AND LITERACY DEPARTMENT(SECONDARY EDUCATION DIVISION)
2- MAJOR CODE-0202 शिक्षा, खेलकूद, कला तथा संस्कृति
3. सामान्य– **020201600010101**
4- Office Name- HZBEDN137 PRINCIPAL IGBV HZB
5- RECEIPTS TYPE:- 0101-RECEIPT

निविदा की शर्ते कार्यालय के सूचनापट्ट पर देखी जा सकती है।

ह0/–
प्रभारी प्राचार्य,
इंदिरा गाँधी बालिका विद्यालय, हजारीबाग

PR 287639 School Education and Literacy(22-23)#D

भूमिहार समाज ने उपायुक्त कार्यालय पहुंचकर जताया विरोध

बोकारो: चास चंदनकियारी भूमिहार समाज ने उमेश चंद्र शर्मा की अध्यक्षता में उपायुक्त कार्यालय पहुंचकर के खेदाडीह के पास फोरलेन जमीन पर असामाजिक तत्वों द्वारा कब्जा किए जाने को लेकर विरोध जताया। इसके बाद मृत्युंजय शर्मा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने अपर समाहर्ता सदात अनवर से मिलकर उपायुक्त के नाम ज्ञापन सौंपा। मृत्युंजय शर्मा ने कहा कि कुछ असामाजिक तत्वों के भूमाफिया चास खेदाडीह फोरलेन के पास फर्जी

दस्तावेज के आधार पर जमीन पर कब्जा जमाना चाहते हैं। जिसे किसी भी हाल में साकार नहीं होने दिया जाएगा। स्थानीय रैयतों द्वारा विरोध करने पर फर्जी मुकदमा कराकर डराया धमकाया जा रहा है। फर्जी कागजात का उच्च स्तरीय जांच कराई जाए। पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष मिहिर कुमार सिंह ने कहा कि भू माफियाओं के मंसूबे को साकार नहीं होने दिया जाएगा। एक षड्यंत्र के तहत जमीन को हड़पने का साजिश किया जा रहा है। हर्ष लाल माहथा ने कहा कि रोशन जमील अंसारी भूमाफिया एवं असामाजिक तत्वों के साथ मिलकर जाली दस्तावेज तैयार कर कृषि योग्य भूमि को हड़पने के लिए धमकाया जा रहा है। पंजी दो में फर्जी दस्तावेज के आधार पर दस खाता को ऑनलाइन कर दिया गया। इसका विरोध करने पर तुरंत हटा भी दिया गया। अपर समाहर्ता ने समाज की समस्याओं को सुनकर संबंधित राजस्व कर्मचारी पर कार्रवाई करने का भरोसा दिया। साथ ही एसडीओ को जमीन से 144 हटाने को कहा। इस मौके पर राजदेव माहथा, भूतनाथ माहथा, संतोष कुमार सिंह, डीएस राय,गयाराम सिंह चौधरी, राजाराम शर्मा, चंदन भूमिहार, विनय चौधरी, राकेश मधु, संजीव सिंह आदि उपस्थित थे।

e-Procurement Cell
Office of the Superintending Engineer,
Building Construction Department, Chotanagpur Circle,Line Tank Road, Ranchi

e-Procurement Notice (Very Urgent)

Tender Reference No.-BCD/SECNC/27/BCD, Building Div. No.-1, Ranchi/2022-23 Date:-17-01-2023

क्र०	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रू०)	कार्य पूर्ण करने की अवधि	वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि	वेबसाईट में निविदा डालने की अंतिम तिथि एवं समय	वेबसाईट में अपलोड किये गये दस्तावेज की हार्ड कॉपी जमा करने की तिथि एवं समय	निविदा खोलने की तिथि एवं समय	निविदा प्रकाशित करने वाले कार्यालय का नाम एवं पता	प्रोक्योरमेंट पदाधिकारी का सम्पर्क संख्या	ई–प्रोक्योरमेंट सेल का हेल्पलाईन संख्या।
1.	Renovation of Administrative Building (Birsa Bhawan) in the Ranchi University Campus at Sahid Chowk, Ranchi for the Year 2022-23	Rs.97,91,500 .00	4 (Four) Months	27.01-2023	02.02.2023 11:00 AM	02.02.2023 11:30 AM	03.02.2023 11:30 AM	Office of the Superintending Engineer, Building Construction Department, Chotanagpur Circle, Line Tank Road, Ranchi	0651-2200049	0651-2200049

o इस निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार की सूचना/बदलाव/संशोधन का अवलोकन http://jharkhandtenders.gov.in पर किया जा सकता है।

Note : New Updated UCAN Registration is mandatory for the Bidders.

नोडल पदाधिकारी
भवन निर्माण विभाग, छोटानागपुर अँचल, राँची

PR287696 (Building Construction Dept Chotanagpur Circle)22-23*D

आजाद सिपाही
रांची, बुधवार, 18 जनवरी, 2023
www.azadsipahi.in
12

कर्नाटक में गुजरात फॉर्मूला लागू करेगी बीजेपी

सीएम बोम्मई की विदाई हो सकती है

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। दिल्ली में चल रही बीजेपी की कार्यकारिणी बैठक का आज दूसरा दिन है। पहले दिन, यानी सोमवार को सबसे ज्यादा चर्चा गुजरात में पार्टी की जीत के फॉर्मूले की रही। इसी मॉडल को कर्नाटक में आगे बढ़ाया जायेगा। कर्नाटक में मई तक चुनाव होना है। यहां पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा की वापसी के आसार बन रहे हैं। पीएम मोदी ने सोमवार को कार्यकारिणी बैठक से अलग येदियुरप्पा से 15 मिनट मुलाकात की थी। जैसे-जैसे चुनाव करीब आ रहे हैं, पार्टी में येदियुरप्पा की अहमियत बढ़ रही है। वे पार्टी के संसदीय बोर्ड में भी हैं। लिंगायत समुदाय का सपोर्ट उनके साथ है। कर्नाटक में पार्टी फिर येदियुरप्पा को चेहरा बना सकती है। दूसरी ओर कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मइ महाराष्ट्र के साथ सीमा विवाद से उलझ गए हैं। सूत्र बता रहे हैं कि उनकी विदाई हो सकती है।

राज्यों की लीडरशिप को सलाह- विपक्ष के आरोपों में घिरे नहीं, घेरें

बैठक में मौजूद हमारे सोर्स ने बताया- विपक्ष के हमलावर रवैये से निपटने की प्रक्रिया पर बात करने के लिए काफी समय इसलिए दिया गया ताकि चुनावी राज्यों के मुखिया अपना मनोबल ऊंचा रखें। वे विपक्ष के किसी आरोप पर घिरे नहीं बल्कि घेरें। हाइकमान ने चुनावी राज्यों की लीडरशिप से जीत की रणनीति के ड्राफ्ट मंगाये थे। छत्तीसगढ़ और कर्नाटक की लीडरशिप ने अपने ड्राफ्ट पर चर्चा शुरू की, लेकिन उन्हें बीच में रोककर इसे और पुख्ता करने की सलाह दी गई। इसके बाद इसे 17 जनवरी को चर्चा के लिए रख लिया गया।

चुनावी राज्यों की लीडरशिप को बताना होगा- चुनाव कैसे जीतेंगे

आज की बैठक में चुनावी राज्यों की लीडरशिप का भी टेस्ट होगा। उन्हें अपनी जीत का रोडमैप और इसके लिए क्या तैयारी की है, ये बताना है। पहले दिन का दूसरा अहम मुद्दा विपक्ष के बीजेपी और पीएम मोदी के खिलाफ निगेटिव कैंपेन चलाने और अभद्र भाषा के इस्तेमाल का रहा। पेगासस, नोटबंदी, इडी, मनी लांड्रिंग, राफेल और सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट जैसे मुद्दों पर विपक्ष के हमलावर रवैये से कानूनी तरीके से निपटने की तारीफ भी हुई। इससे सबक निकला कि विपक्ष के दबाव में न आकर पूरी ताकत से निपटना है। मीटिंग वाली जगह पर वंदे भारत ट्रेन, राफेल फाइटर जेट, ड्रोन और रॉकेट के पोस्टर लगे हैं। मतलब साफ है आने वाले चुनावों में बीजेपी मोदी सरकार की इन उपलब्धियों को भी भुनायेगी। मीटिंग वाली जगह पर वंदे भारत ट्रेन, राफेल फाइटर जेट, ड्रोन और रॉकेट के पोस्टर लगे हैं। मतलब साफ है आने वाले चुनावों में बीजेपी मोदी सरकार की इन उपलब्धियों को भी भुनायेगी।

पूर्व तट रेलवे महाप्रबंधक ने किया नुआगांव और दसपल्ला के बीच चल रहे कार्यों का निरीक्षण

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक रूप नारायण सुनकर ने हाल ही में खोरधा रोड-नुआगांव रेलवे सेक्शन का निरीक्षण किया और नुआगांव और दसपल्ला के बीच चल रहे निर्माण कार्यों के साथ-साथ अन्य गतिविधियों की जानकारी ली। श्री सुनकर ने खोरधा रोड में रोड ओवर ब्रिज (आरओबी) के काम का भी मुआयना किया और विंडो ट्रेलिंग के माध्यम से खोरधा रोड-नुआगांव रेलवे सेक्शन का निरीक्षण किया तथा संरक्षा संबंधी एवं यातायात सुविधा कार्यों की समीक्षा की। महाप्रबंधक सुनकर ने निर्माण कार्य का जायजा लेते हुए निमार्णाधीन पुलों एवं अन्य निर्माण कार्यों की समीक्षा की तथा लक्षित कार्यों को शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने अधिकारियों को परियोजना को तेजी से पूरा करने, विशेष रूप से यात्री केंद्रित सुविधाओं पर ध्यान देने की भी सलाह दी। नुआगांव और दसपल्ला के बीच 15.5 किलोमीटर के रेलवे खंड को मार्च 2023 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें 15 रोड अंडर ब्रिज (आरयूबी) और 04 रोड ओवर ब्रिज (आरओबी) के साथ 57 छोटे और 3 बड़े पुल हैं। इस सेक्शन की अनुमानित लागत190 करोड़ रुपये हैं। खोरधा रोड-बलांगीर रेल लाइन परियोजना के कुल 301 किलोमीटर के हिस्से में से 115.36 किलोमीटर(खोरधा रोड से नुआगांव- 90.43 किमी और बलांगीर से झरतरभा-24.93 किमी) की परियोजना चालू हो गई है। नुआगांव-दसपल्ला (15.445 किलोमीटर) और झरतरभा-खंबेश्वरपल्ली- सोनपुर (11.40+10.30=21.70 किलोमीटर) को मार्च 2023 तक पूरा करने का लक्ष्य है। ज्ञात हो कि रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ओड़िशा में चल रहे विभिन्न परियोजना कार्यों के साथ-साथ क्षेत्र के रेलवे बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दे रहे हैं और विकास कार्यों की नियमित निगरानी भी कर रहे हैं। खोरधा रोड-बलांगीर रेल लाइन परियोजना वैष्णव की प्राथमिकता वाली परियोजनाओं में से एक है, क्योंकि यह परियोजना माननीय प्रधान मंत्री की भी प्राथमिकता में शामिल है। रेल मंत्री वैष्णव ने पूर्व तट रेलवे अधिकारियों को भूमि अधिग्रहण सहित बहुप्रतीक्षित लोक केंद्रित परियोजना निर्माण के दौरान उठाये गए अन्य मुद्दों पर सभी एजेंसियों के साथ उचित समंवय के साथ काम करने की सलाह दी। उन्होंने रेलवे अधिकारियों को सलाह दी है कि खोरधा रोड-बलांगीर रेल लाइन को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए जमीनी स्तर पर समंवय करें।

भुवनेश्वर में रेलवे के रिटायर्ड अधिकारी के ठिकानों पर सीबीआइ की छापेमारी

डेढ़ करोड़ नगद और 17 किलो सोना बरामद

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) ने भुवनेश्वर में रेलवे के एक सेवानिवृत्त प्रधान मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक के परिसर में छापेमारी के दौरान 17 किलोग्राम सोना और 1.57 करोड़ रुपये नकदी जब्त की। मंगलवार को सीबीआइ के अधिकारियों ने बताया कि सीबीआइ ने भुवनेश्वर में प्रमोद कुमार जेना के परिसरों की तलाशी ली। सीबीआइ ने प्रमोद कुमार जेना के ठिकानों से 1.57 करोड़ रुपये से अधिक की नकदी, 17 किलोग्राम सोना और आभूषण बरामद किया है, जिसकी कीमत 8 करोड़ रुपये से 10 करोड़ रुपये के बीच बतायी जा रही है। इसके अलावा बैंक और डाक जमा रसीदों के साथ ही 2.5 करोड़ रुपये और बड़ी संख्या में संपत्ति के दस्तावेज जब्त किये हैं। सीबीआइ ने ने 1989 बैच के भारतीय रेलवे यातायात सेवा के अधिकारी प्रमोद कुमार जेना के खिलाफ आय के ज्ञात स्रोत से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप में तीन जनवरी को मामला दर्ज किया था।

बता दें कि प्रमोद कुमार जेना पिछले साल नवंबर में सेवानिवृत्त हुए थे। सेवानिवृत्त अधिकारी पर कथित तौर पर आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति अर्जित करने का आरोप है।

भुवनेश्वर स्टेशन के आरपीएफ कांस्टेबल को रेल मंत्री का जीवन रक्षक पदक

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन के आरपीएफ कांस्टेबल सुब्रत कुमार महारणा को वर्ष 2020 के लिए रेल मंत्री जीवन रक्षक पदक प्राप्त करने के लिए चुना गया है। श्री महारणा ने 15 फरवरी 2020 को पुरी-संबलपुर इंटर सिटी एक्सप्रेस में सवार होने की कोशिश कर रही एक महिला यात्री को बचाया जो चलती ट्रेन से गिर रही थी और उसका शरीर प्लेटफॉर्म और ट्रेन के अंतर के बीच रेलवे ट्रैक पर गिरने वाला था। श्री महारणा की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई की बदौलत

महिला यात्री को रेल की पटरियों पर गिरने से पहले ही उठा लिया गया। घटना 15 फरवरी 2020 को भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-01 पर हुई थी। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना महाराणा द्वारा सूझबूझ से किए गये निरीक्षण और त्वरित कार्रवाई से महिला यात्री की जान बच गई, जिसकी मीडिया सहित कई क्षेत्रों में काफी सराहना हुई। पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक रूप नारायण सुनकर ने महारणा को सम्मान जनक पुरस्कार के लिए बधाई दी और उनकी सतर्कता और त्वरित कार्य के लिए उनकी प्रशंसा की। इस पदक के लिए महाराणा को एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा।

मेलोरा ने मेंस फैशन की दुनिया में रखा कदम

मेंस ज्वेलरी कलेक्शन लांच किया

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। भारत के सबसे तेजी से बढ़ रहे डीसी ब्रांड्स में से एक, मेलोरा खासकर आधुनिक और स्टाइलिश पुरूषों के लिये डिजाइन किये गये अपने नये कलेक्शन के साथ मेन्स ज्वैलरी कैटेगरी में प्रवेश कर अपने पोर्टफोलियो का विस्तार करने के लिये तैयार है। इस कलेक्शन में चेन, ब्रेसलेट, ईयरिंग, पेंडेंट और रिंग शामिल हैं और यह 14 कैरेट, 18 कैरेट और 22 कैरेट हीरे और सोने की रेंज में आयेगा। इसके दाम 6000 रुपये से शुरू होते हैं और इसमें टेक्सचर्स, ज्यॉमेट्रिक कटाव, मिनिमल पैर्टस, मल्टी-टोंड (येलो और व्हाइट गोल्ड का मिक्स) और क्लासिक स्टाइल्स का मिश्रण होगा। मेलोरा का नया कलेक्शन मॉडर्न, बोल्ड और वसेटाइल है और पुरूषों को किफायती, अनूठे और रोजाना पहनने योग्य आधुनिक डिजाइनों से सजाने के लिये है। ज्वैलरी को पुरूषों के कपड़ों के सादे स्टाइल का टच देने के लिये डिजाइन किया गया है, ताकि वे ट्रेंडी और फैशनेबल लगें। नया कलेक्शन मेलोरा के 23 एक्सपीरियेंस सेंटर्स पर उपलब्ध है

और 26000 से ज्यादा पिन कोड्स पर डिलीवर किया जा सकता है। इस लांच के बारे में मेलोरा की फाउंडर और सीइओ सरोजा येरामिल्ली ने कहा, यह नया कलेक्शन मेंस ज्वैलरी सेगमेंट में हमारा विस्तार दिखाता है और उन कई उपलब्धियों में से एक है, जो हमने अपनी शुरूआत से अब तक प्राप्त की हैं। ज्वैलरी को आधुनिक वार्डरोब को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है और रोजाना पहनने के लिये बिल्कुल आदर्श है। हम अपने पुरूष ग्राहकों को सही ज्वैलरी खोजने में मदद करना चाहते हैं, जोकि उनके स्टाइल, शख्सियत और पसंद के मुताबिक सबसे बढ़िया हो। यह ब्रांड अपने अभिनव दृष्टिकोण और आधुनिक डिजाइनों के लिये जाना जाता है और हर अवसर पर छा जाने के लिये ज्वैलरी चाहने वालों का बिलकुल सही विकल्प है। हर हफ्ते 75 डिजाइनें लांच हो रही हैं, जिनके साथ मेलोरा हर भारतीय को अपने डिजाइनों की बड़ी रेंज तक आसानी से पहुंच दे रहा है और सुदूरतम बाजारों में भी पहुंच देने के अपने महत्वपूर्ण लक्ष्य पर काम कर रहा है। इस प्रकार सुनिश्चित होता है कि सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी ट्रेंडी बन सकें और किफायती ज्वैलरी को उनके दरवाजे पर डिलीवर किया जाता है। मेलोरा ने 2016 में अपना परिचालन शुरू किया था और तब से ही फाइन, ट्रेंडी और लाइटवेट गोल्ड ज्वैलरी के सेगमेंट में धूम मचा रखी है। कंपनी ने पिछले साल तेजी से तरक्की की थी और इसे त्यौहार के सीजन में भी यह वृद्धि जारी रहने की उम्मीद है। कोविड-19 महामारी के बाद से लोग हल्की-फुल्की और किफायती फाइन ज्वैलरी खरीदना पसंद करते हैं और डिजाइन पर ध्यान देते हैं। मेलोरा यह सब और इससे भी ज्यादा देती है। कंपनी ने 10000 से कम आबादी वाले गांवों से लेकर 1 मिलियन से ज्यादा आबादी वाले शहरों तक अपनी छाप छोड़ी है। अभी मेलोरा का राजस्व 350 करोड़ रुपये है और इसका मकसद अगले 5 साल में 1 बिलियन डॉलर की कंपनी बनना है।

'आप' की मान्यता रद्द करने की अर्जी

दिल्ली हाइकोर्ट ने केंद्र और दिल्ली सरकार को जवाब के लिए दिया समय

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने मंगलवार को केंद्र सरकार और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार को उस अर्जी पर जवाब दाखिल करने के लिए और समय दे दिया जिसमें आप की मान्यता को रद्द करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि पार्टी ने धर्मनिरपेक्ष देश के संविधान की कथित अवहेलना कर, गणेश चतुर्थी को बढ़ावा देने के लिए सरकारी धन का इस्तेमाल किया है। मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने केंद्र और दिल्ली सरकार को जवाबी हलफनामे दाखिल करने के लिए छह और हफ्तों का समय दिया। उच्च न्यायालय को सूचित किया गया कि निर्वाचन आयोग ने याचिका पर अपना जवाब दाखिल कर दिया है।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, लालगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार, ***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**